संदर्भ · अध्ययन · अभ्यास

सम्पूर्ण हिंदी व्याकरण

Complete Hindi Vyakaran

परिभाषा, भेद, उदाहरण और अभ्यास — सब कुछ सरल हिंदी में। सात खंड, 45 विषय, पढ़ने और अभ्यास करने के क्रम में।

संस्करण 17 सितंबर 2026

hindivyakaran.net

विषय-सूची

I भाषा और व्याकरण (Language & Grammar)

- भाषा (Language)
- व्याकरण (Grammar)
- हिंदी भाषा का विकास (Development of Hindi)
- लिपि और देवनागरी (Script & Devanagari)

II वर्ण विचार (Phonology)

- वर्णमाला (Alphabet)
- संधि (Sandhi)
- उच्चारण और वर्तनी (Pronunciation & Spelling)
- विराम चिह्न (Punctuation Marks)

III शब्द विचार (Morphology)

- संज्ञा (Noun)
- सर्वनाम (Pronoun)
- विशेषण (Adjective)
- क्रिया (Verb)
- काल (Tense)
- कारक (Case)
- समास (Compound)
- लिंग (Gender)
- वचन (Number)
- क्रिया विशेषण (Adverb)
- अव्यय (Indeclinable)
- वाच्य (Voice)
- उपसर्ग (Prefix)

- प्रत्यय (Suffix)
- तत्सम और तद्भव (Tatsam & Tadbhav)
- पद परिचय (Parsing)

IV वाक्य विचार (Syntax)

- वाक्य के भेद (Types of Sentences)
- पदबंध (Phrase)
- उपवाक्य (Clause)
- वाक्य परिवर्तन (Sentence Transformation)
- वाक्य शुद्धि (Sentence Correction)

V शब्द भंडार (Vocabulary)

- पर्यायवाची शब्द (Synonyms)
- विलोम शब्द (Antonyms)
- अनेकार्थी शब्द (Polysemous Words)
- श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द (Homophones)
- वाक्यांश के लिए एक शब्द (One Word Substitution)
- मुहावरे (Idioms)
- लोकोक्तियाँ (Proverbs)

VI काव्य और अलंकार (Poetics)

- रस (Aesthetic Sentiment)
- छंद (Metre)
- अलंकार (Figure of Speech)
- शब्द शक्ति (Word Power)

VII रचना (Composition)

- निबंध लेखन (Essay Writing)

- पत्र लेखन (Letter Writing)
- संवाद लेखन (Dialogue Writing)
- अनुच्छेद लेखन (Paragraph Writing)
- संक्षेपण (Precis Writing)

I **भाषा और व्याकरण** (Language & Grammar) 4 विषय

भाषा क्या है, व्याकरण क्यों आवश्यक है, और हिंदी भाषा का स्वरूप।

भाषा *(Language)*

विचारों के आदान-प्रदान का साधन भाषा है। इसके तीन रूप हैं — मौखिक, लिखित और सांकेतिक।

आधार आरंभिक अवधारणा · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

जिन ध्वनि-संकेतों के द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों तक पहुँचाता है और दूसरों के विचार समझता है, उसे भाषा कहते हैं।

मनुष्य अकेला नहीं रहता। वह जो सोचता है, अनुभव करता है और चाहता है — वह सब दूसरों तक पहुँचाना चाहता है। इसी आवश्यकता से **भाषा** जन्मी।

भाषा कोई वस्तु नहीं, एक **व्यवस्था** है — ध्वनियों की ऐसी व्यवस्था जिस पर एक समाज सहमत हो चुका है। *पानी* शब्द में ऐसा कुछ नहीं जो स्वयं तरल हो; वह अर्थ हमने उसे दिया है। यही कारण है कि वही वस्तु अंग्रेज़ी में *water* और बांग्ला में *जल* कहलाती है।

ध्यान दें

भाषा का आधार **ध्वनि** है, लिपि नहीं। जिन भाषाओं की कोई लिपि नहीं होती, वे भी पूरी भाषाएँ होती हैं। लिखना भाषा को सुरक्षित रखने का साधन है, भाषा होने की शर्त नहीं।

भाषा के रूप

भाषा किस माध्यम से प्रकट हो रही है — इस आधार पर उसके तीन रूप माने जाते हैं।

1. मौखिक भाषा

बोलकर प्रकट की जाने वाली भाषा। यह भाषा का **मूल और सबसे पुराना** रूप है। बालक पहले बोलना सीखता है, लिखना बाद में।

उदाहरण

बातचीत | भाषण | वार्तालाप | दूरभाष पर बात | कहानी सुनाना

2. लिखित भाषा

लिपि-चिह्नों के द्वारा लिखकर प्रकट की जाने वाली भाषा। यह मौखिक भाषा की तुलना में बाद में विकसित हुई, पर इसी ने भाषा को **स्थायित्व** दिया।

उदाहरण

पत्र | पुस्तक | समाचार-पत्र | निबंध | संदेश

3. सांकेतिक भाषा

संकेतों, चिह्नों और मुद्राओं के द्वारा भाव प्रकट करना।

उदाहरण

यातायात के चिह्न | सिर हिलाना | मूक-बधिर संकेत | घंटी | ध्वज

ध्यान दें

मौखिक और लिखित रूप में अंतर केवल माध्यम का नहीं है। मौखिक भाषा में **स्वर का उतार-चढ़ाव, बल और मुख-मुद्रा** भी अर्थ देते हैं — "अच्छा!" कहने के ढंग से प्रशंसा, आश्चर्य या व्यंग्य तीनों निकल सकते हैं। लिखित भाषा में वही काम विराम चिह्नों और शब्द-चयन से लेना पड़ता है।

भाषा और बोली

एक ही भाषा हर क्षेत्र में एक-सी नहीं बोली जाती। किसी सीमित क्षेत्र में बोले जाने वाले भाषा-रूप को **बोली** कहते हैं।

आधार	बोली	भाषा
क्षेत्र	सीमित, छोटा	विस्तृत
प्रयोग	दैनिक बोलचाल	शासन, शिक्षा, साहित्य
लिपि	प्रायः अपनी लिपि नहीं	अपनी लिपि और वर्तनी
साहित्य	सीमित, प्रायः मौखिक	विपुल लिखित साहित्य
मानक रूप	निश्चित नहीं	व्याकरण से निश्चित

जब कोई बोली विस्तार पाकर साहित्य और शिक्षा में प्रयुक्त होने लगती है, तो वह **विभाषा** और आगे चलकर **भाषा** बन जाती है। खड़ी बोली का भाषा बन जाना इसी क्रम का उदाहरण है।

हिंदी की प्रमुख बोलियाँ

ब्रज, अवधी, भोजपुरी, बुंदेली, मैथिली, मगही, हरियाणवी, राजस्थानी, कुमाऊँनी

ध्यान दें

बोली को "बिगड़ी हुई भाषा" समझना भूल है। सूरदास ने ब्रज में और तुलसीदास ने अवधी में लिखा — ये बोलियाँ हिंदी साहित्य की सबसे समृद्ध धाराएँ हैं। बोली और भाषा का भेद **प्रयोग-क्षेत्र** का है, श्रेष्ठता का नहीं।

भाषा के व्यावहारिक रूप

एक ही भाषा अलग-अलग भूमिकाओं में अलग नामों से पुकारी जाती है।

नाम	अर्थ
मातृभाषा	जो भाषा बालक अपने परिवार से सहज रूप में सीखता है
राजभाषा	जिस भाषा में शासन का कामकाज चलता है
राष्ट्रभाषा	जो भाषा पूरे राष्ट्र में संपर्क और पहचान का माध्यम हो
संपर्क भाषा	भिन्न भाषा बोलने वालों के बीच बातचीत की साझी भाषा
मानक भाषा	शिक्षा, समाचार और साहित्य में प्रयुक्त निश्चित, नियमबद्ध रूप

ध्यान दें

संविधान के अनुच्छेद 343 में हिंदी को **राजभाषा** कहा गया है। संविधान किसी भाषा को “राष्ट्रभाषा” घोषित नहीं करता — यह अंतर परीक्षा में बार-बार पूछा जाता है।

भाषा की विशेषताएँ

- भाषा **अर्जित** होती है — समाज से सीखी जाती है, जन्म से नहीं मिलती।
- भाषा **परिवर्तनशील** है — समय के साथ उसके शब्द और रूप बदलते रहते हैं।
- भाषा **सामाजिक** है — वह समाज की सहमति से चलती है, किसी व्यक्ति की इच्छा से नहीं।
- भाषा के संकेत **यादृच्छिक** हैं — शब्द और अर्थ का संबंध स्वाभाविक नहीं, रूढ़ है।

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

भाषा की परिभाषा दीजिए।

उत्तर जिन ध्वनि-संकेतों के द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों तक पहुँचाता है और दूसरों के विचार समझता है, उसे भाषा कहते हैं।

भाषा के कितने रूप हैं? प्रत्येक का एक उदाहरण दीजिए।

उत्तर तीन — मौखिक (बातचीत, भाषण), लिखित (पत्र, पुस्तक) और सांकेतिक (यातायात के चिह्न, सिर हिलाना)।

भाषा और बोली में तीन अंतर बताइए।

उत्तर बोली का क्षेत्र सीमित होता है, भाषा का विस्तृत। बोली प्रायः दैनिक बोलचाल तक सीमित रहती है, भाषा शासन, शिक्षा और साहित्य में प्रयुक्त होती है। बोली की प्रायः अपनी लिपि और व्याकरण से निश्चित मानक रूप नहीं होता, भाषा का होता है।

राजभाषा और राष्ट्रभाषा में क्या अंतर है?

उत्तर राजभाषा वह है जिसमें शासन का कामकाज चलता है; राष्ट्रभाषा वह जो पूरे राष्ट्र में संपर्क और पहचान का माध्यम हो। संविधान के अनुच्छेद 343 में हिंदी को राजभाषा कहा गया है, राष्ट्रभाषा घोषित नहीं किया गया।

"भाषा के संकेत यादृच्छिक होते हैं" — इस कथन को उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तर शब्द और उसके अर्थ का संबंध स्वाभाविक नहीं, समाज की रूढ़ि से बना है। "पानी" शब्द में ऐसा कुछ नहीं जो स्वयं तरल हो — इसीलिए वही वस्तु अंग्रेज़ी में water और बांग्ला में जल कहलाती है।

व्याकरण *(Grammar)*

भाषा को शुद्ध रूप में बोलने और लिखने के नियमों का शास्त्र व्याकरण है। इसके तीन अंग हैं — वर्ण, शब्द और वाक्य विचार।

आधार   आरंभिक अवधारणा · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

वह शास्त्र जिसके द्वारा किसी भाषा को शुद्ध बोलना, शुद्ध पढ़ना और शुद्ध लिखना आता है, उसे व्याकरण कहते हैं।

भाषा व्याकरण से पहले आती है। लोग बोलते रहे, और उस बोलने में जो नियम स्वयं बन गए, उन्हें बाद में किसी ने देखकर लिख लिया — वही **व्याकरण** है।

इसलिए व्याकरण भाषा पर नियम **थोपता** नहीं, भाषा में पहले से चल रहे नियमों को **खोजकर व्यवस्थित** करता है। *लड़का जाता है* और *लड़की जाती है* — यह भेद व्याकरण के कारण नहीं है; व्याकरण केवल बताता है कि यह भेद लिंग के कारण होता है।

ध्यान दें

व्याकरण शब्द बना है **वि + आ + करण** से, जिसका अर्थ है "भली-भाँति समझाना" या "विश्लेषण करना"। नाम ही उसका काम बता देता है — भाषा को तोड़कर दिखाना कि वह किस तरह काम करती है।

व्याकरण की आवश्यकता क्यों

बिना व्याकरण जाने भी लोग भाषा बोल लेते हैं। फिर उसे पढ़ने की आवश्यकता क्या है?

- भाषा का **शुद्ध और मानक रूप** निश्चित होता है, जिससे लिखित भाषा हर क्षेत्र में एक-सी रहे।
- अर्थ का **भ्रम दूर** होता है — *रोको, मत जाने दो* और *रोको मत, जाने दो* का अंतर व्याकरण ही सँभालता है।

- भाषा के नियम जान लेने पर **नए शब्द और वाक्य स्वयं बनाए** जा सकते हैं, रटने की आवश्यकता नहीं रहती।
- अनुवाद, संपादन और साहित्य के अध्ययन का कोई आधार ही व्याकरण के बिना नहीं बनता।

> **एक ही वाक्य, दो अर्थ**
>
> *रोको, मत जाने दो।* — जाने से रोक दो।
>
> *रोको मत, जाने दो।* — जाने दो, रोको नहीं।
>
> अंतर केवल अल्पविराम के स्थान का है, पर अर्थ उलट गया।

व्याकरण के अंग

हिंदी व्याकरण को परंपरा से तीन भागों में बाँटा जाता है। यह विभाजन आकस्मिक नहीं — यह भाषा की **अपनी संरचना** का क्रम है: ध्वनि से शब्द बनता है, शब्द से वाक्य।

अंग	अध्ययन का विषय	प्रमुख प्रकरण
वर्ण विचार	भाषा की सबसे छोटी इकाई — ध्वनि और वर्ण	वर्णमाला, स्वर, व्यंजन, संधि, उच्चारण, विराम चिह्न
शब्द विचार	शब्दों के भेद, रूप और रचना	संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, कारक, काल, समास, उपसर्ग, प्रत्यय
वाक्य विचार	शब्दों से वाक्य बनने की व्यवस्था	वाक्य के भेद, पदबंध, उपवाक्य, वाक्य परिवर्तन, वाक्य शुद्धि

> **ध्यान दें**
>
> कुछ पुस्तकों में चौथा अंग **पद विचार** भी गिनाया जाता है और कहीं शब्द भंडार को अलग अंग माना जाता है। मूल तीन विभाजन — वर्ण, शब्द, वाक्य — सर्वमान्य है; शेष उसी के उपविभाग हैं।

शब्द और पद

व्याकरण में यह भेद बहुत काम आता है, और आरंभ में ही स्पष्ट कर लेना चाहिए।

जब कोई शब्द अकेला, शब्दकोश में पड़ा हो, तब वह केवल **शब्द** है। जब वही शब्द किसी वाक्य में आकर व्याकरणिक भूमिका निभाने लगे, तब वह **पद** कहलाता है।

> **तुलना कीजिए**
>
> **लड़का** — यह अभी शब्द है।
>
> *लड़का पुस्तक पढ़ता है।* — यहाँ **लड़का** पद है, क्योंकि अब वह कर्ता की भूमिका में है, पुल्लिंग है, एकवचन है।

भाषा बदलती है, व्याकरण भी

व्याकरण कोई जड़ नियम-संग्रह नहीं है। भाषा में जो प्रयोग लंबे समय तक चलते हैं, वे अंततः शुद्ध मान लिए जाते हैं। जो कल अशुद्ध था, वह सौ वर्ष बाद मानक हो सकता है।

फिर भी किसी एक समय पर एक **मानक रूप** का होना आवश्यक है — वरना शिक्षा, प्रशासन और प्रकाशन का कोई साझा आधार नहीं रहेगा। व्याकरण यही आधार देता है।

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

व्याकरण की परिभाषा दीजिए।

उत्तर वह शास्त्र जिसके द्वारा किसी भाषा को शुद्ध बोलना, शुद्ध पढ़ना और शुद्ध लिखना आता है, उसे व्याकरण कहते हैं।

“व्याकरण” शब्द की व्युत्पत्ति बताइए।

उत्तर वि + आ + करण, जिसका अर्थ है भली-भाँति समझाना या विश्लेषण करना — अर्थात् भाषा को तोड़कर यह दिखाना कि वह किस तरह काम करती है।

व्याकरण के तीन अंग कौन-से हैं और प्रत्येक में क्या पढ़ा जाता है?

उत्तर वर्ण विचार — ध्वनि और वर्ण (वर्णमाला, संधि, उच्चारण)। शब्द विचार — शब्दों के भेद और रूप (संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, कारक, समास)। वाक्य विचार — वाक्य की रचना (वाक्य के भेद, पदबंध, उपवाक्य, वाक्य शुद्धि)।

शब्द और पद में क्या अंतर है? उदाहरण दीजिए।

उत्तर अकेला शब्द, जो वाक्य में प्रयुक्त न हुआ हो, केवल शब्द है; वाक्य में आकर व्याकरणिक भूमिका निभाने पर वही पद बन जाता है। “लड़का” अकेले में शब्द है; “लड़का पुस्तक पढ़ता है” में वह पद है — कर्ता, पुल्लिंग, एकवचन।

“व्याकरण भाषा पर नियम थोपता नहीं” — इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर भाषा व्याकरण से पहले बनती है। लोग बोलते हैं और उस प्रयोग में नियम स्वयं बन जाते हैं; व्याकरण उन्हीं पहले से चल रहे नियमों को खोजकर व्यवस्थित करता है। “लड़का जाता है / लड़की जाती है” का भेद व्याकरण ने बनाया नहीं, केवल यह बताया कि वह लिंग के कारण है।

हिंदी भाषा का विकास *(Development of Hindi)*

संस्कृत से पालि-प्राकृत और अपभ्रंश होते हुए हिंदी तक की यात्रा, और खड़ी बोली का मानक हिंदी बनना।

मध्यम विस्तृत विवेचन · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

संस्कृत से क्रमशः पालि, प्राकृत और अपभ्रंश के रूप में विकसित होकर जो आधुनिक भारतीय आर्यभाषा बनी, वही हिंदी है।

हिंदी किसी एक दिन नहीं बनी। वह लगभग **साढ़े तीन हज़ार वर्ष** की एक अटूट धारा का आज का रूप है — वैदिक संस्कृत से चलकर यहाँ तक पहुँची हुई।

इस यात्रा को समझ लेने पर व्याकरण की बहुत-सी बातें स्वयं स्पष्ट हो जाती हैं — यह भी कि *हस्त* से *हाथ* क्यों बना, और यह भी कि हिंदी में अरबी-फ़ारसी के इतने शब्द क्यों हैं।

विकास की तीन अवस्थाएँ

भारतीय आर्यभाषाओं का इतिहास तीन बड़े कालों में बाँटा जाता है।

अवस्था	काल	भाषाएँ
प्राचीन भारतीय आर्यभाषा	1500 ई.पू. – 500 ई.पू.	वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत
मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा	500 ई.पू. – 1000 ई.	पालि, प्राकृत, अपभ्रंश
आधुनिक भारतीय आर्यभाषा	1000 ई. से आगे	हिंदी, बांग्ला, मराठी, गुजराती, पंजाबी आदि

एक शब्द की यात्रा

संस्कृत **हस्त** → पालि/प्राकृत **हत्थ** → अपभ्रंश **हत्थु** → हिंदी **हाथ**

संस्कृत **कर्म** → प्राकृत **कम्म** → हिंदी **काम**

1. पालि

मध्यकाल की पहली प्रमुख भाषा। **महात्मा बुद्ध** ने अपना उपदेश जनभाषा पालि में दिया — यही कारण है कि बौद्ध त्रिपिटक इसी में सुरक्षित है। संस्कृत के संयुक्त व्यंजन यहाँ सरल होने लगते हैं।

2. प्राकृत

पालि के बाद का रूप, जो क्षेत्र के अनुसार कई शाखाओं में बँटा — शौरसेनी, मागधी, महाराष्ट्री, अर्धमागधी। जैन आगम अर्धमागधी में हैं, और संस्कृत नाटकों में स्त्री तथा सामान्य पात्र प्राकृत ही बोलते हैं।

3. अपभ्रंश

प्राकृत का अंतिम और सबसे बदला हुआ रूप, जो लगभग 500 से 1000 ई. तक चला। **हिंदी सीधे संस्कृत से नहीं, अपभ्रंश से निकली है** — विशेषतः *शौरसेनी अपभ्रंश* से।

ध्यान दें

यह क्रम सीधी रेखा में नहीं चला। हर अगली अवस्था के साथ पिछली भाषा समाप्त नहीं हुई — संस्कृत शास्त्र और साहित्य की भाषा बनी रही, जबकि जनभाषा आगे बदलती गई। इसीलिए हिंदी में तत्सम शब्द (संस्कृत से सीधे) और तद्भव शब्द (अपभ्रंश से घिसकर) — दोनों साथ-साथ मिलते हैं।

हिंदी का काल-विभाजन

आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा किया गया विभाजन आज भी सर्वाधिक प्रचलित है।

काल	समय	प्रमुख कवि / विशेषता
आदिकाल (वीरगाथा काल)	1000 – 1350 ई.	चंदबरदाई, विद्यापति — वीर रस, रासो काव्य
भक्तिकाल	1350 – 1650 ई.	कबीर, सूर, तुलसी, मीरा — हिंदी का स्वर्णकाल
रीतिकाल	1650 – 1850 ई.	बिहारी, केशव, घनानंद — शृंगार और काव्य-शास्त्र
आधुनिक काल	1850 ई. से आज तक	भारतेंदु, प्रेमचंद, निराला — गद्य का उदय

ध्यान दें

भक्तिकाल को **हिंदी साहित्य का स्वर्णकाल** कहा जाता है। ध्यान रहे कि इस काल की रचनाएँ खड़ी बोली में नहीं, **ब्रज और अवधी** में हैं — सूरदास ब्रज में और तुलसीदास अवधी में लिखते हैं।

खड़ी बोली का मानक हिंदी बनना

आज जिसे हम "हिंदी" कहते हैं, वह मूलतः दिल्ली-मेरठ क्षेत्र की **खड़ी बोली** है। साहित्य की भाषा सदियों तक ब्रज और अवधी रही; खड़ी बोली बोलचाल तक सीमित थी।

आधुनिक काल में यह क्रम पलट गया। **भारतेंदु हरिश्चंद्र** ने गद्य की भाषा खड़ी बोली को बनाया, और महावीर प्रसाद द्विवेदी ने उसे परिष्कृत कर पत्रिका *सरस्वती* के माध्यम से मानक रूप दिया।

एक ही बात, तीन बोलियों में

ब्रज — मैं जात हौं।

अवधी — मैं जात हउँ।

खड़ी बोली — मैं जाता हूँ।

ध्यान दें

खड़ी बोली की सबसे स्पष्ट पहचान क्रिया के अंत में आने वाला **ा / □ / □** है — *जाता है, करता है*। ब्रज में वही *जात है*, अवधी में *जात हइ* होगा। परीक्षा में बोली पहचानने का यह सबसे सरल सूत्र है।

हिंदी पर अन्य भाषाओं का प्रभाव

सदियों के राजनीतिक और व्यापारिक संपर्क ने हिंदी के शब्द-भंडार को गहराई से बदला। तुर्क-अफ़ग़ान और मुग़ल शासन से अरबी-फ़ारसी शब्द आए, और औपनिवेशिक काल में अंग्रेज़ी के।

उदाहरण

कानून (अरबी) | दुकान (फ़ारसी) | कैंची (तुर्की) | स्टेशन (अंग्रेज़ी) | आलमारी (पुर्तगाली)

इन शब्दों का विस्तृत वर्गीकरण **तत्सम और तद्भव** के प्रकरण में देखें।

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

भारतीय आर्यभाषाओं की तीन अवस्थाएँ कौन-सी हैं?

उत्तर प्राचीन भारतीय आर्यभाषा (वैदिक और लौकिक संस्कृत), मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा (पालि, प्राकृत, अपभ्रंश) और आधुनिक भारतीय आर्यभाषा (हिंदी, बांग्ला, मराठी आदि)।

हिंदी किस भाषा से सीधे विकसित हुई है?

उत्तर अपभ्रंश से — विशेषतः शौरसेनी अपभ्रंश से। हिंदी संस्कृत से सीधे नहीं निकली; बीच में पालि, प्राकृत और अपभ्रंश की अवस्थाएँ हैं।

"हस्त" से "हाथ" तक की विकास-यात्रा लिखिए।

उत्तर संस्कृत हस्त → पालि/प्राकृत हत्थ → अपभ्रंश हत्थु → हिंदी हाथ।

हिंदी साहित्य के चार कालों के नाम और समय बताइए।

उत्तर आदिकाल या वीरगाथा काल (1000–1350 ई.), भक्तिकाल (1350–1650 ई.), रीतिकाल (1650–1850 ई.) और आधुनिक काल (1850 ई. से आज तक)।

खड़ी बोली मानक हिंदी कैसे बनी?

उत्तर साहित्य की भाषा सदियों तक ब्रज और अवधी रही और खड़ी बोली बोलचाल तक सीमित थी। आधुनिक काल में भारतेंदु हरिश्चंद्र ने गद्य की भाषा खड़ी बोली को बनाया और महावीर प्रसाद द्विवेदी ने सरस्वती पत्रिका के माध्यम से उसे परिष्कृत कर मानक रूप दिया।

लिपि और देवनागरी *(Script & Devanagari)*

ध्वनियों को लिखने के चिह्नों की व्यवस्था लिपि है। हिंदी की लिपि देवनागरी है, जो बाएँ से दाएँ लिखी जाती है।

आधार · आरंभिक अवधारणा · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

किसी भाषा की ध्वनियों को लिखकर प्रकट करने के लिए प्रयुक्त चिह्नों की व्यवस्था को लिपि कहते हैं।

भाषा ध्वनि से बनती है, और ध्वनि हवा में विलीन हो जाती है। उसे रोक लेने का साधन **लिपि** है।

लिपि भाषा नहीं है — वह भाषा को लिखने की **व्यवस्था** है। यही कारण है कि एक ही लिपि कई भाषाएँ लिख सकती है, और एक ही भाषा कई लिपियों में लिखी जा सकती है।

ध्यान दें

लिपि और भाषा को एक न समझें। **देवनागरी** लिपि है, **हिंदी** भाषा। देवनागरी में केवल हिंदी नहीं — संस्कृत, मराठी, नेपाली, कोंकणी और बोडो भी लिखी जाती हैं। इसी प्रकार कश्मीरी एक ही समय में देवनागरी और फ़ारसी दोनों लिपियों में लिखी जाती है।

प्रमुख भाषाएँ और उनकी लिपियाँ

भाषा	लिपि
हिंदी, संस्कृत, मराठी, नेपाली	देवनागरी
अंग्रेज़ी, फ़्रांसीसी, जर्मन	रोमन

भाषा	लिपि
उर्दू, फ़ारसी, अरबी	फ़ारसी / अरबी
पंजाबी	गुरुमुखी
बांग्ला, असमिया	बांग्ला
तमिल	तमिल
तेलुगु	तेलुगु

देवनागरी का विकास

देवनागरी अचानक नहीं बनी। उसका मूल **ब्राह्मी लिपि** है — वही लिपि जिसमें सम्राट अशोक के शिलालेख उत्कीर्ण हैं।

> **विकास क्रम**
>
> **ब्राह्मी → गुप्त लिपि → कुटिल लिपि → नागरी → देवनागरी**

ब्राह्मी से ही भारत की अधिकांश आधुनिक लिपियाँ निकली हैं — बांग्ला, गुजराती, गुरुमुखी, तेलुगु और तमिल सब उसी परिवार की हैं। यही कारण है कि इन लिपियों की वर्ण-व्यवस्था का **क्रम** एक-सा है, भले आकृतियाँ भिन्न हों।

> **ध्यान दें**
>
> भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में कहा गया है कि संघ की राजभाषा **देवनागरी लिपि में हिंदी** होगी, और अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा। लिपि का उल्लेख यहाँ स्पष्ट रूप से है — यह परीक्षा में पूछा जाता है।

देवनागरी की विशेषताएँ

देवनागरी को संसार की सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपियों में गिना जाता है। इसके कारण ये हैं —

- **जैसा बोला जाता है, वैसा ही लिखा जाता है।** रोमन लिपि की तरह *put* और *but* का उच्चारण-भेद यहाँ नहीं होता, न ही अनुच्चरित अक्षर होते हैं।
- **एक ध्वनि के लिए एक ही चिह्न** है, और एक चिह्न की एक ही ध्वनि। कोई वर्ण दो तरह से नहीं बोला जाता।
- वर्णों का क्रम **उच्चारण-स्थान के आधार पर वैज्ञानिक** है — कंठ से आरंभ होकर ओष्ठ तक (क वर्ग कंठ से, प वर्ग ओष्ठ से)।
- लिखने की दिशा **बाएँ से दाएँ** है।
- शब्द के ऊपर एक सीधी **शिरोरेखा** खींची जाती है, जो अक्षरों को जोड़कर शब्द की सीमा स्पष्ट करती है।
- **छोटे-बड़े अक्षर (capital / small) का भेद नहीं** है, जिससे नियम सरल रहते हैं।

> **ध्वनि और लिपि का मेल**
>
> रोमन में एक ही ध्वनि कई तरह लिखी जा सकती है — *see*, *sea*, *scene*।
>
> देवनागरी में *सी* एक ही तरह लिखा जाएगा — जैसा सुना, वैसा लिखा।

देवनागरी की संरचना

देवनागरी **वर्णात्मक** लिपि है, पर पूरी तरह अक्षर-आधारित नहीं। इसकी व्यवस्था इस प्रकार है —

- हर व्यंजन में **अ** स्वर पहले से मिला रहता है — *क* वस्तुतः *क् + अ* है।
- अन्य स्वर जोड़ने के लिए **मात्रा** लगाई जाती है — क, का, कि, की, कु, कू।
- स्वर हटाने के लिए **हलंत (्)** लगाया जाता है — *क्*।
- दो व्यंजन बिना स्वर के मिलें तो **संयुक्त अक्षर** बनता है — क् + ष = **क्ष**।

> **ध्यान दें**
>
> इसी कारण देवनागरी को शुद्ध वर्णमाला (alphabet) न कहकर **अक्षरात्मक-वर्णात्मक** या *abugida* कहा जाता है — क्योंकि इसकी मूल इकाई अकेला व्यंजन नहीं, बल्कि स्वर-सहित अक्षर है।

वर्णों की पूरी सूची, स्वर-व्यंजन के भेद और मात्राओं का विस्तार **वर्णमाला** के प्रकरण में देखें।

देवनागरी में सुधार के प्रयत्न

समय-समय पर लिपि को सरल बनाने के प्रयत्न हुए — मुद्रण की सुविधा के लिए संयुक्त अक्षरों को खड़ी पाई से लिखना (*क्‌ष* के स्थान पर *क्ष*), और मात्राओं का मानकीकरण। भारत सरकार ने 1966 में **मानक देवनागरी वर्णमाला** प्रकाशित की, जो आज पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त होती है।

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

लिपि किसे कहते हैं?

उत्तर किसी भाषा की ध्वनियों को लिखकर प्रकट करने के लिए प्रयुक्त चिह्नों की व्यवस्था को लिपि कहते हैं।

लिपि और भाषा में क्या अंतर है? उदाहरण दीजिए।

उत्तर भाषा ध्वनि से बनी विचार-विनिमय की व्यवस्था है; लिपि उसे लिखने का साधन है। देवनागरी लिपि है और हिंदी भाषा — देवनागरी में हिंदी के अतिरिक्त संस्कृत, मराठी, नेपाली और कोंकणी भी लिखी जाती हैं।

देवनागरी का विकास क्रम बताइए।

उत्तर ब्राह्मी → गुप्त लिपि → कुटिल लिपि → नागरी → देवनागरी। ब्राह्मी वही लिपि है जिसमें सम्राट अशोक के शिलालेख उत्कीर्ण हैं।

देवनागरी की चार विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर जैसा बोला जाता है वैसा ही लिखा जाता है; एक ध्वनि के लिए एक ही चिह्न है; वर्णों का क्रम उच्चारण-स्थान के आधार पर वैज्ञानिक है; यह बाएँ से दाएँ लिखी जाती है और शब्द के ऊपर शिरोरेखा होती है। छोटे-बड़े अक्षरों का भेद भी नहीं होता।

देवनागरी को शुद्ध वर्णमाला क्यों नहीं कहा जाता?

उत्तर क्योंकि इसकी मूल इकाई अकेला व्यंजन नहीं है — हर व्यंजन में “अ” स्वर पहले से मिला रहता है (क = क् + अ)। स्वर बदलने के लिए मात्रा और हटाने के लिए हलंत लगाना पड़ता है, इसलिए इसे अक्षरात्मक-वर्णात्मक (abugida) कहा जाता है।

ध्वनि और वर्ण का अध्ययन — वर्णमाला, स्वर, व्यंजन, संधि, उच्चारण और विराम चिह्न।

वर्ण विचार *(PHONOLOGY)*

वर्णमाला *(Alphabet)*

वर्णों के व्यवस्थित समूह को वर्णमाला कहते हैं। हिंदी में 11 स्वर और 33 व्यंजन हैं।

आधार आरंभिक अवधारणा · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

भाषा की सबसे छोटी ध्वनि को वर्ण कहते हैं, और वर्णों के व्यवस्थित समूह को वर्णमाला।

बोलते समय हमारे मुँह से जो ध्वनि निकलती है, उसे लिखने के लिए जो चिह्न बनाया जाता है — वही वर्ण है। *क* को और तोड़ा नहीं जा सकता, इसलिए वह एक वर्ण है। इसके विपरीत *कल* को *क* और *ल* में तोड़ा जा सकता है, इसलिए वह वर्ण नहीं, शब्द है।

ध्यान दें

वर्ण और अक्षर एक नहीं हैं। वर्ण ध्वनि की सबसे छोटी इकाई है; अक्षर उच्चारण की इकाई है, जो एक साँस में बोली जाती है। *कमल* में तीन वर्ण-समूह हैं पर पाँच वर्ण — क् + अ + म् + अ + ल्।

वर्ण के भेद

उच्चारण के आधार पर वर्ण दो प्रकार के होते हैं।

1. स्वर

जिन वर्णों का उच्चारण **बिना किसी दूसरे वर्ण की सहायता** के होता है, वे स्वर कहलाते हैं। हिंदी में मूल स्वर **ग्यारह** माने जाते हैं।

> **उदाहरण**
>
> अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

उच्चारण में लगने वाले समय के आधार पर स्वरों के तीन भेद हैं:

भेद	उच्चारण-काल	स्वर
ह्रस्व	सबसे कम (एक मात्रा)	अ, इ, उ, ऋ
दीर्घ	ह्रस्व से दुगुना	आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ
प्लुत	दीर्घ से भी अधिक	ओ३म् (केवल पुकारने में)

> **ध्यान दें**
>
> कुछ ग्रंथों में स्वरों की संख्या तेरह बताई जाती है, क्योंकि वे *अं* और *अः* को भी स्वरों में गिन लेते हैं। वस्तुतः ये स्वर नहीं, **अयोगवाह** हैं — इन पर आगे चर्चा है।

2. व्यंजन

जिन वर्णों का उच्चारण **स्वर की सहायता से** होता है, वे व्यंजन कहलाते हैं। हर व्यंजन में *अ* पहले से मिला होता है — *क* वस्तुतः *क् + अ* है।

हिंदी में व्यंजन **तैंतीस** हैं, जो तीन वर्गों में बँटे हैं।

स्पर्श व्यंजन

इनके उच्चारण में जीभ मुख के किसी भाग को स्पर्श करती है। ये पच्चीस हैं, पाँच वर्गों में:

वर्ग	व्यंजन	उच्चारण-स्थान
क वर्ग	क, ख, ग, घ, ङ	कंठ
च वर्ग	च, छ, ज, झ, ञ	तालु
ट वर्ग	ट, ठ, ड, ढ, ण	मूर्धा
त वर्ग	त, थ, द, ध, न	दंत
प वर्ग	प, फ, ब, भ, म	ओष्ठ

अंतःस्थ व्यंजन

ये स्वर और व्यंजन के *बीच* की स्थिति में हैं — चार हैं।

उदाहरण

य र ल व

ऊष्म व्यंजन

इनके उच्चारण में हवा रगड़ खाकर निकलती है, जिससे ऊष्मा उत्पन्न होती है — ये भी चार हैं।

उदाहरण

श ष स ह

अयोगवाह

अं (अनुस्वार) और *अः* (विसर्ग) न पूरी तरह स्वर हैं, न व्यंजन। ये स्वर के बाद आते हैं पर उच्चारण में व्यंजन जैसे हैं, इसलिए इन्हें **अयोगवाह** कहते हैं।

चिह्न	नाम	उदाहरण
ं	अनुस्वार	गंगा, अंग, हंस
ँ	अनुनासिक (चंद्रबिंदु)	चाँद, आँख, हँसना
ः	विसर्ग	दुःख, अतः, प्रातः

ध्यान दें

अनुस्वार और अनुनासिक में अंतर ध्यान देने योग्य है। अनुस्वार (ं) में ध्वनि पूरी तरह नाक से निकलती है — *गंगा*। अनुनासिक (ँ) में ध्वनि मुँह और नाक दोनों से निकलती है — *चाँद*। *हंस* (पक्षी) और *हँस* (हँसना) का अर्थ इसी बिंदु से बदल जाता है।

संयुक्त व्यंजन

दो या अधिक व्यंजन मिलकर एक नया रूप बना लेते हैं। हिंदी में चार संयुक्त व्यंजन प्रमुख हैं:

संयुक्त व्यंजन	बना है	उदाहरण
क्ष	क् + ष	क्षमा, रक्षा
त्र	त् + र	त्रिशूल, पत्र
ज्ञ	ज् + ञ	ज्ञान, विज्ञान
श्र	श् + र	श्रम, श्रद्धा

मात्राएँ

जब स्वर व्यंजन के साथ जुड़ता है, तो वह अपने पूर्ण रूप में नहीं, **मात्रा** के रूप में लिखा जाता है।

स्वर	मात्रा	उदाहरण
अ	कोई चिह्न नहीं	क
आ	ा	का
इ	ि	कि
ई	ी	की
उ	ु	कु
ऊ	ू	कू
ए	े	के
ऐ	ै	कै
ओ	ो	को
औ	ौ	कौ

अ की कोई मात्रा नहीं होती, क्योंकि वह हर व्यंजन में पहले से मौजूद है। जब उसे हटाना हो, तो नीचे **हलंत** (्) लगाते हैं — जैसे *क्*।

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

हिंदी में मूल स्वर और व्यंजन कितने हैं?

उत्तर 11 स्वर और 33 व्यंजन।

“हंस” और “हँस” में क्या अंतर है?

उत्तर “हंस” में अनुस्वार है और वह एक पक्षी का नाम है; “हँस” में अनुनासिक है और वह हँसने की क्रिया है। बिंदु का प्रकार बदलते ही अर्थ बदल जाता है।

“ज्ञ” किन दो वर्णों से मिलकर बना है?

उत्तर ज् + ञ।

“ट, ठ, ड, ढ, ण” का उच्चारण-स्थान क्या है?

उत्तर मूर्धा। ये मूर्धन्य व्यंजन हैं और ट वर्ग कहलाते हैं।

अयोगवाह किन्हें कहते हैं और क्यों?

उत्तर अनुस्वार (अं) और विसर्ग (अः) को, क्योंकि ये न पूर्णतः स्वर हैं न व्यंजन — स्वर के बाद आते हैं पर उच्चारण में व्यंजन जैसे हैं।

संधि *(Sandhi)*

दो वर्णों के मेल से होने वाले विकार को संधि कहते हैं। इसके तीन भेद हैं — स्वर, व्यंजन और विसर्ग संधि।

मध्यम   विस्तृत विवेचन · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

दो वर्णों के परस्पर मेल से उनमें जो विकार (परिवर्तन) होता है, उसे संधि कहते हैं।

जब दो शब्द पास आते हैं, तो पहले शब्द का अंतिम वर्ण और दूसरे शब्द का पहला वर्ण मिलकर प्रायः एक नया वर्ण बना लेते हैं। यही **संधि** है।

कैसे बनती है

विद्या + आलय = विद्या**लय** — यहाँ *आ + आ* मिलकर *आ* हो गया।

सूर्य + उदय = सूर्य◌ोदय — यहाँ *अ + उ* मिलकर *ओ* हो गया।

संधि किए हुए शब्द को उसके मूल रूप में अलग कर देना **संधि विच्छेद** कहलाता है।

ध्यान दें

संधि और समास को एक न समझें। संधि में **वर्णों** का मेल होता है और वर्ण बदल जाता है; समास में **शब्दों** का मेल होता है और बीच का कारक-चिह्न लुप्त होता है। *हिमालय* संधि है (हिम + आलय), *राजपुत्र* समास है (राजा का पुत्र)।

संधि के भेद

संधि के तीन भेद हैं — इस आधार पर कि मेल किन वर्णों का हुआ।

स्वर संधि

जब **दो स्वरों** का मेल होता है, तो स्वर संधि होती है। इसके पाँच उपभेद हैं।

1. दीर्घ संधि

नियम: दो समान स्वर (ह्रस्व या दीर्घ) मिलकर उसी का दीर्घ रूप बन जाते हैं।

संधि विच्छेद	मेल	संधि रूप
धर्म + अर्थ	अ + अ = आ	धर्मार्थ
विद्या + आलय	आ + आ = आ	विद्यालय
कवि + इंद्र	इ + इ = ई	कवींद्र
मुनि + ईश	इ + ई = ई	मुनीश
भानु + उदय	उ + उ = ऊ	भानूदय

2. गुण संधि

नियम: *अ* या *आ* के बाद *इ/ई* आए तो **ए**, *उ/ऊ* आए तो **ओ**, और *ऋ* आए तो **अर्** हो जाता है।

संधि विच्छेद	मेल	संधि रूप
देव + इंद्र	अ + इ = ए	देवेंद्र
महा + ईश	आ + ई = ए	महेश
सूर्य + उदय	अ + उ = ओ	सूर्योदय
महा + उत्सव	आ + उ = ओ	महोत्सव
देव + ऋषि	अ + ऋ = अर्	देवर्षि

3. वृद्धि संधि

नियम: *अ* या *आ* के बाद *ए/ऐ* आए तो **ऐ**, और *ओ/औ* आए तो **औ** हो जाता है।

संधि विच्छेद	मेल	संधि रूप
एक + एक	अ + ए = ऐ	एकैक
मत + ऐक्य	अ + ऐ = ऐ	मतैक्य
वन + ओषधि	अ + ओ = औ	वनौषधि
महा + औषध	आ + औ = औ	महौषध

4. यण संधि

नियम: *इ/ई* के बाद कोई **भिन्न** स्वर आए तो *इ* का **य्** हो जाता है; इसी प्रकार *उ/ऊ* का **व्** और *ऋ* का **र्**।

संधि विच्छेद	मेल	संधि रूप
यदि + अपि	इ + अ = य्	यद्यपि
अति + अधिक	इ + अ = य्	अत्यधिक
सु + आगत	उ + आ = व्	स्वागत
अनु + अय	उ + अ = व्	अन्वय
पितृ + आज्ञा	ऋ + आ = र्	पित्राज्ञा

ध्यान दें

यण संधि की शर्त यह है कि बाद में आने वाला स्वर **असमान** हो। *कवि + इंद्र* में दोनों *इ* हैं, इसलिए वहाँ यण नहीं, दीर्घ संधि होगी — *कवींद्र*।

5. अयादि संधि

नियम: *ए, ऐ, ओ, औ* के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो वे क्रमशः **अय्, आय्, अव्, आव्** हो जाते हैं।

संधि विच्छेद	मेल	संधि रूप
ने + अन	ए = अय्	नयन
नै + अक	ऐ = आय्	नायक
पो + अन	ओ = अव्	पवन
पौ + अक	औ = आव्	पावक

व्यंजन संधि

जब **व्यंजन का व्यंजन या स्वर** से मेल हो, तो व्यंजन संधि होती है।

संधि विच्छेद	संधि रूप	क्या हुआ
सत् + आनंद	सदानंद	त् का द्
उत् + हार	उद्धार	त् + ह् का द्ध
जगत् + नाथ	जगन्नाथ	त् का न्
सम् + तोष	संतोष	म् का अनुस्वार
उत् + चारण	उच्चारण	त् का च्
अभि + सेक	अभिषेक	स का ष

विसर्ग संधि

जब **विसर्ग (□)** का मेल किसी स्वर या व्यंजन से हो, तो विसर्ग संधि होती है।

संधि विच्छेद	संधि रूप	क्या हुआ
निः + चल	निश्चल	विसर्ग का श्
निः + तेज	निस्तेज	विसर्ग का स्
मनः + रथ	मनोरथ	विसर्ग का ओ
दुः + आत्मा	दुरात्मा	विसर्ग का र्
निः + आहार	निराहार	विसर्ग का र्

ध्यान दें

संधि के नियम याद करने का सबसे कारगर तरीका नियम रटना नहीं, बल्कि **संधि विच्छेद का अभ्यास** है। किसी भी बने हुए शब्द को तोड़कर देखें कि कौन-सा स्वर किससे मिला — कुछ ही शब्दों के बाद नियम स्वयं स्पष्ट होने लगते हैं।

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

"सूर्योदय" का संधि विच्छेद कीजिए और संधि का नाम बताइए।

उत्तर सूर्य + उदय। अ + उ = ओ, अतः यह गुण संधि है।

"स्वागत" में कौन-सी संधि है?

उत्तर यण संधि। सु + आगत — उ के बाद भिन्न स्वर आ आने से उ का व् हो गया।

"कवि + इंद्र" की संधि कीजिए। यहाँ यण संधि क्यों नहीं होगी?

उत्तर कवींद्र। यण संधि तब होती है जब बाद में असमान स्वर आए; यहाँ दोनों इ हैं, इसलिए दीर्घ संधि होगी।

"मनोरथ" का संधि विच्छेद कीजिए।

उत्तर मनः + रथ। यह विसर्ग संधि है — विसर्ग ओ में बदल गया।

संधि और समास में मूल अंतर क्या है?

उत्तर संधि में वर्णों का मेल होता है और वर्ण में विकार आता है; समास में शब्दों का मेल होता है और बीच का कारक-चिह्न लुप्त हो जाता है।

उच्चारण और वर्तनी *(Pronunciation & Spelling)*

शुद्ध बोलना उच्चारण है और शुद्ध लिखना वर्तनी। दोनों की सामान्य अशुद्धियाँ और उनके नियम।

मध्यम विस्तृत विवेचन · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

वर्णों के शुद्ध ध्वनि-रूप को उच्चारण कहते हैं, और शब्द में वर्णों के शुद्ध क्रम तथा रूप को वर्तनी।

एक ही शब्द को गलत बोलना और गलत लिखना — ये दो अलग भूलें हैं, और दोनों के कारण भी अलग हैं।

उच्चारण का संबंध ध्वनि से है: वर्ण मुख के किस भाग से निकल रहा है। **वर्तनी** का संबंध लेखन से है: शब्द में कौन-सा वर्ण, कौन-सी मात्रा, किस क्रम में आएगी। देवनागरी में दोनों बहुत निकट हैं, क्योंकि यहाँ प्रायः जैसा बोला जाता है वैसा ही लिखा जाता है — पर “प्रायः” ही समस्या है।

उच्चारण स्थान

हर वर्ण मुख के एक निश्चित भाग से निकलता है। वही उसका **उच्चारण स्थान** है, और देवनागरी वर्णमाला का क्रम इसी पर आधारित है।

स्थान	वर्ण	नाम
कंठ	अ, आ, क वर्ग, ह, विसर्ग	कंठ्य
तालु	इ, ई, च वर्ग, य, श	तालव्य

स्थान	वर्ण	नाम
मूर्धा	ऋ, ट वर्ग, र, ष	मूर्धन्य
दंत	त वर्ग, ल, स	दंत्य
ओष्ठ	उ, ऊ, प वर्ग	ओष्ठ्य
नासिका	ङ, ञ, ण, न, म, अनुस्वार	नासिक्य
कंठ-तालु	ए, ऐ	कंठतालव्य
कंठ-ओष्ठ	ओ, औ	कंठोष्ठ्य
दंत-ओष्ठ	व	दंतोष्ठ्य

ध्यान दें

वर्णमाला का क्रम याद करने की आवश्यकता नहीं — वह **मुख के भीतर से बाहर की ओर** चलता है। क वर्ग सबसे भीतर कंठ से, और प वर्ग सबसे बाहर ओष्ठ से। बीच के वर्ग उसी क्रम में हैं।

उच्चारण की सामान्य अशुद्धियाँ

बोलचाल में ये भेद प्रायः मिट जाते हैं, पर लिखने में ये अर्थ बदल देते हैं।

अशुद्ध	शुद्ध	किस बात का ध्यान
छमा	क्षमा	क्ष का उच्चारण
परसाद	प्रसाद	र की मात्रा
इस्कूल	स्कूल	आरंभ में अनावश्यक इ
सक्ति	शक्ति	श और स का भेद
बिस	बीस	ह्रस्व-दीर्घ का भेद

अशुद्ध	शुद्ध	किस बात का ध्यान
ग्यान	ज्ञान	ज्ञ का उच्चारण
रिषि	ऋषि	ऋ का उच्चारण
ब्रम्हा	ब्रह्मा	ह्म का क्रम

ध्यान दें

श, ष और स की अशुद्धि सबसे अधिक होती है। संकेत यह है: *श* तालु से (**श**हर, **श**क्ति), *ष* मूर्धा से और प्रायः तत्सम शब्दों में (भा**ष**ा, मनु**ष्**य), *स* दंत से (**स**मय, **स**रल)।

वर्तनी के प्रमुख नियम

1. अनुस्वार और अनुनासिक

यह वर्तनी की सबसे बड़ी उलझन है, पर नियम सीधा है।

अनुस्वार (ं) पूरा व्यंजन है — पंचम वर्ण का स्थान लेता है और स्पष्ट सुनाई देता है। **अनुनासिक (ँ)** केवल स्वर को नासिका से बोलने का चिह्न है।

अनुस्वार	अनुनासिक
गंगा, अंडा, चंचल	चाँद, हँसना, आँख
संबंध, कंबल, पंख	गाँव, दाँत, साँप

अर्थ बदल जाता है

हंस — एक पक्षी।

हँस — हँसने की क्रिया।

> चिह्न का यह अंतर वर्तनी की भूल नहीं, अर्थ की भूल है।

2. पंचमाक्षर का नियम

जब किसी वर्ग का पंचम वर्ण (ङ, ञ, ण, न, म) उसी वर्ग के किसी व्यंजन से पहले आए, तो उसके स्थान पर **अनुस्वार** लिखा जा सकता है।

पंचमाक्षर सहित	अनुस्वार सहित
अङ्क	अंक
चञ्चल	चंचल
खण्ड	खंड
सन्देह	संदेह
कम्बल	कंबल

ध्यान दें

आधुनिक मानक हिंदी में **अनुस्वार वाला रूप ही प्रचलित** है — *खंड, संदेह, अंक*। पंचमाक्षर वाला रूप संस्कृत और पुराने ग्रंथों में मिलता है। दोनों अशुद्ध नहीं हैं, पर एक ही लेख में एक ही पद्धति निभानी चाहिए।

3. ह्रस्व और दीर्घ का भेद

अशुद्ध	शुद्ध
दिवाली	दीवाली
आशिर्वाद	आशीर्वाद
प्रतिक्षा	प्रतीक्षा
सुर्य	सूर्य

अशुद्ध	शुद्ध
कवि की पत्नि	कवि की पत्नी

4. र के तीन रूप

रूप	नियम	उदाहरण
रेफ (र्)	र् के बाद स्वर-सहित व्यंजन आए तो ऊपर लगेगा	कर्म, धर्म, सूर्य
पदेन (□□)	व्यंजन के बाद र् आए तो नीचे लगेगा	प्रकार, क्रम, ग्राम
ट्र वाला रूप	ट वर्ग के साथ	राष्ट्र, ट्रेन

ध्यान से देखिए

कर्म — यहाँ *र्* पहले है, *म* बाद में। इसलिए रेफ ऊपर।

क्रम — यहाँ *क्* पहले है, *र* बाद में। इसलिए *र* नीचे।

एक ही दो वर्ण, पर क्रम बदलते ही चिह्न और शब्द दोनों बदल गए।

प्रायः अशुद्ध लिखे जाने वाले शब्द

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अनाधिकार	अनधिकार	उपरोक्त	उपर्युक्त
अत्याधिक	अत्यधिक	कवियत्री	कवयित्री
अहिल्या	अहल्या	गृहणी	गृहिणी
आर्शीवाद	आशीर्वाद	ज्येष्ट	ज्येष्ठ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
इकठ्ठा	इकट्ठा	तत्व	तत्त्व
उज्वल	उज्ज्वल	निरोग	नीरोग
पूज्यनीय	पूजनीय	परिक्षा	परीक्षा
महत्व	महत्त्व	लछमी	लक्ष्मी
वापिस	वापस	विद्यार्थीयों	विद्यार्थियों
शताब्दि	शताब्दी	सन्यासी	संन्यासी
सामग्रि	सामग्री	श्रोत	स्रोत

ध्यान दें

बहुवचन बनाते समय **ी का ि हो जाता है** — *विद्यार्थी → विद्यार्थियों, नदी → नदियों, लड़की → लड़कियों*। यह नियम याद रहे तो एक ही झटके में दर्जनों अशुद्धियाँ सुधर जाती हैं।

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

उच्चारण और वर्तनी में क्या अंतर है?

उत्तर उच्चारण का संबंध ध्वनि से है — वर्ण मुख के किस भाग से निकलता है। वर्तनी का संबंध लेखन से है — शब्द में कौन-सा वर्ण और कौन-सी मात्रा किस क्रम में आएगी।

अनुस्वार और अनुनासिक में अंतर उदाहरण सहित बताइए।

उत्तर अनुस्वार (ं) पूरा व्यंजन है, पंचम वर्ण का स्थान लेता है और स्पष्ट सुनाई देता है — गंगा, अंडा। अनुनासिक (ँ) केवल स्वर को नासिका से बोलने का चिह्न है — चाँद, हँसना। “हंस” पक्षी है और “हँस” क्रिया — चिह्न बदलते ही अर्थ बदल जाता है।

पंचमाक्षर का नियम क्या है? दो उदाहरण दीजिए।

उत्तर जब किसी वर्ग का पंचम वर्ण (ङ, ञ, ण, न, म) उसी वर्ग के व्यंजन से पहले आए, तो उसके स्थान पर अनुस्वार लिखा जा सकता है — अङ्क = अंक, सन्देह = संदेह। आधुनिक मानक हिंदी में अनुस्वार वाला रूप ही प्रचलित है।

“कर्म” और “क्रम” में र के चिह्न का अंतर समझाइए।

उत्तर कर्म में र् पहले और म बाद में है, इसलिए रेफ (र्) ऊपर लगेगा। क्रम में क् पहले और र बाद में है, इसलिए र पदेन रूप में नीचे लगेगा। वर्णों का क्रम बदलते ही चिह्न और शब्द दोनों बदल जाते हैं।

शुद्ध रूप लिखिए — आर्शीवाद, कवियत्री, उपरोक्त, इकठ्ठा, महत्व।

उत्तर आशीर्वाद, कवयित्री, उपर्युक्त, इकट्ठा, महत्त्व।

विराम चिह्न *(Punctuation Marks)*

लिखित भाषा में ठहराव और भाव दिखाने वाले चिह्न — पूर्ण विराम, अल्प विराम, प्रश्नवाचक, विस्मयादिबोधक आदि।

आधार · आरंभिक अवधारणा · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

लिखित भाषा में अर्थ और भाव स्पष्ट करने के लिए ठहराव दिखाने वाले चिह्नों को विराम चिह्न कहते हैं।

बोलते समय हम रुकते हैं, स्वर ऊँचा-नीचा करते हैं, और सुनने वाला अर्थ समझ जाता है। लिखने में वह सहारा नहीं रहता — उसकी भरपाई **विराम चिह्न** करते हैं।

विराम का अर्थ ही है ठहराव। ये चिह्न बताते हैं कि कहाँ रुकना है, कितना रुकना है, और वाक्य किस भाव से कहा जा रहा है।

चिह्न अर्थ बदल देता है

रोको, मत जाने दो। — जाने से रोक दो।

रोको मत, जाने दो। — जाने दो, रोको नहीं।

अल्प विराम एक स्थान खिसका, और आदेश उलट गया।

प्रमुख विराम चिह्न

चिह्न	नाम	कहाँ लगता है
।	पूर्ण विराम	वाक्य पूरा होने पर
,	अल्प विराम	थोड़े ठहराव पर
;	अर्ध विराम	पूर्ण से कम, अल्प से अधिक ठहराव पर
?	प्रश्नवाचक चिह्न	प्रश्न पूछने पर
!	विस्मयादिबोधक चिह्न	हर्ष, शोक, आश्चर्य के भाव पर
:	उपविराम	कथन से पहले सूचना देने पर
—	निर्देशक चिह्न	कथन या विवरण से पहले
" "	उद्धरण चिह्न	किसी के कहे शब्द ज्यों के त्यों देने पर
( )	कोष्ठक	अतिरिक्त स्पष्टीकरण के लिए
-	योजक चिह्न	दो शब्दों को जोड़ने पर
...	लोप चिह्न	कुछ छोड़ देने पर

1. पूर्ण विराम (।)

सबसे अधिक प्रयुक्त चिह्न। जहाँ वाक्य पूरा हो और बात समाप्त हो जाए, वहाँ लगता है।

उदाहरण

राम पुस्तक पढ़ता है।

बच्चे मैदान में खेल रहे हैं।

ध्यान दें

हिंदी में पूर्ण विराम के लिए **खड़ी पाई (।)** का प्रयोग होता है, अंग्रेज़ी वाले बिंदु (.) का नहीं। यह केवल परंपरा नहीं — मानक देवनागरी की व्यवस्था है। बिंदु का प्रयोग हिंदी में संक्षिप्त रूपों में होता है, जैसे *डॉ., ई.पू., श्री.*

2. अल्प विराम (,)

जहाँ बोलते समय थोड़ा-सा ठहरना पड़े। इसके प्रयोग के कुछ निश्चित स्थान हैं —

- **समान कोटि के शब्दों के बीच** — राम, श्याम, मोहन और सोहन आए।
- **संबोधन के बाद** — भाइयो, ध्यान से सुनिए।
- **उपवाक्यों को अलग करने में** — जो परिश्रम करता है, वह सफल होता है।
- **हाँ / नहीं के बाद** — हाँ, मैं जाऊँगा।

ध्यान दें

सूची में **अंतिम दो शब्दों के बीच अल्प विराम नहीं** लगता, वहाँ *और* आता है — *राम, श्याम, मोहन और सोहन*। यह अंग्रेज़ी से भिन्न है, जहाँ अंतिम अल्प विराम विकल्प से लगाया जा सकता है।

3. अर्ध विराम (;)

जहाँ ठहराव पूर्ण विराम से कम पर अल्प विराम से अधिक हो। प्रायः दो ऐसे उपवाक्यों के बीच, जो अलग होकर भी पूरे वाक्य बन सकते हों पर अर्थ से जुड़े हों।

> **उदाहरण**
>
> सूर्य निकल आया; अंधकार मिट गया।
>
> उसने बहुत परिश्रम किया; फिर भी सफलता न मिली।

4. प्रश्नवाचक चिह्न (?)

प्रश्नवाचक वाक्य के अंत में।

उदाहरण

तुम कहाँ जा रहे हो?

क्या तुमने भोजन कर लिया?

ध्यान दें

जहाँ प्रश्न सीधा न पूछा जाकर केवल बताया जा रहा हो, वहाँ प्रश्नवाचक चिह्न **नहीं** लगता, पूर्ण विराम लगता है — *उसने पूछा कि तुम कहाँ जा रहे हो।* यहाँ वाक्य प्रश्न नहीं, प्रश्न का विवरण है।

5. विस्मयादिबोधक चिह्न (!)

हर्ष, शोक, आश्चर्य, घृणा, संबोधन आदि भाव प्रकट करने वाले शब्दों और वाक्यों के बाद।

उदाहरण

वाह! कितना सुंदर दृश्य है।

हाय! वह चल बसा।

अरे! तुम यहाँ कैसे?

6. उद्धरण चिह्न (“ ”)

किसी के कहे हुए शब्द ज्यों के त्यों देने पर **दुहरा** उद्धरण चिह्न लगता है। पुस्तक, पत्रिका, उपनाम या किसी शब्द पर विशेष बल देने के लिए **इकहरा** (‘ ’) लगता है।

उदाहरण

गांधी जी ने कहा, “अहिंसा परम धर्म है।”

तुलसीदास ने ‘रामचरितमानस’ की रचना की।

निराला का उपनाम ‘महाप्राण’ था।

7. योजक चिह्न (-)

दो शब्दों को जोड़ने के लिए। समस्त पदों, द्वंद्व समास और पुनरुक्त शब्दों में इसका प्रयोग होता है।

उदाहरण

माता-पिता | राजा-रानी | दिन-रात | धीरे-धीरे | सुख-दुःख | लेन-देन

ध्यान दें

योजक चिह्न (-) और निर्देशक चिह्न (—) एक नहीं हैं। योजक **छोटा** होता है और शब्दों को जोड़ता है (*माता-पिता*); निर्देशक **लंबा** होता है और कथन से पहले लगता है (*उसने कहा — मैं आऊँगा*)।

8. निर्देशक चिह्न (—)

किसी कथन, उदाहरण या विवरण को आगे प्रस्तुत करने से पहले।

उदाहरण

मोहन ने कहा — मैं कल अवश्य आऊँगा।

हिंदी के तीन प्रमुख कवि हैं — सूर, तुलसी और कबीर।

9. उपविराम (:)

किसी विषय की सूचना देकर उसका विवरण देने से पहले।

> उदाहरण
>
> व्याकरण के तीन अंग हैं: वर्ण विचार, शब्द विचार और वाक्य विचार।

10. कोष्ठक ( ) और लोप चिह्न (…)

कोष्ठक में वह बात रखी जाती है जो मुख्य वाक्य का अंग नहीं, केवल स्पष्टीकरण है। **लोप चिह्न** बताता है कि कुछ अंश छोड़ दिया गया है।

> उदाहरण
>
> भारतेंदु हरिश्चंद्र (1850–1885) आधुनिक हिंदी के जनक माने जाते हैं।
>
> उसने कहा, “मैं तो केवल इतना चाहता था कि…”

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

विराम चिह्न किसे कहते हैं? ये क्यों आवश्यक हैं?

उत्तर लिखित भाषा में अर्थ और भाव स्पष्ट करने के लिए ठहराव दिखाने वाले चिह्नों को विराम चिह्न कहते हैं। बोलते समय ठहराव और स्वर के उतार-चढ़ाव से अर्थ स्पष्ट हो जाता है; लिखने में वह सहारा न होने से यही काम विराम चिह्न करते हैं।

हिंदी में पूर्ण विराम के लिए कौन-सा चिह्न प्रयुक्त होता है?

उत्तर खड़ी पाई (।)। अंग्रेज़ी वाला बिंदु (.) हिंदी में केवल संक्षिप्त रूपों में लगता है, जैसे डॉ., ई.पू.।

अल्प विराम और अर्ध विराम में क्या अंतर है? उदाहरण दीजिए।

उत्तर अल्प विराम (,) थोड़े ठहराव पर लगता है — राम, श्याम और मोहन आए। अर्ध विराम (;) का ठहराव पूर्ण विराम से कम पर अल्प विराम से अधिक होता है, और वह प्रायः ऐसे दो उपवाक्यों के बीच आता है जो अलग होकर भी पूरे वाक्य बन सकें — सूर्य निकल आया; अंधकार मिट गया।

योजक और निर्देशक चिह्न में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर योजक चिह्न (-) छोटा होता है और दो शब्दों को जोड़ता है — माता-पिता, धीरे-धीरे। निर्देशक चिह्न (—) लंबा होता है और किसी कथन या विवरण से पहले लगता है — उसने कहा — मैं कल आऊँगा।

“रोको मत जाने दो” में विराम चिह्न लगाकर दो भिन्न अर्थ वाले वाक्य बनाइए।

उत्तर रोको, मत जाने दो। — अर्थात् जाने से रोक दो। रोको मत, जाने दो। — अर्थात् जाने दो, रोको नहीं। अल्प विराम का स्थान बदलते ही आदेश उलट जाता है।

शब्दों के भेद और रूप — संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, कारक, काल, समास।

शब्द विचार *(MORPHOLOGY)*

संज्ञा *(Noun)*

किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, गुण या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं। इसके पाँच भेद हैं।

आधार आरंभिक अवधारणा · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, भाव या गुण के नाम को संज्ञा कहते हैं।

संसार की हर वस्तु का कोई न कोई नाम होता है। जिस व्यक्ति को हम *राम* कहकर पुकारते हैं, जिस वस्तु को *किताब* कहते हैं, जिस स्थान को *दिल्ली* कहते हैं — ये सब नाम ही संज्ञा हैं। बिना नामों के भाषा संभव ही नहीं होती, इसीलिए संज्ञा को शब्द-भेदों में पहला स्थान दिया जाता है।

उदाहरण

राम | किताब | दिल्ली | मिठास | सोना | सेना

संज्ञा केवल उन्हीं चीज़ों के नाम नहीं होती जिन्हें हम छू सकते हैं। *ईमानदारी*, *क्रोध* और *बचपन* को न देखा जा सकता है, न छुआ — फिर भी ये नाम हैं, इसलिए संज्ञा हैं।

संज्ञा के भेद

पारंपरिक रूप से संज्ञा के **तीन** मुख्य भेद माने जाते हैं — व्यक्तिवाचक, जातिवाचक और भाववाचक। आधुनिक हिंदी व्याकरण में, अंग्रेज़ी व्याकरण के प्रभाव से, दो भेद और जोड़े जाते हैं — द्रव्यवाचक और समूहवाचक। इस

प्रकार कुल **पाँच** भेद प्रचलित हैं।

ध्यान दें

भेदों की संख्या पर ग्रंथों में मतभेद है। कुछ विद्वान द्रव्यवाचक और समूहवाचक को जातिवाचक के ही उपभेद मानते हैं, क्योंकि *सोना* और *सेना* भी अपनी-अपनी जाति के सभी सदस्यों का बोध कराते हैं। दोनों मत मान्य हैं।

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा

जो शब्द किसी **एक ही** विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध कराए, वह व्यक्तिवाचक संज्ञा है।

उदाहरण

राम | गंगा | हिमालय | भारत | रामायण | सोमवार

वाक्य में

गंगा हिमालय से निकलती है।

अकबर एक प्रसिद्ध शासक था।

ध्यान रहे कि *नदी* जातिवाचक है, पर *गंगा* व्यक्तिवाचक — क्योंकि नदियाँ अनेक हैं, गंगा एक ही है।

2. जातिवाचक संज्ञा

जो शब्द किसी **पूरी जाति** के सभी प्राणियों या वस्तुओं का बोध कराए, वह जातिवाचक संज्ञा है।

उदाहरण

मनुष्य | नदी | पर्वत | पुस्तक | नगर | गाय

वाक्य में

गाय दूध देती है। — यहाँ किसी एक गाय की नहीं, सारी गायों की बात है।

3. भाववाचक संज्ञा

जिन शब्दों से किसी के **गुण, दशा, भाव या व्यापार** का बोध हो, वे भाववाचक संज्ञा कहलाते हैं। ये अमूर्त होते हैं — इन्हें देखा या छुआ नहीं जा सकता।

उदाहरण

मिठास | बचपन | क्रोध | ईमानदारी | थकावट | मित्रता

भाववाचक संज्ञाएँ प्रायः अन्य शब्दों से बनती हैं। यही इस भेद की सबसे उपयोगी बात है:

मूल शब्द	शब्द-भेद	भाववाचक संज्ञा
मित्र	जातिवाचक संज्ञा	मित्रता
बच्चा	जातिवाचक संज्ञा	बचपन
मीठा	विशेषण	मिठास
सुंदर	विशेषण	सुंदरता
चढ़ना	क्रिया	चढ़ाई
लिखना	क्रिया	लिखावट
अपना	सर्वनाम	अपनापन

4. द्रव्यवाचक संज्ञा

जो शब्द किसी **पदार्थ, धातु या सामग्री** का बोध कराए — जिसे गिना नहीं, केवल नापा या तौला जा सकता है — वह द्रव्यवाचक संज्ञा है।

उदाहरण

सोना · चाँदी · पानी · दूध · तेल · गेहूँ

ध्यान दें

पहचान का सरल तरीका: द्रव्यवाचक संज्ञा के साथ *एक, दो, तीन* नहीं लगता। हम *दो दूध* नहीं कहते, *दो लीटर दूध* कहते हैं।

5. समूहवाचक संज्ञा

जो शब्द व्यक्तियों या वस्तुओं के **समूह** का बोध कराए, वह समूहवाचक संज्ञा है।

उदाहरण

सेना · सभा · कक्षा · भीड़ · गुच्छा · परिवार

वाक्य में

सेना सीमा पर तैनात है। — एक सैनिक नहीं, पूरा समूह।

संज्ञा का वाक्य में प्रयोग

वाक्य में संज्ञा अकेली नहीं रहती। उसका रूप लिंग, वचन और कारक के अनुसार बदलता है:

परिवर्तन	मूल रूप	बदला हुआ रूप
वचन	लड़का	लड़के
लिंग	लड़का	लड़की
कारक	लड़का	लड़के ने

इसी कारण संज्ञा को **विकारी शब्द** कहा जाता है — अर्थात् ऐसा शब्द जिसमें विकार (परिवर्तन) होता है।

एक ही शब्द, अलग-अलग भेद

कई बार एक ही शब्द प्रसंग के अनुसार अलग-अलग भेद का हो जाता है। यही वह जगह है जहाँ सबसे अधिक भ्रम होता है।

> तुलना कीजिए
>
> **पुरी** जगन्नाथ के लिए प्रसिद्ध है। — *व्यक्तिवाचक* (एक विशेष नगर)
>
> हिमालय भारत की **शान** है। — *भाववाचक* (गौरव का भाव)
>
> हमारे नगर में तीन **पुरी** हैं। — *जातिवाचक* (नगर के अर्थ में)

> ध्यान दें
>
> भेद शब्द से नहीं, **प्रयोग** से तय होता है। कोई शब्द देखकर तुरंत भेद बताने के बजाय यह पूछें कि इस वाक्य में वह किसका बोध करा रहा है — एक का, पूरी जाति का, या किसी भाव का।

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

"हिमालय भारत के उत्तर में है।" — इस वाक्य में हिमालय कौन-सी संज्ञा है?

उत्तर व्यक्तिवाचक संज्ञा — क्योंकि हिमालय एक ही विशेष पर्वत का नाम है, सभी पर्वतों का नहीं।

"मीठा" से भाववाचक संज्ञा बनाइए।

उत्तर मिठास। (विशेषण से भाववाचक संज्ञा बनी।)

"सेना", "सोना" और "सुंदरता" — इनके भेद क्रमशः बताइए।

उत्तर सेना — समूहवाचक, सोना — द्रव्यवाचक, सुंदरता — भाववाचक।

क्या "नदी" व्यक्तिवाचक संज्ञा है? कारण सहित बताइए।

उत्तर नहीं, यह जातिवाचक है, क्योंकि यह किसी एक नदी का नहीं बल्कि सभी नदियों का बोध कराती है। "गंगा" व्यक्तिवाचक होगी।

संज्ञा को विकारी शब्द क्यों कहा जाता है?

उत्तर क्योंकि लिंग, वचन और कारक के अनुसार उसका रूप बदल जाता है — जैसे लड़का से लड़के, लड़की, लड़के ने।

सर्वनाम *(Pronoun)*

संज्ञा के स्थान पर आने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। हिंदी में ग्यारह सर्वनाम और छह भेद हैं।

आधार | आरंभिक अवधारणा · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं।

यदि सर्वनाम न होते, तो हमें हर बार पूरा नाम दोहराना पड़ता:

तुलना कीजिए

राम बाज़ार गया। राम ने राम की पुस्तक खरीदी। राम घर लौट आया।

*राम बाज़ार गया। **उसने अपनी** पुस्तक खरीदी। **वह** घर लौट आया।*

दूसरा वाक्य-समूह सहज लगता है, क्योंकि वहाँ *राम* के स्थान पर सर्वनाम आ गए। *सर्वनाम* शब्द का अर्थ ही है — **सर्व** (सब) का **नाम**, अर्थात् जो सबके नाम की जगह ले सके।

हिंदी के मूल सर्वनाम

हिंदी में मूल सर्वनाम **ग्यारह** हैं:

उदाहरण

मैं · तू · आप · यह · वह · जो · सो · कौन · क्या · कोई · कुछ

इन्हीं ग्यारह से रूप बदलकर *मुझे, तुझे, उसने, इनका, किसी* आदि सारे रूप बनते हैं।

सर्वनाम के भेद

प्रयोग के आधार पर सर्वनाम के **छह** भेद हैं।

1. पुरुषवाचक सर्वनाम

जो बोलने वाले, सुनने वाले या किसी अन्य के लिए प्रयुक्त हों। इसके तीन उपभेद हैं:

पुरुष	किसके लिए	सर्वनाम
उत्तम पुरुष	बोलने वाला स्वयं	मैं, हम
मध्यम पुरुष	जिससे बात हो रही है	तू, तुम, आप
अन्य पुरुष	जिसके विषय में बात हो	वह, वे, यह, ये

वाक्य में

मैं विद्यालय जाता हूँ। — उत्तम पुरुष

तुम क्या पढ़ रहे हो? — मध्यम पुरुष

वह कल आएगा। — अन्य पुरुष

2. निश्चयवाचक सर्वनाम

जो किसी **निश्चित** व्यक्ति या वस्तु की ओर संकेत करे। इसे *संकेतवाचक* भी कहते हैं।

उदाहरण

यह वह ये वे

वाक्य में

यह मेरी पुस्तक है। — पास की वस्तु

वह उनका घर है। — दूर की वस्तु

3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम

जिससे किसी **निश्चित** व्यक्ति या वस्तु का बोध न हो।

उदाहरण

कोई | कुछ

वाक्य में

द्वार पर **कोई** खड़ा है। — कौन, यह ज्ञात नहीं।

थाली में **कुछ** रखा है।

ध्यान दें

सामान्यतः **कोई** प्राणियों के लिए और **कुछ** निर्जीव वस्तुओं के लिए प्रयुक्त होता है।

4. संबंधवाचक सर्वनाम

जो वाक्य के दो भागों को जोड़े और किसी अन्य सर्वनाम से संबंध बताए। ये प्रायः **जोड़े** में आते हैं।

उदाहरण

जो — सो | जो — वह | जैसा — वैसा | जितना — उतना

वाक्य में

जो परिश्रम करेगा, **वह** सफल होगा।

जैसा करोगे, **वैसा** भरोगे।

5. प्रश्नवाचक सर्वनाम

जिनका प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए हो।

उदाहरण

कौन | क्या | किसने | किसका

वाक्य में

कौन आया है?

तुमने **क्या** कहा?

ध्यान दें

कौन प्राणियों के लिए और **क्या** वस्तुओं के लिए आता है। *कौन आया?* ठीक है, *क्या आया?* सामान्यतः नहीं।

6. निजवाचक सर्वनाम

जो कर्ता के **स्वयं** होने का बोध कराए। इसका मुख्य रूप **आप** है।

वाक्य में

मैं **आप** ही चला जाऊँगा।

वह **अपना** काम स्वयं करता है।

“आप” के दो अलग प्रयोग

आप शब्द दो भिन्न भेदों में आता है, और यही सबसे अधिक भ्रम पैदा करता है।

वाक्य	भेद	क्यों
आप कहाँ जा रहे हैं?	पुरुषवाचक (मध्यम)	सुनने वाले के लिए, आदर सूचक
मैं आप ही कर लूँगा।	निजवाचक	कर्ता के स्वयं होने का बोध

ध्यान दें

पहचान का सरल सूत्र: यदि *आप* के स्थान पर **स्वयं** रखने पर अर्थ न बदले, तो वह **निजवाचक** है। *मैं स्वयं ही कर लूँगा* — अर्थ वही रहा, अतः निजवाचक।

सर्वनाम के रूप-परिवर्तन

संज्ञा की भाँति सर्वनाम भी **विकारी** है — कारक के अनुसार इसका रूप बदलता है।

सर्वनाम	कर्ता	कर्म / संप्रदान	संबंध
मैं	मैंने	मुझे, मुझको	मेरा
तू	तूने	तुझे, तुझको	तेरा
वह	उसने	उसे, उसको	उसका
यह	इसने	इसे, इसको	इसका

ध्यान दें

सर्वनाम के साथ **विशेषण नहीं लगता**। हम *सुंदर वह* नहीं कहते। यही संज्ञा और सर्वनाम के बीच एक व्यावहारिक भेद है।

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

"जो परिश्रम करेगा, वह सफल होगा।" — इसमें कौन-सा सर्वनाम भेद है?

उत्तर संबंधवाचक सर्वनाम — "जो" और "वह" जोड़े में आकर वाक्य के दो भागों को जोड़ रहे हैं।

"मैं आप ही चला जाऊँगा।" — यहाँ "आप" कौन-सा सर्वनाम है?

उत्तर निजवाचक सर्वनाम, क्योंकि इसके स्थान पर "स्वयं" रखने पर अर्थ नहीं बदलता।

हिंदी में मूल सर्वनाम कितने हैं?

उत्तर ग्यारह — मैं, तू, आप, यह, वह, जो, सो, कौन, क्या, कोई, कुछ।

"कोई" और "कुछ" के प्रयोग में क्या अंतर है?

उत्तर "कोई" सामान्यतः प्राणियों के लिए और "कुछ" निर्जीव वस्तुओं के लिए प्रयुक्त होता है। दोनों अनिश्चयवाचक हैं।

सर्वनाम और संज्ञा में एक व्यावहारिक अंतर बताइए।

उत्तर संज्ञा के साथ विशेषण लग सकता है (सुंदर लड़की), सर्वनाम के साथ सामान्यतः नहीं (सुंदर वह — अशुद्ध)।

विशेषण *(Adjective)*

संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं। इसके चार मुख्य भेद हैं।

आधार आरंभिक अवधारणा · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताए, उसे विशेषण कहते हैं।

लड़का कहने से केवल इतना पता चलता है कि कोई लड़का है। पर *होशियार लड़का* कहने से उसके विषय में एक बात और जुड़ जाती है। यही जुड़ने वाला शब्द **विशेषण** है।

जिस संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताई जाती है, उसे **विशेष्य** कहते हैं।

पहचानिए

मीठा आम — मीठा *विशेषण*, आम *विशेष्य*

चार पुस्तकें — चार *विशेषण*, पुस्तकें *विशेष्य*

विशेषण के भेद

1. गुणवाचक विशेषण

जो संज्ञा के **गुण, दोष, रंग, रूप, दशा, स्वाद** आदि का बोध कराए। यह सबसे बड़ा वर्ग है।

प्रकार	उदाहरण
गुण/दोष	अच्छा, बुरा, वीर, आलसी
रंग	लाल, हरा, श्वेत, काला
आकार	गोल, लंबा, चौड़ा, पतला
दशा	गीला, सूखा, स्वस्थ, रुग्ण
स्वाद	मीठा, खट्टा, कड़वा, नमकीन
काल	नया, पुराना, प्राचीन, आधुनिक
स्थान	भारतीय, पहाड़ी, ग्रामीण

2. संख्यावाचक विशेषण

जो संज्ञा की **संख्या** का बोध कराए। इसके दो उपभेद हैं।

निश्चित संख्यावाचक — जहाँ संख्या निश्चित हो:

उदाहरण

एक | दस | पहला | दूसरा | दुगुना | चौगुना

अनिश्चित संख्यावाचक — जहाँ संख्या निश्चित न हो:

उदाहरण

कुछ | कई | अनेक | सब | थोड़े

3. परिमाणवाचक विशेषण

जो संज्ञा की **मात्रा या नाप-तौल** का बोध कराए। इसके भी दो उपभेद हैं।

निश्चित परिमाणवाचक: दो लीटर दूध, पाँच किलो चावल, एक मीटर कपड़ा

अनिश्चित परिमाणवाचक: थोड़ा पानी, बहुत दूध, कुछ चीनी

ध्यान दें

संख्यावाचक और परिमाणवाचक में अंतर पहचानना आवश्यक है। जो **गिना** जा सके, वह संख्यावाचक — *चार सेब*। जो केवल **नापा या तौला** जा सके, वह परिमाणवाचक — *थोड़ा दूध*। इसीलिए हम *चार दूध* नहीं कहते।

4. सार्वनामिक विशेषण

जब कोई **सर्वनाम** संज्ञा से पहले आकर उसकी विशेषता बताने लगे, तो वह सार्वनामिक विशेषण बन जाता है।

वाक्य	शब्द-भेद	कारण
वह जा रहा है।	सर्वनाम	संज्ञा के स्थान पर आया
वह लड़का जा रहा है।	सार्वनामिक विशेषण	संज्ञा की विशेषता बता रहा है

और उदाहरण

यह पुस्तक मेरी है।

कौन व्यक्ति आया था?

प्रविशेषण

जो शब्द **विशेषण की** विशेषता बताए, उसे प्रविशेषण कहते हैं।

वाक्य में

आम **बहुत** मीठा है। — *मीठा* विशेषण है, *बहुत* उसकी विशेषता बता रहा है।

> वह **अत्यंत** सुंदर चित्र है।

विशेषण की तुलना — अवस्थाएँ

विशेषण तीन अवस्थाओं में आता है।

अवस्था	अर्थ	उदाहरण
मूलावस्था	सामान्य रूप	सुंदर, अधिक
उत्तरावस्था	दो में से एक की तुलना	अधिक सुंदर, सुंदरतर
उत्तमावस्था	सबमें श्रेष्ठ	सबसे सुंदर, सुंदरतम

> वाक्य में
>
> सीता **सुंदर** है। — मूलावस्था
>
> सीता गीता से **अधिक सुंदर** है। — उत्तरावस्था
>
> सीता कक्षा में **सबसे सुंदर** है। — उत्तमावस्था

विशेषण की रचना

अधिकांश विशेषण दूसरे शब्दों से बनते हैं। यह जानना उपयोगी है कि कौन-सा प्रत्यय विशेषण बनाता है:

मूल शब्द	शब्द-भेद	विशेषण
धन	संज्ञा	धनी
भारत	संज्ञा	भारतीय

मूल शब्द	शब्द-भेद	विशेषण
दया	संज्ञा	दयालु
बुद्धि	संज्ञा	बुद्धिमान
चलना	क्रिया	चालू
बिकना	क्रिया	बिकाऊ
भीतर	अव्यय	भीतरी

ध्यान दें

एक ही शब्द प्रसंग के अनुसार संज्ञा या विशेषण हो सकता है। *उसने मुझे बहुत **अच्छा** बताया* में *अच्छा* विशेषण है, पर *सदा **अच्छे** का साथ दो* में वह संज्ञा की तरह प्रयुक्त हुआ है। भेद शब्द से नहीं, प्रयोग से तय होता है।

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

"वह लड़का बहुत होशियार है।" — इसमें विशेषण और प्रविशेषण छाँटिए।

उत्तर विशेषण — "होशियार" (और "वह" सार्वनामिक विशेषण); प्रविशेषण — "बहुत", जो विशेषण "होशियार" की विशेषता बता रहा है।

"चार सेब" और "थोड़ा दूध" — दोनों के विशेषण-भेद बताइए।

उत्तर "चार" संख्यावाचक (निश्चित), क्योंकि सेब गिने जा सकते हैं; "थोड़ा" परिमाणवाचक (अनिश्चित), क्योंकि दूध नापा जाता है, गिना नहीं जाता।

"वह जा रहा है" और "वह लड़का जा रहा है" — दोनों में "वह" का भेद बताइए।

उत्तर पहले में सर्वनाम, क्योंकि वह संज्ञा के स्थान पर आया है; दूसरे में सार्वनामिक विशेषण, क्योंकि वह संज्ञा "लड़का" की विशेषता बता रहा है।

विशेष्य किसे कहते हैं?

उत्तर जिस संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताई जाती है, उसे विशेष्य कहते हैं। "मीठा आम" में "आम" विशेष्य है।

"बुद्धि" से विशेषण बनाइए।

उत्तर बुद्धिमान।

क्रिया *(Verb)*

जिस शब्द से किसी कार्य के होने या करने का बोध हो, वह क्रिया है। कर्म के आधार पर इसके दो मुख्य भेद हैं।

मध्यम · विस्तृत विवेचन · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

जिस शब्द से किसी कार्य के करने या होने का बोध हो, उसे क्रिया कहते हैं।

वाक्य में जो शब्द बताता है कि *क्या हो रहा है* — वही क्रिया है। हिंदी वाक्य प्रायः क्रिया पर ही समाप्त होता है, और क्रिया के बिना वाक्य पूरा नहीं होता।

वाक्य में

राम पत्र **लिखता है**।

फूल **खिला**।

बच्चे मैदान में **खेल रहे हैं**।

धातु

क्रिया का मूल रूप **धातु** कहलाता है। हिंदी में धातु के साथ *ना* जोड़कर क्रिया का सामान्य रूप बनता है।

धातु	क्रिया रूप
पढ़	पढ़ना

धातु	क्रिया रूप
लिख	लिखना
खा	खाना
सो	सोना

धातु से ही क्रिया के सारे रूप बनते हैं — *पढ़ता, पढ़ा, पढ़ेगा, पढ़कर, पढ़वाना*। इसलिए धातु पहचानना क्रिया समझने की कुंजी है।

कर्म के आधार पर भेद

यह क्रिया का सबसे महत्वपूर्ण वर्गीकरण है।

1. सकर्मक क्रिया

जिस क्रिया का **कर्म** होता है — अर्थात् क्रिया का फल किसी और पर पड़ता है — वह सकर्मक है।

> वाक्य में
>
> राम **पुस्तक** पढ़ता है। — क्या पढ़ता है? *पुस्तक*। अतः कर्म उपस्थित है।
>
> माँ **भोजन** बनाती है।

2. अकर्मक क्रिया

जिस क्रिया का कोई कर्म नहीं होता — क्रिया का फल कर्ता पर ही पड़ता है — वह अकर्मक है।

> वाक्य में
>
> राम **हँसता** है। — क्या हँसता है? इस प्रश्न का उत्तर नहीं मिलता।

बालक **सोता** है।

ध्यान दें

पहचान का सूत्र: क्रिया से *क्या* या *किसको* पूछिए। यदि उत्तर मिल जाए, तो क्रिया **सकर्मक** है; न मिले तो **अकर्मक**।

एक ही क्रिया, दोनों रूपों में

बहुत-सी क्रियाएँ प्रसंग के अनुसार सकर्मक भी होती हैं और अकर्मक भी।

वाक्य	भेद
वह बोलता है।	अकर्मक
वह सच बोलता है।	सकर्मक (कर्म — *सच*)
सिर खुजलाता है।	अकर्मक
वह सिर खुजलाता है।	सकर्मक

रचना के आधार पर भेद

सामान्य क्रिया

एक ही धातु से बनी सरल क्रिया — *पढ़ना, जाना, खाना*।

संयुक्त क्रिया

दो या अधिक क्रियाएँ मिलकर एक क्रिया का काम करें।

उदाहरण

पढ़ लिया | खा चुका | जाने लगा | रो पड़ा | कर डाला

प्रेरणार्थक क्रिया

जहाँ कर्ता स्वयं काम न करके **किसी और से कराता** है। इसके दो रूप होते हैं।

मूल क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
पढ़ना	पढ़ाना	पढ़वाना
लिखना	लिखाना	लिखवाना
करना	कराना	करवाना
सुनना	सुनाना	सुनवाना

अंतर समझिए

बालक **पढ़ता** है। — स्वयं करता है।

शिक्षक बालक को **पढ़ाता** है। — स्वयं प्रेरित करता है।

पिता शिक्षक से बालक को **पढ़वाता** है। — किसी और के द्वारा कराता है।

नामधातु क्रिया

जो क्रिया संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण से बनी हो, धातु से नहीं।

मूल शब्द	नामधातु क्रिया
बात	बतियाना
हाथ	हथियाना

मूल शब्द	नामधातु क्रिया
लाज	लजाना
अपना	अपनाना
गरम	गरमाना

पूर्वकालिक क्रिया

जब एक क्रिया दूसरी से **पहले** समाप्त हो जाए। धातु के साथ *कर* या *करके* जुड़ता है।

> वाक्य में
>
> वह खाना **खाकर** सो गया। — पहले खाना, फिर सोना।
>
> मैं पत्र **लिखकर** आया।

क्रिया के अन्य रूप

समापिका और असमापिका

जो क्रिया वाक्य को **पूरा** कर दे, वह समापिका; जो वाक्य पूरा न करे, वह असमापिका।

> वाक्य में
>
> वह पढ़कर **सो गया**। — *पढ़कर* असमापिका, *सो गया* समापिका।

> ध्यान दें
>
> हिंदी में क्रिया का रूप कर्ता के **लिंग और वचन** के अनुसार बदलता है — *लड़का जाता है, लड़की जाती है, लड़के जाते हैं*। परंतु जब कर्ता के साथ *ने* लगता है, तो क्रिया कर्ता के नहीं, **कर्म** के अनुसार चलती है — *राम ने रोटी खाई* (रोटी स्त्रीलिंग, इसलिए *खाई*)। इसी को **वाच्य** कहते हैं।

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

"राम पुस्तक पढ़ता है।" — क्रिया सकर्मक है या अकर्मक? कारण सहित बताइए।

उत्तर सकर्मक, क्योंकि "क्या पढ़ता है?" पूछने पर उत्तर मिलता है — पुस्तक। अतः कर्म उपस्थित है।

"करना" के दोनों प्रेरणार्थक रूप लिखिए।

उत्तर प्रथम प्रेरणार्थक — कराना; द्वितीय प्रेरणार्थक — करवाना।

"वह खाना खाकर सो गया।" — इसमें पूर्वकालिक क्रिया कौन-सी है?

उत्तर "खाकर"। यह "सो गया" से पहले पूरी हो चुकी है, इसलिए पूर्वकालिक क्रिया है।

नामधातु क्रिया किसे कहते हैं? दो उदाहरण दीजिए।

उत्तर जो क्रिया संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण से बने, धातु से नहीं। जैसे — बात से बतियाना, अपना से अपनाना।

"राम ने रोटी खाई।" — यहाँ क्रिया "खाई" (स्त्रीलिंग) क्यों है, जबकि कर्ता "राम" पुल्लिंग है?

उत्तर क्योंकि कर्ता के साथ "ने" लगा है। ऐसी स्थिति में क्रिया कर्ता के नहीं, कर्म (रोटी — स्त्रीलिंग) के अनुसार चलती है।

काल *(Tense)*

क्रिया के होने के समय को काल कहते हैं। इसके तीन भेद हैं — भूत, वर्तमान और भविष्यत्।

मध्यम विस्तृत विवेचन · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

क्रिया के जिस रूप से कार्य के होने के समय का बोध हो, उसे काल कहते हैं।

राम आया, राम आता है, राम आएगा — तीनों वाक्यों में क्रिया एक ही है, पर उसका रूप बदल गया, और उसी के साथ समय भी। क्रिया के इसी समय-बोध को **काल** कहते हैं।

काल के तीन मुख्य भेद हैं, और प्रत्येक के अपने उपभेद।

वर्तमान काल

जो कार्य **अभी** हो रहा हो। इसके पाँच उपभेद हैं।

उपभेद	पहचान	उदाहरण
सामान्य वर्तमान	कार्य सामान्य रूप से होता है	राम पढ़ता है।
अपूर्ण वर्तमान	कार्य जारी है	राम पढ़ रहा है।
पूर्ण वर्तमान	कार्य अभी-अभी पूरा हुआ	राम ने पढ़ा है।
संदिग्ध वर्तमान	होने में संदेह है	राम पढ़ता होगा।
संभाव्य वर्तमान	होने की संभावना है	शायद राम पढ़ता हो।

ध्यान दें

सामान्य और अपूर्ण वर्तमान में अंतर: *राम पढ़ता है* का अर्थ है कि वह नियमित रूप से पढ़ता है — यह उसकी आदत है। *राम पढ़ रहा है* का अर्थ है कि इसी क्षण पढ़ाई चल रही है।

भूतकाल

जो कार्य **बीत चुका** हो। इसके छह उपभेद हैं — यह सबसे विस्तृत काल है।

उपभेद	पहचान	उदाहरण
सामान्य भूत	कार्य बीत गया, समय स्पष्ट नहीं	राम आया।
आसन्न भूत	अभी-अभी बीता	राम आया है।
पूर्ण भूत	बहुत पहले बीत चुका	राम आया था।
अपूर्ण भूत	बीते समय में जारी था	राम आ रहा था।
संदिग्ध भूत	बीतने में संदेह	राम आया होगा।
हेतुहेतुमद् भूत	एक कार्य दूसरे पर निर्भर	यदि राम आता तो मैं जाता।

अंतर देखिए

राम **आया**। — कब, यह स्पष्ट नहीं।

राम **आया है**। — अभी-अभी आया।

राम **आया था**। — बहुत पहले आया।

ध्यान दें

हेतुहेतुमद् भूत वह काल है जिसमें एक कार्य का होना दूसरे कार्य पर निर्भर था, पर दोनों में से कोई भी हुआ नहीं। *यदि वर्षा होती तो फसल अच्छी होती* — न वर्षा हुई, न फसल अच्छी हुई।

भविष्यत् काल

जो कार्य **आगे** होगा। इसके तीन उपभेद हैं।

उपभेद	पहचान	उदाहरण
सामान्य भविष्यत्	आगे होगा	राम आएगा।
संभाव्य भविष्यत्	होने की संभावना	शायद राम आए।
हेतुहेतुमद् भविष्यत्	एक पर दूसरा निर्भर	यदि राम आएगा तो मैं जाऊँगा।

एक ही क्रिया, तीनों कालों में

लिखना धातु के रूप तीनों कालों में इस प्रकार बदलते हैं:

काल	पुल्लिंग एकवचन	स्त्रीलिंग एकवचन	पुल्लिंग बहुवचन
सामान्य वर्तमान	लिखता है	लिखती है	लिखते हैं
अपूर्ण वर्तमान	लिख रहा है	लिख रही है	लिख रहे हैं
सामान्य भूत	लिखा	लिखी	लिखे
पूर्ण भूत	लिखा था	लिखी थी	लिखे थे
सामान्य भविष्यत्	लिखेगा	लिखेगी	लिखेंगे

ध्यान दें

काल पहचानने में सहायक **सहायक क्रियाएँ** देखिए:

है, हैं, रहा है → वर्तमान · *था, थे, थी, रहा था* → भूत · *गा, गे, गी* → भविष्यत्

काल पहचानने का क्रम

किसी वाक्य का काल बताने में यह क्रम उपयोगी है:

1. पहले **मुख्य काल** तय कीजिए — सहायक क्रिया से (है / था / गा)।
2. फिर देखिए कार्य **पूरा** हुआ या **जारी** था।
3. अंत में देखिए कि कहीं **संदेह** या **शर्त** तो नहीं है।

> **अभ्यास से**
>
> *राम पढ़ रहा था।* → *था* से भूतकाल; *रहा* से कार्य जारी → **अपूर्ण भूत**
>
> *राम ने पढ़ा होगा।* → भूत का कार्य; *होगा* से संदेह → **संदिग्ध भूत**

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

“राम आया था।” — कौन-सा काल है?

उत्तर पूर्ण भूत, क्योंकि कार्य बहुत पहले पूरा हो चुका है। “था” इसका सूचक है।

“राम पढ़ता है” और “राम पढ़ रहा है” में क्या अंतर है?

उत्तर पहला सामान्य वर्तमान है — नियमित आदत बताता है। दूसरा अपूर्ण वर्तमान है — इसी क्षण कार्य जारी होने का बोध कराता है।

“यदि वर्षा होती तो फसल अच्छी होती।” — इसका काल बताइए।

उत्तर हेतुहेतुमद् भूत, क्योंकि एक कार्य दूसरे पर निर्भर था और दोनों में से कोई हुआ नहीं।

भूतकाल के कितने उपभेद हैं? नाम गिनाइए।

उत्तर छह — सामान्य भूत, आसन्न भूत, पूर्ण भूत, अपूर्ण भूत, संदिग्ध भूत और हेतुहेतुमद् भूत।

“राम आया होगा।” — काल बताइए।

उत्तर संदिग्ध भूत — कार्य भूतकाल का है, पर उसके होने में संदेह है, जो “होगा” से सूचित होता है।

कारक *(Case)*

संज्ञा या सर्वनाम का क्रिया से जो संबंध होता है, उसे कारक कहते हैं। हिंदी में आठ कारक हैं।

मध्यम · विस्तृत विवेचन · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका क्रिया के साथ संबंध प्रकट हो, उसे कारक कहते हैं।

वाक्य में संज्ञा अकेली नहीं होती — उसका क्रिया से कोई न कोई संबंध होता है। कोई काम **करता** है, किसी पर काम **होता** है, किसी **साधन** से होता है। इसी संबंध को **कारक** कहते हैं।

कारक प्रकट करने के लिए संज्ञा के साथ जो चिह्न लगते हैं, उन्हें **विभक्ति** या **परसर्ग** कहते हैं — *ने, को, से, के लिए, में, पर* आदि।

आठ कारक — एक दृष्टि में

कारक	विभक्ति	प्रश्न	उदाहरण
कर्ता	ने (या शून्य)	कौन?	राम **ने** पत्र लिखा।
कर्म	को (या शून्य)	किसको? क्या?	राम **ने** मोहन **को** बुलाया।
करण	से, के द्वारा	किससे?	वह कलम **से** लिखता है।
संप्रदान	को, के लिए	किसके लिए?	माँ बच्चे **के लिए** दूध लाई।
अपादान	से (अलग होना)	किससे अलग?	पेड़ **से** पत्ता गिरा।
संबंध	का, के, की	किसका?	यह राम **का** घर है।

कारक	विभक्ति	प्रश्न	उदाहरण
अधिकरण	में, पर	कहाँ?	पुस्तक मेज़ **पर** है।
संबोधन	हे, अरे, ओ	—	**हे** राम! यहाँ आओ।

प्रत्येक कारक

1. कर्ता कारक

जो **काम करता** है। विभक्ति *ने* है, पर हिंदी में यह सदा नहीं लगती।

> वाक्य में
>
> **राम** पत्र लिखता है। — *ने* नहीं लगा।
>
> **राम ने** पत्र लिखा। — *ने* लगा।

> ध्यान दें
>
> *ने* केवल तभी लगता है जब क्रिया **सकर्मक** हो और काल **भूतकाल** हो। इसीलिए *राम ने जाया* अशुद्ध है — *जाना* अकर्मक क्रिया है, वहाँ *राम गया* ही ठीक है।

2. कर्म कारक

जिस पर क्रिया का **फल** पड़े। विभक्ति *को* है, जो प्रायः लुप्त रहती है।

> वाक्य में
>
> राम ने **मोहन को** बुलाया। — *को* उपस्थित।
>
> राम ने **पत्र** लिखा। — *को* लुप्त, पर पत्र ही कर्म है।

3. करण कारक

जिस **साधन** से काम हो। विभक्ति *से* या *के द्वारा*।

> वाक्य में
>
> वह **कलम से** लिखता है।
>
> पत्र **डाक के द्वारा** भेजा गया।

4. संप्रदान कारक

जिसके **लिए** काम किया जाए, या जिसे कुछ दिया जाए। विभक्ति *को* या *के लिए*।

> वाक्य में
>
> माँ **बच्चे के लिए** दूध लाई।
>
> गुरु ने **शिष्य को** ज्ञान दिया।

5. अपादान कारक

जिससे कोई वस्तु **अलग** हो। विभक्ति *से* है — करण की तरह।

> वाक्य में
>
> **पेड़ से** पत्ता गिरा।
>
> **गंगा हिमालय से** निकलती है।

ध्यान दें

करण और अपादान — दोनों में "से" लगता है, और यही सबसे बड़ा भ्रम है। भेद यह है:

करण में *से* का अर्थ **साधन** है — *चाकू से काटा* (चाकू औज़ार है)।

अपादान में *से* का अर्थ **अलगाव** है — *पेड़ से गिरा* (पत्ता पेड़ से अलग हुआ)।

परखने का तरीका: यदि *के द्वारा* रखने पर अर्थ बना रहे, तो **करण**; यदि *से अलग होकर* का भाव हो, तो **अपादान**।

6. संबंध कारक

जो एक संज्ञा का दूसरी से **संबंध** बताए। विभक्ति *का, के, की*।

वाक्य में

यह **राम का** घर है।

सीता की पुस्तक कहाँ है?

7. अधिकरण कारक

जो क्रिया के **आधार या स्थान** का बोध कराए। विभक्ति *में, पर*।

वाक्य में

पुस्तक **मेज़ पर** है।

कमरे में कोई नहीं है।

8. संबोधन कारक

जिससे किसी को **पुकारा** जाए। चिह्न *हे, अरे, ओ* और विस्मयादिबोधक (!)।

वाक्य में

> **हे राम!** यहाँ आओ।
>
> **अरे भाई!** सुनो।

कारक पहचानने की विधि

किसी शब्द का कारक पहचानने के लिए क्रिया से प्रश्न पूछिए:

प्रश्न	कारक
कौन? किसने?	कर्ता
क्या? किसको?	कर्म
किससे? किसके द्वारा?	करण
किसके लिए? किसको (देना)?	संप्रदान
किससे (अलग)? कहाँ से?	अपादान
किसका? किसकी?	संबंध
कहाँ? किसमें? किस पर?	अधिकरण

ध्यान दें

संबंध कारक अन्य कारकों से भिन्न है। शेष सात कारकों का संबंध **क्रिया** से होता है, पर संबंध कारक का संबंध **दूसरी संज्ञा** से होता है। *राम का घर* में *का* क्रिया से नहीं, *घर* से जोड़ रहा है।

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

"पेड़ से पत्ता गिरा।" और "वह चाकू से काटता है।" — दोनों में "से" है। कारक बताइए।

उत्तर पहले में अपादान कारक, क्योंकि पत्ता पेड़ से अलग हो रहा है। दूसरे में करण कारक, क्योंकि चाकू काटने का साधन है।

"राम ने जाया।" — यह अशुद्ध क्यों है?

उत्तर क्योंकि "ने" केवल सकर्मक क्रिया के साथ भूतकाल में लगता है। "जाना" अकर्मक क्रिया है, अतः शुद्ध रूप होगा — "राम गया।"

"यह सीता की पुस्तक है।" — "की" कौन-सा कारक है?

उत्तर संबंध कारक, क्योंकि यह सीता का पुस्तक से संबंध बता रहा है — क्रिया से नहीं।

हिंदी में कारक कितने हैं? नाम लिखिए।

उत्तर आठ — कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, संबंध, अधिकरण और संबोधन।

संबंध कारक शेष कारकों से किस बात में भिन्न है?

उत्तर शेष कारकों का संबंध क्रिया से होता है, जबकि संबंध कारक का संबंध दूसरी संज्ञा से होता है।

समास *(Compound)*

दो या अधिक शब्दों के मेल से बने नए शब्द को समास कहते हैं। इसके छह भेद हैं।

मध्यम · विस्तृत विवेचन · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

दो या अधिक शब्दों के परस्पर मेल से बने नए सार्थक शब्द को समास कहते हैं।

राजा का पुत्र कहने के बजाय हम *राजपुत्र* कह देते हैं। बीच का *का* लुप्त हो गया और दो शब्द मिलकर एक हो गए — यही **समास** है। समास भाषा को संक्षिप्त बनाता है।

समस्त पद को तोड़कर मूल शब्दों में लिखना **समास विग्रह** कहलाता है।

समस्त पद	समास विग्रह
राजपुत्र	राजा का पुत्र
नीलकमल	नीला है जो कमल
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार

पूर्वपद और उत्तरपद

समास में पहला शब्द **पूर्वपद** और दूसरा **उत्तरपद** कहलाता है। समास का भेद प्रायः इसी से तय होता है कि इन दोनों में **प्रधान कौन** है।

भेद	प्रधान पद
तत्पुरुष	उत्तरपद
कर्मधारय	उत्तरपद (पूर्वपद विशेषण)
द्विगु	उत्तरपद (पूर्वपद संख्या)
द्वंद्व	दोनों
बहुव्रीहि	कोई नहीं — कोई तीसरा अर्थ
अव्ययीभाव	पूर्वपद

ध्यान दें

यही तालिका समास पहचानने की कुंजी है। भेद रटने के बजाय हर बार यही पूछिए — **प्रधान कौन है?**

1. तत्पुरुष समास

जिसमें **उत्तरपद प्रधान** हो और विग्रह में बीच का कारक-चिह्न लुप्त हो।

समस्त पद	विग्रह	लुप्त कारक
राजपुत्र	राजा का पुत्र	संबंध
ग्रंथकार	ग्रंथ को करने वाला	कर्म
तुलसीकृत	तुलसी द्वारा कृत	करण
देशभक्ति	देश के लिए भक्ति	संप्रदान
पापमुक्त	पाप से मुक्त	अपादान
गृहप्रवेश	गृह में प्रवेश	अधिकरण

2. कर्मधारय समास

जिसमें एक पद **विशेषण** और दूसरा **विशेष्य** हो, या एक उपमान और दूसरा उपमेय।

समस्त पद	विग्रह
नीलकमल	नीला है जो कमल
महात्मा	महान है जो आत्मा
चरणकमल	चरण रूपी कमल
चंद्रमुख	चंद्र के समान मुख

3. द्विगु समास

जिसमें **पूर्वपद संख्यावाचक** हो और पूरा पद किसी **समूह** का बोध कराए।

समस्त पद	विग्रह
त्रिलोक	तीन लोकों का समूह
नवरत्न	नौ रत्नों का समूह
चौराहा	चार राहों का समूह
पंचवटी	पाँच वटों का समूह

ध्यान दें

कर्मधारय और द्विगु में अंतर: दोनों में पूर्वपद विशेषण होता है। पर द्विगु में वह विशेषण **संख्यावाचक** होता है और पूरा पद समूह बताता है। *नीलकमल* कर्मधारय है, *नवरत्न* द्विगु।

4. द्वंद्व समास

जिसमें **दोनों पद प्रधान** हों। विग्रह में *और*, *तथा* या *या* आता है।

समस्त पद	विग्रह
माता-पिता	माता और पिता
राजा-रंक	राजा और रंक
दिन-रात	दिन और रात
सुख-दुख	सुख और दुख

ध्यान दें

द्वंद्व समास पहचानने का सरल तरीका: विग्रह में **"और"** लगाकर देखिए। यदि अर्थ पूरा बन जाए, तो द्वंद्व है। ये प्रायः योजक चिह्न (-) के साथ लिखे जाते हैं।

5. बहुव्रीहि समास

जिसमें **कोई भी पद प्रधान न हो**, और दोनों मिलकर किसी **तीसरे** का बोध कराएँ।

समस्त पद	विग्रह	किसका बोध
दशानन	दस हैं आनन जिसके	रावण
नीलकंठ	नीला है कंठ जिसका	शिव
चक्रधर	चक्र धारण करता है जो	विष्णु
लंबोदर	लंबा है उदर जिसका	गणेश
पीतांबर	पीत है अंबर जिसका	कृष्ण

ध्यान दें

कर्मधारय और बहुव्रीहि में अंतर सबसे अधिक भ्रम पैदा करता है, क्योंकि शब्द एक जैसे दिखते हैं।

नीलकंठ = नीला कंठ → **कर्मधारय** (कंठ की ही बात है)

नीलकंठ = नीला है कंठ जिसका, अर्थात् **शिव** → **बहुव्रीहि** (किसी तीसरे की बात है)

निर्णय शब्द से नहीं, **वाक्य में उसके अर्थ** से होगा। यदि पद किसी तीसरे की ओर संकेत करे, तो बहुव्रीहि।

6. अव्ययीभाव समास

जिसमें **पूर्वपद अव्यय** हो और पूरा पद अव्यय बन जाए — अर्थात् उसका रूप कभी न बदले।

समस्त पद	विग्रह
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार
प्रतिदिन	प्रत्येक दिन
आजीवन	जीवन भर
यथासंभव	जैसा संभव हो
भरपेट	पेट भरकर

पहचान के लिए पूर्वपद देखिए — *यथा, प्रति, आ, भर, हर, बे, ला* आदि प्रायः अव्ययीभाव बनाते हैं।

समास और संधि में अंतर

आधार	संधि	समास
मेल किसका	वर्णों का	शब्दों का

आधार	संधि	समास
क्या बदलता है	वर्ण में विकार	कारक-चिह्न लुप्त
अलग करना	संधि विच्छेद	समास विग्रह
उदाहरण	हिम + आलय = हिमालय	राजा का पुत्र = राजपुत्र

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

“दशानन” में कौन-सा समास है और क्यों?

उत्तर बहुव्रीहि समास। इसका विग्रह है — दस हैं आनन जिसके, अर्थात् रावण। यहाँ कोई पद प्रधान नहीं; दोनों मिलकर किसी तीसरे (रावण) का बोध कराते हैं।

“नवरत्न” और “नीलकमल” — दोनों में पूर्वपद विशेषण है। फिर समास अलग क्यों हैं?

उत्तर “नवरत्न” में पूर्वपद संख्यावाचक है और पद समूह का बोध कराता है, अतः द्विगु। “नीलकमल” में पूर्वपद साधारण विशेषण है, अतः कर्मधारय।

“यथाशक्ति” का समास विग्रह कीजिए और भेद बताइए।

उत्तर शक्ति के अनुसार। पूर्वपद “यथा” अव्यय है, अतः अव्ययीभाव समास।

“माता-पिता” में कौन-सा समास है?

उत्तर द्वंद्व समास — विग्रह “माता और पिता”, जिसमें दोनों पद प्रधान हैं।

संधि और समास में मूल अंतर क्या है?

उत्तर संधि में वर्णों का मेल होता है और वर्ण में विकार आता है (हिम + आलय = हिमालय)। समास में शब्दों का मेल होता है और बीच का कारक-चिह्न लुप्त हो जाता है (राजा का पुत्र = राजपुत्र)।

लिंग *(Gender)*

शब्द के जिस रूप से पुरुष जाति या स्त्री जाति का बोध हो, उसे लिंग कहते हैं। हिंदी में दो लिंग हैं।

आधार   आरंभिक अवधारणा · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

संज्ञा के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि वह पुरुष जाति का है या स्त्री जाति का, उसे लिंग कहते हैं।

लड़का पढ़ता है और *लड़की पढ़ती है* — दोनों वाक्यों में काम एक ही है, पर क्रिया का रूप बदल गया। बदला इसलिए कि कर्ता बदल गया: एक पुरुष जाति का, दूसरा स्त्री जाति का। शब्द के इसी भेद को **लिंग** कहते हैं।

उदाहरण

लड़का — लड़की | घोड़ा — घोड़ी | राजा — रानी | मोर — मोरनी

लिंग का ज्ञान केवल संज्ञा तक सीमित नहीं रहता। वाक्य में विशेषण और क्रिया भी संज्ञा के लिंग के अनुसार अपना रूप बदलते हैं, इसीलिए लिंग की गलती पूरे वाक्य को अशुद्ध कर देती है।

वाक्य में

अच्छा लड़का **आया**।

अच्छी लड़की **आई**।

हिंदी में लिंग के भेद

हिंदी में लिंग के केवल **दो** भेद हैं — पुल्लिंग और स्त्रीलिंग।

1. पुल्लिंग

जिन शब्दों से पुरुष जाति का बोध हो, वे पुल्लिंग कहलाते हैं।

उदाहरण

लड़का | घोड़ा | पिता | सूरज | पहाड़ | लोहा

2. स्त्रीलिंग

जिन शब्दों से स्त्री जाति का बोध हो, वे स्त्रीलिंग कहलाते हैं।

उदाहरण

लड़की | घोड़ी | माता | नदी | रोटी | पुस्तक

ध्यान दें

संस्कृत में तीन लिंग होते हैं — पुल्लिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग। हिंदी ने नपुंसकलिंग को नहीं अपनाया; संस्कृत के नपुंसकलिंग शब्द हिंदी में आकर प्रायः पुल्लिंग हो गए — जैसे *जल*, *फल*, *पुष्प*। अंग्रेज़ी के विपरीत, हिंदी में निर्जीव वस्तुओं का भी लिंग होता है।

लिंग निर्णय कैसे करें

प्राणिवाचक शब्दों में लिंग अर्थ से पहचाना जाता है — *पिता* पुरुष है, *माता* स्त्री। कठिनाई निर्जीव शब्दों में आती है, जहाँ अर्थ कोई सहायता नहीं करता। *दही* पुल्लिंग है और *दाल* स्त्रीलिंग — इसका कोई तार्किक कारण नहीं, यह भाषा की परंपरा है।

फिर भी कुछ संकेत सहायक होते हैं।

प्रायः पुल्लिंग होने वाले शब्द

कोटि	उदाहरण
आ, आव, पा अंत वाले	मोटा, बहाव, बुढ़ापा
पर्वत, महीने, दिन	हिमालय, चैत्र, सोमवार
धातु और रत्न	सोना, लोहा, हीरा
पेड़ और अनाज	आम, नीम, गेहूँ, चावल
द्रव पदार्थ	पानी, तेल, घी

प्रायः स्त्रीलिंग होने वाले शब्द

कोटि	उदाहरण
ई, इया, आवट, आहट अंत वाले	नदी, डिबिया, सजावट, घबराहट
नदियाँ	गंगा, यमुना, कावेरी
तिथियाँ	प्रतिपदा, एकादशी
भाषाएँ और लिपियाँ	हिंदी, संस्कृत, देवनागरी
खाने की बनी वस्तुएँ	रोटी, पूरी, सब्ज़ी

ध्यान दें

ये संकेत नियम नहीं, प्रवृत्तियाँ हैं, और इनके अपवाद हैं — *पानी* द्रव होकर भी पुल्लिंग है पर *चाय* स्त्रीलिंग; *घी* ई में समाप्त होकर भी पुल्लिंग है। संदेह होने पर सबसे भरोसेमंद तरीका यह है कि शब्द के साथ क्रिया लगाकर देखें — *दही जमा है* सुनने में ठीक लगता है, *दही जमी है* नहीं।

लिंग परिवर्तन

पुल्लिंग शब्द से स्त्रीलिंग बनाने के कुछ प्रचलित तरीके हैं।

नियम	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
आ → ई	लड़का	लड़की
आ → इया	बेटा	बिटिया
इन जोड़कर	धोबी	धोबिन
आनी जोड़कर	सेठ	सेठानी
इनी / नी जोड़कर	नाग	नागिन
आइन जोड़कर	ठाकुर	ठकुराइन
नी जोड़कर	मोर	मोरनी

कुछ शब्दों का स्त्रीलिंग रूप बिलकुल अलग होता है, इन्हें याद ही करना पड़ता है:

उदाहरण

पिता — माता | भाई — बहन | राजा — रानी | पुरुष — स्त्री | बैल — गाय | वर — वधू

ध्यान दें

कुछ शब्द उभयलिंगी होते हैं, अर्थात् दोनों लिंगों में एक ही रूप में चलते हैं — *डॉक्टर, प्रोफ़ेसर, मित्र*। ऐसे शब्दों का लिंग वाक्य की क्रिया से पहचाना जाता है: *डॉक्टर आया* और *डॉक्टर आई*।

जहाँ सबसे अधिक भूल होती है

समान दिखने वाले कुछ शब्दों के लिंग अलग होते हैं। परीक्षा में प्रायः यही पूछे जाते हैं।

तुलना कीजिए

दही जमा है। — *पुल्लिंग*

दाल बनी है। — *स्त्रीलिंग*

आत्मा अमर है। — *स्त्रीलिंग*

प्राण निकल गए। — *पुल्लिंग*

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

हिंदी में कितने लिंग होते हैं, और संस्कृत से यह किस प्रकार भिन्न है?

उत्तर हिंदी में दो लिंग हैं — पुल्लिंग और स्त्रीलिंग। संस्कृत में तीन होते हैं, क्योंकि वहाँ नपुंसकलिंग भी है। हिंदी ने नपुंसकलिंग नहीं अपनाया; संस्कृत के नपुंसकलिंग शब्द हिंदी में प्रायः पुल्लिंग हो गए, जैसे जल और फल।

“ठाकुर” और “सेठ” का स्त्रीलिंग रूप लिखिए।

उत्तर ठाकुर — ठकुराइन (आइन जोड़कर), सेठ — सेठानी (आनी जोड़कर)।

“दही” का लिंग क्या है? बिना नियम याद किए इसे कैसे जाँचेंगे?

उत्तर दही पुल्लिंग है। जाँचने का तरीका यह है कि शब्द के साथ क्रिया लगाकर देखें — “दही जमा है” शुद्ध है, “दही जमी है” अशुद्ध।

उभयलिंगी शब्द किसे कहते हैं? एक उदाहरण दीजिए।

उत्तर जो शब्द दोनों लिंगों में एक ही रूप में प्रयुक्त होते हैं, उन्हें उभयलिंगी कहते हैं — जैसे डॉक्टर। इनका लिंग क्रिया से पहचाना जाता है: डॉक्टर आया / डॉक्टर आई।

“अच्छा लड़की आई” — इस वाक्य की अशुद्धि सुधारिए और कारण बताइए।

उत्तर शुद्ध रूप — “अच्छी लड़की आई।” विशेषण भी संज्ञा के लिंग के अनुसार बदलता है, इसलिए स्त्रीलिंग संज्ञा “लड़की” के साथ “अच्छा” नहीं, “अच्छी” आएगा।

वचन *(Number)*

शब्द के जिस रूप से एक या एक से अधिक का बोध हो, उसे वचन कहते हैं। हिंदी में दो वचन हैं।

आधार   आरंभिक अवधारणा · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

संज्ञा के जिस रूप से उसके एक होने या अनेक होने का बोध हो, उसे वचन कहते हैं।

पुस्तक मेज़ पर है और *पुस्तकें मेज़ पर हैं* — अंतर केवल गिनती का है, पर उस गिनती ने संज्ञा और क्रिया दोनों का रूप बदल दिया। संख्या के इसी बोध को **वचन** कहते हैं।

उदाहरण

लड़का — लड़के | पुस्तक — पुस्तकें | नदी — नदियाँ | माला — मालाएँ

वचन के भेद

हिंदी में वचन के **दो** भेद हैं।

1. एकवचन

शब्द का वह रूप जिससे केवल **एक** का बोध हो।

उदाहरण

लड़का | पुस्तक | नदी | घोड़ा | कमरा

2. बहुवचन

शब्द का वह रूप जिससे **एक से अधिक** का बोध हो।

> **उदाहरण**
>
> लड़के | पुस्तकें | नदियाँ | घोड़े | कमरे

> **ध्यान दें**
>
> संस्कृत में तीन वचन होते हैं — एकवचन, द्विवचन और बहुवचन। हिंदी में द्विवचन नहीं है; दो के लिए भी बहुवचन ही प्रयुक्त होता है। *दो लड़के आए* — यहाँ द्विवचन का अलग रूप नहीं बना।

बहुवचन बनाने के नियम

पुल्लिंग शब्दों में

नियम	एकवचन	बहुवचन
आ → ए	लड़का	लड़के
आ → ए	घोड़ा	घोड़े
शेष प्रायः अपरिवर्तित	घर	घर
शेष प्रायः अपरिवर्तित	गुरु	गुरु

> **ध्यान दें**
>
> आ में समाप्त होने वाले सभी पुल्लिंग शब्द नहीं बदलते। संबंधसूचक और संस्कृत से आए कुछ शब्द अपने रूप में बने रहते हैं — *चाचा, दादा, राजा, नेता*। *दो चाचा आए* कहा जाता है, *दो चाचे* नहीं।

स्त्रीलिंग शब्दों में

नियम	एकवचन	बहुवचन
ई → इयाँ	नदी	नदियाँ
इया → इयाँ	चिड़िया	चिड़ियाँ
आ → एँ	माला	मालाएँ
अंत में एँ	पुस्तक	पुस्तकें
या → याँ	कन्या	कन्याएँ

कारक के साथ बहुवचन

जब संज्ञा के साथ परसर्ग (*ने, को, से, में, पर*) लगता है, तो बहुवचन का रूप फिर बदल जाता है। इसे **विकारी बहुवचन** कहते हैं और यही वह जगह है जहाँ वाक्य प्रायः अशुद्ध होते हैं।

एकवचन	सामान्य बहुवचन	परसर्ग सहित बहुवचन
लड़का	लड़के	लड़कों ने
घर	घर	घरों में
नदी	नदियाँ	नदियों में
पुस्तक	पुस्तकें	पुस्तकों पर

तुलना कीजिए

लड़के खेल रहे हैं। — सामान्य बहुवचन

लड़कों ने खेला। — परसर्ग *ने* के कारण रूप बदला

ध्यान दें

सरल पहचान: परसर्ग लगते ही बहुवचन प्रायः **ओं** में बदल जाता है — *लड़कों, घरों, नदियों, पुस्तकों*। *लड़के ने* एकवचन है, *लड़कों ने* बहुवचन।

कुछ विशेष प्रयोग

आदर के लिए बहुवचन

आदरणीय व्यक्ति के लिए एक होने पर भी बहुवचन का प्रयोग होता है।

> वाक्य में
>
> पिता जी **आए हैं**। — एक व्यक्ति, पर आदर के कारण बहुवचन
>
> गुरु जी **पढ़ा रहे हैं**।

इसी कारण *आप* सदैव बहुवचन में चलता है — *आप कहाँ जा रहे हैं*, चाहे सुनने वाला एक ही हो।

सदा एकवचन रहने वाले शब्द

कुछ शब्दों का बहुवचन नहीं बनता। इनमें प्रायः द्रव्यवाचक और भाववाचक संज्ञाएँ आती हैं।

> उदाहरण
>
> पानी | दूध | सोना | क्रोध | जनता | प्रेम

सदा बहुवचन में रहने वाले शब्द

> उदाहरण
>
> प्राण | दर्शन | आँसू | होश | समाचार | हस्ताक्षर

वाक्य में

उसके **प्राण** निकल गए। — एक व्यक्ति के होने पर भी बहुवचन

आपके **दर्शन** हो गए।

बहुवचन का बोध कराने वाले शब्द

कभी-कभी शब्द के साथ *लोग, गण, वृंद, जन, सब* जोड़कर बहुवचन बनाया जाता है।

उदाहरण

आप लोग | छात्रगण | गुरुजन | श्रोतावृंद | सब लोग

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

हिंदी में कितने वचन हैं? संस्कृत से यह किस प्रकार भिन्न है?

उत्तर हिंदी में दो वचन हैं — एकवचन और बहुवचन। संस्कृत में तीन होते हैं, क्योंकि वहाँ द्विवचन भी है। हिंदी में दो के लिए भी बहुवचन ही चलता है — जैसे "दो लड़के आए"।

"लड़के ने" और "लड़कों ने" में क्या अंतर है?

उत्तर "लड़के ने" एकवचन है और "लड़कों ने" बहुवचन। परसर्ग लगने पर बहुवचन का रूप ओं में बदल जाता है।

"चाचा" का बहुवचन "चाचे" क्यों नहीं होता?

उत्तर क्योंकि संबंधसूचक और संस्कृत से आए कुछ आ-अंत पुल्लिंग शब्द बहुवचन में नहीं बदलते — जैसे चाचा, दादा, राजा, नेता। शुद्ध रूप है "दो चाचा आए"।

"नदी", "चिड़िया" और "माला" का बहुवचन बनाइए।

उत्तर नदी — नदियाँ (ई → इयाँ), चिड़िया — चिड़ियाँ (इया → इयाँ), माला — मालाएँ (आ → एँ)।

"पिता जी आए हैं" में एक व्यक्ति होने पर भी बहुवचन क्यों है?

उत्तर आदर प्रकट करने के लिए। आदरणीय व्यक्ति के लिए एक होने पर भी बहुवचन का प्रयोग होता है — इसी कारण "आप" भी सदा बहुवचन में चलता है।

क्रिया विशेषण *(Adverb)*

जो शब्द क्रिया की विशेषता बताए, उसे क्रिया विशेषण कहते हैं। इसके चार भेद हैं।

मध्यम · विस्तृत विवेचन · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

जो शब्द क्रिया की विशेषता प्रकट करे, उसे क्रिया विशेषण कहते हैं।

विशेषण संज्ञा की विशेषता बताता है — *अच्छा लड़का*। उसी तरह कुछ शब्द **क्रिया** की विशेषता बताते हैं — *लड़का धीरे चलता है*। यहाँ *धीरे* बता रहा है कि चलने का काम किस ढंग से हुआ। ऐसे शब्द **क्रिया विशेषण** कहलाते हैं।

तुलना कीजिए

सुंदर लड़की गाती है। — *सुंदर* लड़की की विशेषता है, अतः विशेषण

लड़की **सुंदर** गाती है। — *सुंदर* गाने की विशेषता है, अतः क्रिया विशेषण

ध्यान दें

एक ही शब्द प्रसंग के अनुसार विशेषण भी हो सकता है और क्रिया विशेषण भी। भेद शब्द से नहीं, इस बात से तय होता है कि वह किसकी विशेषता बता रहा है — संज्ञा की या क्रिया की।

क्रिया विशेषण के भेद

अर्थ के आधार पर क्रिया विशेषण के **चार** भेद हैं।

1. कालवाचक क्रिया विशेषण

जो शब्द क्रिया के होने के **समय** का बोध कराए।

उदाहरण

अब | कल | आज | पहले | प्रतिदिन | सदा | अभी

वाक्य में

वह **कल** आएगा।

मैं **प्रतिदिन** टहलता हूँ।

2. स्थानवाचक क्रिया विशेषण

जो शब्द क्रिया के होने के **स्थान** का बोध कराए।

उदाहरण

यहाँ | वहाँ | ऊपर | नीचे | बाहर | भीतर | आगे

वाक्य में

बच्चे **बाहर** खेल रहे हैं।

पुस्तक **ऊपर** रखी है।

3. रीतिवाचक क्रिया विशेषण

जो शब्द क्रिया के होने की **रीति या ढंग** का बोध कराए। यह भेद सबसे बड़ा है, क्योंकि इसमें ढंग के साथ-साथ निश्चय, कारण और स्वीकृति के शब्द भी आते हैं।

उदाहरण

धीरे | तेज़ | अचानक | सचमुच | अवश्य | शायद | ध्यानपूर्वक

वाक्य में

वह **धीरे-धीरे** बोलता है।

वह **अवश्य** आएगा।

4. परिमाणवाचक क्रिया विशेषण

जो शब्द क्रिया की **मात्रा या परिमाण** का बोध कराए।

उदाहरण

बहुत | थोड़ा | कम | अधिक | पर्याप्त | बिलकुल

वाक्य में

वह **बहुत** पढ़ता है।

आज **कम** बोलो।

रूप के आधार पर भेद

प्रयोग के अतिरिक्त, बनावट के आधार पर भी क्रिया विशेषण तीन प्रकार के माने जाते हैं।

भेद	पहचान	उदाहरण
मूल	जो स्वतंत्र रूप से बने हों	अब, तब, यहाँ, ठीक

भेद	पहचान	उदाहरण
यौगिक	किसी शब्द में प्रत्यय या परसर्ग लगकर बने	रातभर, मनमाने, चुपके से
स्थानीय	जो अन्य शब्द-भेद से आकर इस रूप में चलें	सिर पर, दिनभर

क्रिया विशेषण और विशेषण में अंतर

यह भेद सबसे अधिक पूछा जाता है, इसलिए एक बार ठीक से समझ लेना उपयोगी है।

आधार	विशेषण	क्रिया विशेषण
किसकी विशेषता	संज्ञा या सर्वनाम की	क्रिया की
रूप परिवर्तन	लिंग-वचन से बदलता है	प्रायः नहीं बदलता
उदाहरण	अच्छा लड़का	अच्छा गाता है

तुलना कीजिए

वह **तेज़** घोड़ा है। — *विशेषण* (घोड़े की विशेषता)

घोड़ा **तेज़** दौड़ता है। — *क्रिया विशेषण* (दौड़ने की विशेषता)

ध्यान दें

पहचान का सबसे भरोसेमंद तरीका प्रश्न पूछना है। क्रिया से *कब, कहाँ, कैसे, कितना* पूछिए — उत्तर में जो शब्द आए, वही क्रिया विशेषण है। *वह धीरे चलता है* में पूछिए "कैसे चलता है?" — उत्तर *धीरे*, अतः रीतिवाचक क्रिया विशेषण।

क्रिया विशेषण अव्यय है

क्रिया विशेषण का रूप लिंग, वचन या कारक से नहीं बदलता, इसलिए इसे **अव्यय** माना जाता है।

वाक्य में

लड़का **धीरे** चलता है।

लड़की **धीरे** चलती है।

लड़के **धीरे** चलते हैं।

तीनों वाक्यों में क्रिया बदली, कर्ता बदला, पर *धीरे* ज्यों का त्यों रहा — यही अव्यय का लक्षण है।

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

"वह सुंदर गाती है" और "सुंदर लड़की गाती है" — दोनों में "सुंदर" का शब्द-भेद बताइए।

उत्तर पहले वाक्य में क्रिया विशेषण, क्योंकि यह गाने की विशेषता बता रहा है। दूसरे में विशेषण, क्योंकि यह लड़की की विशेषता बता रहा है। भेद शब्द से नहीं, प्रयोग से तय होता है।

क्रिया विशेषण के चार भेद उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर कालवाचक (कल, प्रतिदिन), स्थानवाचक (यहाँ, बाहर), रीतिवाचक (धीरे, अवश्य) और परिमाणवाचक (बहुत, कम)।

क्रिया विशेषण को अव्यय क्यों कहा जाता है?

उत्तर क्योंकि उसका रूप लिंग, वचन या कारक के अनुसार नहीं बदलता। "लड़का धीरे चलता है", "लड़की धीरे चलती है" — क्रिया बदली पर "धीरे" अपरिवर्तित रहा।

"बच्चे प्रतिदिन बाहर बहुत देर खेलते हैं।" — इस वाक्य के क्रिया विशेषण छाँटकर भेद बताइए।

उत्तर प्रतिदिन — कालवाचक, बाहर — स्थानवाचक, बहुत — परिमाणवाचक।

क्रिया विशेषण पहचानने का सरल तरीका क्या है?

उत्तर क्रिया से कब, कहाँ, कैसे या कितना पूछिए। उत्तर में आने वाला शब्द ही क्रिया विशेषण होगा।

अव्यय *(Indeclinable)*

जिन शब्दों का रूप लिंग, वचन, कारक या काल से नहीं बदलता, उन्हें अव्यय कहते हैं।

मध्यम विस्तृत विवेचन · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

जिन शब्दों के रूप में लिंग, वचन, कारक, काल आदि के कारण कोई विकार नहीं होता, उन्हें अव्यय कहते हैं।

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया — ये चारों वाक्य में अपना रूप बदलते हैं। *लड़का* से *लड़के*, *अच्छा* से *अच्छी*, *जाता* से *जाती*। पर कुछ शब्द ऐसे भी हैं जो कभी नहीं बदलते।

वाक्य में

राम **और** श्याम आए।

सीता **और** गीता आईं।

लड़के **और** लड़कियाँ आए।

तीनों वाक्यों में लिंग और वचन बदले, पर *और* ज्यों का त्यों रहा। ऐसे शब्द **अव्यय** कहलाते हैं — अर्थात् जिनमें व्यय (क्षय, परिवर्तन) न हो। इन्हें **अविकारी शब्द** भी कहते हैं।

ध्यान दें

शब्द-भेदों का पूरा विभाजन इसी पर टिका है। आठ शब्द-भेदों में से चार **विकारी** हैं — संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया। शेष चार **अविकारी** या अव्यय हैं — क्रिया विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक।

अव्यय के भेद

1. क्रिया विशेषण अव्यय

जो क्रिया की विशेषता बताए। इसके चार उपभेद हैं — कालवाचक, स्थानवाचक, रीतिवाचक और परिमाणवाचक।

उदाहरण

आज | यहाँ | धीरे | बहुत | प्रतिदिन

वाक्य में

वह **आज धीरे** चल रहा है।

2. संबंधबोधक अव्यय

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के **बाद** आकर उसका संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों से जोड़े।

उदाहरण

के पास | के ऊपर | के बिना | के लिए | की ओर | के कारण

वाक्य में

मेज़ **के ऊपर** पुस्तक है।

वह धन **के बिना** दुखी है।

ध्यान दें

संबंधबोधक और क्रिया विशेषण में भ्रम होता है, क्योंकि कई शब्द दोनों में चलते हैं। भेद यह है कि संबंधबोधक के पहले सदा कोई संज्ञा या सर्वनाम होता है, क्रिया विशेषण के पहले नहीं।

*वह **ऊपर** बैठा है* — क्रिया विशेषण। *वह छत **के ऊपर** बैठा है* — संबंधबोधक।

3. समुच्चयबोधक अव्यय

जो शब्द दो शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों को **जोड़े**। इसे योजक भी कहते हैं।

उदाहरण

और | तथा | किंतु | परंतु | या | क्योंकि | इसलिए

समुच्चयबोधक के दो भेद हैं:

भेद	कार्य	उदाहरण
समानाधिकरण	समान स्तर के वाक्यों को जोड़े	और, तथा, किंतु, या, अथवा
व्यधिकरण	मुख्य वाक्य से आश्रित उपवाक्य जोड़े	क्योंकि, ताकि, यद्यपि, जो

वाक्य में

राम आया **और** श्याम गया। — *समानाधिकरण*

वह नहीं आया **क्योंकि** वह बीमार था। — *व्यधिकरण*

4. विस्मयादिबोधक अव्यय

जो शब्द हर्ष, शोक, आश्चर्य, घृणा आदि **भाव** प्रकट करे। इसके बाद प्रायः विस्मयादिबोधक चिह्न (!) लगता है।

भाव	शब्द
हर्ष	वाह!, आहा!, शाबाश!
शोक	हाय!, ओह!, अरे!
आश्चर्य	क्या!, ओहो!, अरे!
घृणा	छिः!, धिक्!
संबोधन	हे!, अजी!, अरे!

वाक्य में

वाह! कितना सुंदर दृश्य है।

हाय! वह चला गया।

ध्यान दें

विस्मयादिबोधक वाक्य के किसी अन्य शब्द से व्याकरणिक संबंध नहीं रखता। उसे हटा देने पर भी वाक्य अर्थपूर्ण रहता है — *कितना सुंदर दृश्य है* अपने आप में पूरा वाक्य है।

निपात

कुछ व्याकरणों में एक पाँचवाँ भेद **निपात** भी माना जाता है। ये वे अव्यय हैं जो किसी शब्द या वाक्य पर **बल** देते हैं।

उदाहरण

ही | भी | तो | तक | मात्र | भर | केवल

तुलना कीजिए

राम ने आम खाया। — साधारण कथन

> राम **ने ही** आम खाया। — बल राम पर
>
> राम ने आम **ही** खाया। — बल आम पर

निपात हटा देने पर वाक्य का अर्थ बना रहता है, केवल ज़ोर समाप्त हो जाता है। यही निपात की पहचान है।

विकारी और अविकारी का सारांश

विकारी शब्द	अविकारी शब्द (अव्यय)
संज्ञा	क्रिया विशेषण
सर्वनाम	संबंधबोधक
विशेषण	समुच्चयबोधक
क्रिया	विस्मयादिबोधक

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

अव्यय किसे कहते हैं, और इसे अविकारी शब्द क्यों कहा जाता है?

उत्तर जिन शब्दों का रूप लिंग, वचन, कारक या काल के कारण नहीं बदलता, उन्हें अव्यय कहते हैं। इन्हीं में विकार (परिवर्तन) नहीं होता, इसलिए इन्हें अविकारी शब्द कहा जाता है।

"वह ऊपर बैठा है" और "वह छत के ऊपर बैठा है" — दोनों में "ऊपर" का भेद बताइए।

उत्तर पहले में क्रिया विशेषण, दूसरे में संबंधबोधक। संबंधबोधक के पहले सदा कोई संज्ञा या सर्वनाम होता है — यहाँ "छत"।

समुच्चयबोधक के दो भेद कौन-से हैं?

उत्तर समानाधिकरण (और, किंतु, या — समान स्तर के वाक्यों को जोड़े) और व्यधिकरण (क्योंकि, ताकि, यद्यपि — मुख्य वाक्य से आश्रित उपवाक्य जोड़े)।

निपात किसे कहते हैं? "राम ने ही आम खाया" में निपात छाँटिए।

उत्तर जो अव्यय किसी शब्द या वाक्य पर बल देते हैं, उन्हें निपात कहते हैं — जैसे ही, भी, तो, तक। इस वाक्य में निपात "ही" है, जो बल राम पर डाल रहा है।

चार विकारी और चार अविकारी शब्द-भेद गिनाइए।

उत्तर विकारी — संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया। अविकारी — क्रिया विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक।

वाच्य *(Voice)*

क्रिया का वह रूप जिससे पता चले कि वाक्य में कर्ता प्रधान है, कर्म प्रधान है या भाव — उसे वाच्य कहते हैं।

मध्यम विस्तृत विवेचन · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि वाक्य में कर्ता, कर्म या भाव में से कौन प्रधान है, उसे वाच्य कहते हैं।

राम पत्र लिखता है और *राम से पत्र लिखा जाता है* — बात एक ही है, पर पहले वाक्य में ध्यान *राम* पर है और दूसरे में *पत्र* पर। वाक्य में किसे प्रधान बनाया गया है, यह क्रिया के रूप से पता चलता है। इसी को **वाच्य** कहते हैं।

ध्यान दें

वाच्य का निर्णय इस बात से होता है कि **क्रिया किसके अनुसार** अपना लिंग-वचन बदल रही है — कर्ता के, कर्म के, या किसी के नहीं। यही एक कसौटी तीनों भेदों को अलग कर देती है।

वाच्य के भेद

1. कर्तृवाच्य

जिस वाक्य में **कर्ता प्रधान** हो और क्रिया कर्ता के लिंग-वचन के अनुसार चले, वह कर्तृवाच्य है।

वाक्य में

राम पुस्तक पढ़ता है।

> **सीता** पुस्तक पढ़ती है।

कर्ता बदला तो क्रिया बदली — *पढ़ता* से *पढ़ती*। कर्म *पुस्तक* वही रहा। अतः यह कर्तृवाच्य है।

कर्तृवाच्य में क्रिया सकर्मक और अकर्मक दोनों हो सकती है।

> उदाहरण
>
> राम आता है। | राम पत्र लिखता है।

2. कर्मवाच्य

जिस वाक्य में **कर्म प्रधान** हो और क्रिया कर्म के लिंग-वचन के अनुसार चले, वह कर्मवाच्य है। कर्ता गौण हो जाता है और उसके साथ प्रायः *से* या *के द्वारा* लगता है।

> वाक्य में
>
> राम से **पत्र** लिखा जाता है।
>
> राम से **पुस्तक** पढ़ी जाती है।

यहाँ कर्ता *राम* दोनों बार वही है, पर कर्म बदलते ही क्रिया बदल गई — *लिखा जाता* से *पढ़ी जाती*।

> ध्यान दें
>
> कर्मवाच्य केवल **सकर्मक** क्रियाओं का बनता है। जहाँ कर्म ही नहीं, वहाँ कर्म प्रधान कैसे होगा — इसीलिए *राम आता है* का कर्मवाच्य नहीं बनता।

3. भाववाच्य

जिस वाक्य में न कर्ता प्रधान हो न कर्म, बल्कि क्रिया का **भाव** प्रधान हो, वह भाववाच्य है। क्रिया सदा **अन्य पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन** में रहती है।

वाक्य में

मुझसे चला नहीं **जाता**।

राम से बैठा नहीं **जाता**।

सीता से बैठा नहीं **जाता**।

कर्ता पुल्लिंग हो या स्त्रीलिंग, क्रिया *जाता* ही रहती है — यही भाववाच्य की पहचान है।

भाववाच्य **अकर्मक** क्रियाओं से बनता है और प्रायः असमर्थता या निषेध के अर्थ में आता है।

तीनों का अंतर

आधार	कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य	भाववाच्य
प्रधान	कर्ता	कर्म	भाव
क्रिया किसके अनुसार	कर्ता के	कर्म के	किसी के नहीं
क्रिया	सकर्मक/अकर्मक	केवल सकर्मक	केवल अकर्मक
कर्ता के साथ परसर्ग	ने / कुछ नहीं	से, के द्वारा	से
उदाहरण	राम पत्र लिखता है	राम से पत्र लिखा जाता है	राम से चला नहीं जाता

वाच्य परिवर्तन

परीक्षा में प्रायः कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाने को कहा जाता है। इसके चरण निश्चित हैं।

1. कर्ता के साथ **से** या **के द्वारा** लगाइए।
2. कर्म को **कर्ता के स्थान** पर रखिए और उसका परसर्ग हटा दीजिए।

3. मुख्य क्रिया को **भूतकालिक कृदंत** में बदलिए।
4. उसके साथ **जाना** क्रिया का उपयुक्त रूप जोड़िए।
5. क्रिया का लिंग-वचन अब **कर्म** के अनुसार रखिए। काल नहीं बदलेगा।

> **चरण दर चरण**
>
> कर्तृवाच्य — **माता जी ने रोटी बनाई।**
>
> कर्मवाच्य — **माता जी के द्वारा रोटी बनाई गई।**

कुछ और उदाहरण:

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
मैं पत्र लिखता हूँ।	मुझसे पत्र लिखा जाता है।
बच्चे कविता गाते हैं।	बच्चों से कविता गाई जाती है।
उसने पुस्तक पढ़ी।	उसके द्वारा पुस्तक पढ़ी गई।
पुलिस चोर को पकड़ेगी।	पुलिस के द्वारा चोर पकड़ा जाएगा।

> **ध्यान दें**
>
> वाच्य बदलने पर **काल कभी नहीं बदलता**। *लिखता है* वर्तमान है तो *लिखा जाता है* भी वर्तमान ही रहेगा। यह सबसे आम भूल है।

भाववाच्य बनाना

अकर्मक क्रिया के वाक्य को भाववाच्य में बदलते समय कर्ता के साथ *से* लगाइए और क्रिया को सदा पुल्लिंग एकवचन रखिए।

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
मैं चल नहीं सकता।	मुझसे चला नहीं जाता।
वह सो नहीं सकती।	उससे सोया नहीं जाता।
बच्चे दौड़ नहीं सकते।	बच्चों से दौड़ा नहीं जाता।

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

वाच्य पहचानने की एक ही कसौटी क्या है?

उत्तर यह देखिए कि क्रिया किसके लिंग-वचन के अनुसार बदल रही है। कर्ता के अनुसार हो तो कर्तृवाच्य, कर्म के अनुसार हो तो कर्मवाच्य, और किसी के अनुसार न बदले (सदा पुल्लिंग एकवचन रहे) तो भाववाच्य।

“राम आता है” का कर्मवाच्य क्यों नहीं बन सकता?

उत्तर क्योंकि “आना” अकर्मक क्रिया है और उसका कोई कर्म नहीं। कर्मवाच्य में कर्म को प्रधान बनाया जाता है, इसलिए वह केवल सकर्मक क्रियाओं का बनता है।

“माता जी ने रोटी बनाई।” — इसे कर्मवाच्य में बदलिए।

उत्तर माता जी के द्वारा रोटी बनाई गई।

भाववाच्य में क्रिया सदा किस रूप में रहती है, और क्यों?

उत्तर सदा अन्य पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन में — जैसे “जाता”। क्योंकि भाववाच्य में न कर्ता प्रधान होता है न कर्म, बल्कि क्रिया का भाव प्रधान होता है, इसलिए क्रिया किसी के अनुसार नहीं बदलती।

वाच्य बदलते समय सबसे आम भूल कौन-सी है?

उत्तर काल बदल देना। वाच्य परिवर्तन में काल कभी नहीं बदलता — “लिखता है” का कर्मवाच्य “लिखा जाता है” रहेगा, “लिखा गया” नहीं।

उपसर्ग *(Prefix)*

जो शब्दांश किसी शब्द के आगे लगकर उसका अर्थ बदल दे, उसे उपसर्ग कहते हैं।

मध्यम · विस्तृत विवेचन · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

जो शब्दांश किसी शब्द के आरंभ में लगकर उसके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता उत्पन्न करे, उसे उपसर्ग कहते हैं।

हार का अर्थ है पराजय। उसके आगे *प्र* लगाइए तो *प्रहार* बनता है — आघात। *आ* लगाइए तो *आहार* — भोजन। *सम* लगाइए तो *संहार* — नाश। मूल शब्द एक ही रहा, पर आगे लगे छोटे-से अंश ने अर्थ पूरी तरह बदल दिया। इन्हीं शब्दांशों को **उपसर्ग** कहते हैं।

उदाहरण

प्र + हार = प्रहार

आ + हार = आहार

सम् + हार = संहार

वि + हार = विहार

ध्यान दें

उपसर्ग का अपना स्वतंत्र अर्थ नहीं होता और वह अकेला प्रयुक्त नहीं हो सकता। *प्र* या *वि* अपने आप में कोई शब्द नहीं हैं — वे तभी अर्थ देते हैं जब किसी शब्द के आगे जुड़ें।

उपसर्ग का कार्य

उपसर्ग तीन में से कोई एक काम करता है।

कार्य	उदाहरण	परिवर्तन
अर्थ बदल देना	गति → दुर्गति	शुभ से अशुभ
अर्थ में विशेषता लाना	ज्ञान → विज्ञान	सामान्य से विशिष्ट
अर्थ का उल्टा कर देना	मान → अपमान	विपरीत अर्थ

उपसर्गों के प्रकार

हिंदी में उपसर्ग तीन स्रोतों से आए हैं।

1. संस्कृत के उपसर्ग

संस्कृत में **बाईस** उपसर्ग माने जाते हैं। हिंदी के अधिकांश तत्सम शब्द इन्हीं से बने हैं।

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
प्र	आगे, अधिक	प्रगति, प्रबल, प्रयोग
परा	उल्टा, पीछे	पराजय, पराक्रम, पराभव
अप	बुरा, हीन	अपमान, अपयश, अपशब्द
सम्	पूर्ण, साथ	संगम, संतोष, संस्कार
अनु	पीछे, समान	अनुकरण, अनुशासन, अनुवाद
अव	नीचे, हीन	अवनति, अवगुण, अवतार
निर्	बिना, निषेध	निर्दोष, निर्जल, निर्भय
दुर्	बुरा, कठिन	दुर्गति, दुर्बल, दुराचार
वि	विशेष, भिन्न	विज्ञान, विदेश, विशेष

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
आ	तक, से	आगमन, आजीवन, आहार
उप	निकट, गौण	उपकार, उपवन, उपमंत्री
प्रति	विरुद्ध, हर एक	प्रतिदिन, प्रतिकूल, प्रतिध्वनि
अधि	ऊपर, श्रेष्ठ	अध्यक्ष, अधिकार, अधिपति
अभि	सामने, ओर	अभिमान, अभियान, अभिनय
सु	अच्छा, सरल	सुगम, सुयश, सुपुत्र
नि	नीचे, भीतर	निबंध, निवास, निपात
उत्	ऊपर, श्रेष्ठ	उन्नति, उत्कर्ष, उद्गम
परि	चारों ओर	परिक्रमा, परिवार, परिश्रम

2. हिंदी के उपसर्ग

ये संस्कृत उपसर्गों के ही बदले हुए रूप हैं, जो तद्भव शब्दों के साथ चलते हैं।

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
अ / अन	निषेध	अछूता, अनपढ़, अनजान
कु	बुरा	कुपुत्र, कुचाल, कुरूप
बिन	बिना	बिनब्याहा, बिनबोया
भर	पूरा	भरपेट, भरपूर, भरसक
सु	अच्छा	सुडौल, सुजान
औ / अव	हीन	औगुन, औघड़

3. उर्दू-फ़ारसी के उपसर्ग

लंबे संपर्क के कारण ये हिंदी में पूरी तरह घुल-मिल गए हैं।

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
बे	बिना	बेकार, बेईमान, बेरहम
ला	बिना	लाइलाज, लापरवाह, लाजवाब
बद	बुरा	बदनाम, बदबू, बदकिस्मत
हर	प्रत्येक	हररोज़, हरदम, हरएक
गैर	भिन्न	गैरहाज़िर, गैरकानूनी
सर	मुख्य	सरपंच, सरताज
हम	साथ, समान	हमसफ़र, हमउम्र, हमदर्द
ना	निषेध	नापसंद, नासमझ, नाराज़

ध्यान दें

कुछ शब्दों में एक से अधिक उपसर्ग लगते हैं — *निर् + आ + करण = निराकरण, सम् + आ + चार = समाचार, अन् + उप + स्थित = अनुपस्थित*। ऐसे शब्दों को तोड़ते समय क्रम का ध्यान रखिए।

उपसर्ग लगने पर होने वाले ध्वनि परिवर्तन

संस्कृत उपसर्ग जुड़ते समय प्रायः संधि होती है, इसलिए जुड़ा हुआ रूप मूल से भिन्न दिखता है।

उपसर्ग + शब्द	संधि के बाद
सम् + तोष	संतोष

उपसर्ग + शब्द	संधि के बाद
उत् + नति	उन्नति
निर् + झर	निर्झर
अधि + अक्ष	अध्यक्ष
प्रति + एक	प्रत्येक

इसी कारण उपसर्ग पहचानने के लिए संधि-विच्छेद का ज्ञान सहायक होता है।

ध्यान दें

उपसर्ग और समास के पूर्वपद में अंतर कीजिए। *राजपुत्र* में *राज* एक स्वतंत्र शब्द है, इसलिए यह समास है। *प्रहार* में *प्र* स्वतंत्र शब्द नहीं है, इसलिए यह उपसर्ग है। कसौटी यही है — क्या वह अंश अकेला प्रयुक्त हो सकता है?

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

उपसर्ग की परिभाषा दीजिए और बताइए कि वह अकेला क्यों नहीं चल सकता।

उत्तर जो शब्दांश किसी शब्द के आगे लगकर उसके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता लाए, उसे उपसर्ग कहते हैं। उसका अपना स्वतंत्र अर्थ नहीं होता — “प्र” या “वि” अपने आप में कोई शब्द नहीं, वे तभी अर्थ देते हैं जब किसी शब्द से जुड़ें।

“हार” शब्द में चार भिन्न उपसर्ग लगाकर चार नए शब्द बनाइए।

उत्तर प्रहार (प्र), आहार (आ), संहार (सम्), विहार (वि)।

“अनुपस्थित” शब्द का उपसर्ग सहित विच्छेद कीजिए।

उत्तर अन् + उप + स्थित। इसमें दो उपसर्ग लगे हैं।

“राजपुत्र” में “राज” उपसर्ग क्यों नहीं है?

उत्तर क्योंकि “राज” एक स्वतंत्र शब्द है जो अकेला प्रयुक्त हो सकता है। उपसर्ग स्वतंत्र नहीं होता, इसलिए “राजपुत्र” समास है, उपसर्ग-रचना नहीं।

“बेकार”, “दुर्गति” और “अनपढ़” में प्रयुक्त उपसर्गों के स्रोत बताइए।

उत्तर बेकार — बे (उर्दू-फ़ारसी), दुर्गति — दुर् (संस्कृत), अनपढ़ — अन (हिंदी)।

प्रत्यय *(Suffix)*

जो शब्दांश किसी शब्द के अंत में लगकर नया शब्द बनाए, उसे प्रत्यय कहते हैं। इसके दो भेद हैं — कृत् और तद्धित।

मध्यम विस्तृत विवेचन · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

जो शब्दांश किसी शब्द या धातु के अंत में लगकर उसके अर्थ में परिवर्तन कर नया शब्द बनाए, उसे प्रत्यय कहते हैं।

उपसर्ग शब्द के **आगे** लगता है, प्रत्यय **पीछे**। *लिख* धातु के अंत में *आवट* लगाइए तो *लिखावट* बनता है, *आई* लगाइए तो *लिखाई*। *मानव* के अंत में *ता* लगाइए तो *मानवता*।

उदाहरण

लिख + आवट = लिखावट | मानव + ता = मानवता | पढ़ + आकू = पढ़ाकू | सुंदर + ता = सुंदरता

ध्यान दें

प्रत्यय जोड़ने पर प्रायः मूल शब्द का रूप भी बदल जाता है — *लेना* से *लेनदार* नहीं, *लेनदार*; *बोना* से *बोआई*। तोड़ते समय मूल धातु पहचानिए, पूरा क्रिया-रूप नहीं।

प्रत्यय के भेद

प्रत्यय किससे जुड़ रहा है — इस आधार पर दो भेद हैं।

भेद	किससे जुड़ता है	बना शब्द कहलाता है
कृत् प्रत्यय	धातु (क्रिया) से	कृदंत
तद्धित प्रत्यय	संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण से	तद्धितांत

1. कृत् प्रत्यय

जो प्रत्यय **धातु** के अंत में लगकर नया शब्द बनाए, वह कृत् प्रत्यय है। इससे बने शब्द **कृदंत** कहलाते हैं।

> उदाहरण
>
> लिख + आवट = लिखावट | पढ़ + आई = पढ़ाई | चढ़ + आव = चढ़ाव | गा + अक = गायक

कृत् प्रत्यय के प्रमुख उपभेद:

कर्तृवाचक कृदंत

क्रिया करने वाले का बोध कराए।

धातु + प्रत्यय	शब्द
गा + अक	गायक
लिख + अक	लेखक
पढ़ + आकू	पढ़ाकू
चाल + आक	चालाक
रख + वाला	रखवाला

कर्मवाचक कृदंत

जिस पर क्रिया का प्रभाव पड़े।

> **उदाहरण**
>
> ओढ़ + ना = ओढ़ना
>
> बिछ + औना = बिछौना
>
> खा + ना = खाना

करणवाचक कृदंत

क्रिया के साधन का बोध कराए।

> **उदाहरण**
>
> झाड़ + ऊ = झाड़ू
>
> बेल + ना = बेलना
>
> रेत + ई = रेती

भाववाचक कृदंत

क्रिया के भाव या व्यापार का बोध कराए। ये सबसे अधिक बनते हैं।

धातु + प्रत्यय	शब्द
लिख + आवट	लिखावट
पढ़ + आई	पढ़ाई
घबरा + आहट	घबराहट
चढ़ + आव	चढ़ाव
दौड़ + अ	दौड़

विशेषणवाचक कृदंत

उदाहरण

भाग + ता = भागता | थक + आ = थका | लूट + एरा = लुटेरा

2. तद्धित प्रत्यय

जो प्रत्यय **संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण** के अंत में लगे, वह तद्धित प्रत्यय है। इससे बने शब्द **तद्धितांत** कहलाते हैं।

भाववाचक तद्धित

मूल शब्द + प्रत्यय	शब्द
मानव + ता	मानवता
सुंदर + ता	सुंदरता
बच्चा + पन	बचपन
मित्र + ता	मित्रता
गरीब + ई	गरीबी
चतुर + आई	चतुराई

संबंधवाचक तद्धित

उदाहरण

नाना + आल = ननिहाल | लोहा + आर = लोहार | भारत + ईय = भारतीय

ऊनवाचक (लघुता बताने वाले) तद्धित

> **उदाहरण**
>
> डिब्बा + इया = डिबिया | खाट + इया = खटिया | टोकरा + ई = टोकरी

अपत्यवाचक (संतान बताने वाले) तद्धित

> **उदाहरण**
>
> वसुदेव + अ = वासुदेव | मनु + अ = मानव | रघु + अ = राघव

> **ध्यान दें**
>
> कृत् और तद्धित में भेद करने की एक ही कसौटी है — मूल शब्द को देखिए। यदि वह **धातु** (क्रिया) है तो कृत्, और यदि **संज्ञा या विशेषण** है तो तद्धित।
>
> *लिखावट* में मूल *लिख* धातु है, अतः कृत्। *मानवता* में मूल *मानव* संज्ञा है, अतः तद्धित।

स्त्री प्रत्यय

लिंग बदलने वाले प्रत्यय भी तद्धित के ही अंतर्गत आते हैं।

> **उदाहरण**
>
> ई — लड़का से लड़की | इन — धोबी से धोबिन | आनी — सेठ से सेठानी | नी — मोर से मोरनी

उपसर्ग और प्रत्यय एक साथ

कई शब्दों में दोनों लगते हैं।

शब्द	विच्छेद
अपमानित	अप + मान + इत
निर्भयता	निर् + भय + ता
सुशीलता	सु + शील + ता
अनुशासित	अनु + शासन + इत

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

कृत् और तद्धित प्रत्यय में क्या अंतर है?

उत्तर कृत् प्रत्यय धातु (क्रिया) के अंत में लगता है और उससे बने शब्द कृदंत कहलाते हैं — जैसे लिख + आवट = लिखावट। तद्धित प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण के अंत में लगता है और उससे बने शब्द तद्धितांत कहलाते हैं — जैसे मानव + ता = मानवता।

“घबराहट” और “बचपन” — दोनों का प्रत्यय बताइए और भेद कीजिए।

उत्तर घबराहट = घबरा + आहट, कृत् प्रत्यय (मूल “घबरा” धातु है)। बचपन = बच्चा + पन, तद्धित प्रत्यय (मूल “बच्चा” संज्ञा है)।

“निर्भयता” का उपसर्ग और प्रत्यय सहित विच्छेद कीजिए।

उत्तर निर् + भय + ता। “निर्” उपसर्ग है और “ता” तद्धित प्रत्यय।

कर्तृवाचक कृदंत के तीन उदाहरण दीजिए।

उत्तर गायक (गा + अक), लेखक (लिख + अक), पढ़ाकू (पढ़ + आकू)। ये सब क्रिया करने वाले का बोध कराते हैं।

ऊनवाचक तद्धित प्रत्यय क्या बताते हैं? एक उदाहरण दीजिए।

उत्तर ये लघुता या छोटापन बताते हैं — जैसे डिब्बा से डिबिया, खाट से खटिया।

तत्सम और तद्भव *(Tatsam & Tadbhav)*

उत्पत्ति के आधार पर हिंदी शब्दों के भेद — तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी।

मध्यम विस्तृत विवेचन · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

संस्कृत से ज्यों के त्यों लिए गए शब्द तत्सम कहलाते हैं, और संस्कृत से बिगड़कर हिंदी में आए शब्द तद्भव।

हिंदी के शब्द एक जगह से नहीं आए। कुछ संस्कृत से सीधे उठा लिए गए, कुछ सदियों में घिसकर बदल गए, कुछ इसी भूमि की बोलियों से आए और कुछ विदेशी संपर्क से। उत्पत्ति के आधार पर शब्दों का यही वर्गीकरण **तत्सम-तद्भव** के नाम से पढ़ाया जाता है।

1. तत्सम शब्द

तत् + सम = उसके समान, अर्थात् संस्कृत के समान। जो शब्द संस्कृत से **ज्यों के त्यों** हिंदी में आ गए, वे तत्सम कहलाते हैं।

उदाहरण

अग्नि सूर्य पुस्तक मातृ हस्त दुग्ध कर्ण

ध्यान दें

तत्सम शब्दों की पहचान प्रायः उनकी ध्वनियों से होती है। जिन शब्दों में *ऋ, ष, क्ष, त्र, ज्ञ, श्र* अथवा संयुक्त व्यंजन हों, वे प्रायः तत्सम होते हैं — *ऋषि, भाषा, क्षमा, ज्ञान*।

2. तद्भव शब्द

तत् + भव = उससे उत्पन्न। जो शब्द संस्कृत से निकले पर समय के साथ **रूप बदलकर** हिंदी में आए, वे तद्भव कहलाते हैं।

उदाहरण

आग | सूरज | पोथी | माँ | हाथ | दूध | कान

यह बदलाव एक ही छलाँग में नहीं हुआ। शब्द संस्कृत से पालि-प्राकृत और अपभ्रंश से होते हुए हिंदी तक पहुँचे।

विकास क्रम

संस्कृत **हस्त** → प्राकृत **हत्थ** → हिंदी **हाथ**

संस्कृत **अग्नि** → प्राकृत **अग्गि** → हिंदी **आग**

प्रमुख तत्सम-तद्भव युग्म

तत्सम	तद्भव
अग्नि	आग
सूर्य	सूरज
दुग्ध	दूध
हस्त	हाथ
कर्ण	कान
मयूर	मोर
सप्त	सात

तत्सम	तद्भव
अष्ट	आठ
ग्राम	गाँव
क्षेत्र	खेत
मस्तक	माथा
चंद्र	चाँद
कार्य	काज
वर्षा	बरसात
गृह	घर
पत्र	पत्ता
मृत्यु	मौत
श्रावण	सावन
आश्चर्य	अचरज
उज्ज्वल	उजला

ध्यान दें

तद्भव बनने में कुछ ध्वनि-परिवर्तन बार-बार दिखते हैं: संयुक्त व्यंजन सरल हो जाते हैं (*क्षेत्र* → *खेत*), *र* लुप्त हो जाता है (*कर्म* → *काम*), और *ष/श* प्रायः *स* या *ख* में बदल जाते हैं (*शुष्क* → *सूखा*)। ये नियम याद होने पर अनजान युग्म भी अनुमान से पहचाने जा सकते हैं।

3. देशज शब्द

जो शब्द न संस्कृत से आए, न विदेश से — बल्कि इसी क्षेत्र की बोलियों और लोकभाषा में जन्मे, वे **देशज** कहलाते हैं। इनका मूल प्रायः खोजा नहीं जा सकता।

> **उदाहरण**
>
> पगड़ी | लोटा | खिड़की | ठेठ | कलाई | झाड़ू | चिड़िया

कई देशज शब्द ध्वनि के अनुकरण से बने हैं — *खटखटाना, भड़भड़, टनटन*।

4. विदेशी शब्द

लंबे राजनीतिक और व्यापारिक संपर्क के कारण अनेक भाषाओं के शब्द हिंदी में आकर घुल-मिल गए।

भाषा	उदाहरण
अरबी	अदालत, कानून, किताब, औरत, हिसाब
फ़ारसी	आदमी, दुकान, कागज़, चश्मा, ज़मीन
तुर्की	कैंची, चाकू, तोप, बेगम, उर्दू
अंग्रेज़ी	स्टेशन, डॉक्टर, स्कूल, टिकट, अस्पताल
पुर्तगाली	आलमारी, चाबी, बाल्टी, कमीज़, तौलिया
फ़्रांसीसी	कारतूस, अंग्रेज़, कूपन

5. संकर शब्द

जब दो भिन्न भाषाओं के शब्द जुड़कर एक नया शब्द बनाते हैं, उसे **संकर शब्द** कहते हैं।

संकर शब्द	स्रोत
रेलगाड़ी	रेल (अंग्रेज़ी) + गाड़ी (हिंदी)
सीलबंद	सील (अंग्रेज़ी) + बंद (फ़ारसी)
टिकटघर	टिकट (अंग्रेज़ी) + घर (हिंदी)
जेबकतरा	जेब (फ़ारसी) + कतरा (हिंदी)

पहचान का अभ्यास

तुलना कीजिए

क्षेत्र — तत्सम (संयुक्त व्यंजन *क्ष* सुरक्षित)

खेत — तद्भव (वही शब्द, ध्वनि सरल होकर)

खिड़की — देशज (बोली से आया)

खिदमत — विदेशी (अरबी)

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

तत्सम और तद्भव का शाब्दिक अर्थ बताइए।

उत्तर तत्सम = तत् + सम, अर्थात् “उसके (संस्कृत के) समान” — जो शब्द संस्कृत से ज्यों के त्यों आए। तद्भव = तत् + भव, अर्थात् “उससे उत्पन्न” — जो संस्कृत से निकलकर रूप बदलकर आए।

“हस्त” से “हाथ” तक का विकास क्रम लिखिए।

उत्तर संस्कृत हस्त → प्राकृत हत्थ → हिंदी हाथ। तद्भव शब्द एक छलाँग में नहीं बने, वे पालि-प्राकृत और अपभ्रंश से होते हुए हिंदी तक पहुँचे।

देशज शब्द किसे कहते हैं? दो उदाहरण दीजिए।

उत्तर जो शब्द न संस्कृत से आए न विदेश से, बल्कि इसी क्षेत्र की बोलियों और लोकभाषा में जन्मे — जैसे लोटा, खिड़की। इनका मूल प्रायः खोजा नहीं जा सकता।

संकर शब्द क्या है? “रेलगाड़ी” का स्रोत बताइए।

उत्तर दो भिन्न भाषाओं के शब्द जुड़कर जो नया शब्द बनाते हैं, उसे संकर शब्द कहते हैं। रेलगाड़ी = रेल (अंग्रेज़ी) + गाड़ी (हिंदी)।

“मयूर”, “सावन”, “चाकू” और “ठेठ” का वर्गीकरण कीजिए।

उत्तर मयूर — तत्सम, सावन — तद्भव (तत्सम श्रावण), चाकू — विदेशी (तुर्की), ठेठ — देशज।

पद परिचय *(Parsing)*

वाक्य में प्रयुक्त प्रत्येक पद का पूरा व्याकरणिक विवरण देना पद परिचय कहलाता है।

उन्नत · गहन अध्ययन · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

वाक्य में प्रयुक्त शब्द का व्याकरणिक भेद, उपभेद, लिंग, वचन, कारक आदि बताते हुए अन्य पदों से उसका संबंध स्पष्ट करना पद परिचय कहलाता है।

यह खंड का अंतिम विषय है, और सबसे व्यावहारिक भी। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, लिंग, वचन, कारक और काल — अब तक जो कुछ अलग-अलग पढ़ा गया, पद परिचय उसे एक साथ लगाकर देखने का अभ्यास है।

शब्द और पद में अंतर

यही वह भेद है जिससे पूरा विषय शुरू होता है।

जब तक कोई शब्द शब्दकोश में अकेला खड़ा है, वह केवल **शब्द** है। जैसे ही वह वाक्य में प्रयुक्त होकर अन्य शब्दों से संबंध जोड़ता है, वह **पद** बन जाता है।

तुलना कीजिए

लड़का — केवल शब्द (कोश में अकेला)

लड़के **ने** पत्र लिखा। — यहाँ *लड़के* पद है (कर्ता कारक, एकवचन)

ध्यान दें

वाक्य में आने पर शब्द प्रायः अपना रूप भी बदल लेता है — *लड़का* से *लड़के*। इसीलिए कहा जाता है कि वाक्य शब्दों से नहीं, पदों से बनता है।

किस पद का क्या बताना है

हर शब्द-भेद के लिए बताई जाने वाली बातें निश्चित हैं। यह तालिका ही पूरे विषय का सार है।

पद	क्या-क्या बताएँ
संज्ञा	भेद, लिंग, वचन, कारक, क्रिया से संबंध
सर्वनाम	भेद, पुरुष, लिंग, वचन, कारक, किसके लिए आया
विशेषण	भेद, लिंग, वचन, विशेष्य
क्रिया	भेद (सकर्मक/अकर्मक), काल, वाच्य, लिंग, वचन, पुरुष, कर्ता
क्रिया विशेषण	भेद, किस क्रिया की विशेषता
संबंधबोधक	किन शब्दों का संबंध जोड़ रहा है
समुच्चयबोधक	भेद, किन्हें जोड़ रहा है
विस्मयादिबोधक	कौन-सा भाव प्रकट कर रहा है

एक वाक्य का पूरा पद परिचय

वाक्य

परिश्रमी राम ने कल अपनी नई पुस्तक ध्यान से पढ़ी।

परिश्रमी — विशेषण, गुणवाचक, पुल्लिंग, एकवचन; विशेष्य *राम*।

राम — संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक; *पढ़ी* क्रिया का कर्ता।

ने — परसर्ग (विभक्ति चिह्न), कर्ता कारक का।

कल — क्रिया विशेषण, कालवाचक; *पढ़ी* क्रिया की विशेषता।

अपनी — सर्वनाम, निजवाचक; स्त्रीलिंग, एकवचन; *पुस्तक* के लिए।

नई — विशेषण, गुणवाचक, स्त्रीलिंग, एकवचन; विशेष्य *पुस्तक*।

पुस्तक — संज्ञा, जातिवाचक, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्म कारक; *पढ़ी* क्रिया का कर्म।

ध्यान से — क्रिया विशेषण, रीतिवाचक; *पढ़ी* क्रिया की विशेषता।

पढ़ी — क्रिया, सकर्मक, भूतकाल, कर्तृवाच्य, स्त्रीलिंग, एकवचन, अन्य पुरुष; कर्ता *राम*, कर्म *पुस्तक*।

ध्यान दें

ध्यान दीजिए कि *पढ़ी* स्त्रीलिंग है जबकि कर्ता *राम* पुल्लिंग। ऐसा इसलिए कि कर्ता के साथ *ने* लगा है, और *ने* लगने पर क्रिया कर्म (*पुस्तक*, स्त्रीलिंग) के अनुसार चलती है। यही बात पद परिचय में सबसे अधिक गलत लिखी जाती है।

दूसरा उदाहरण

वाक्य

अरे! वे बच्चे बाहर बहुत तेज़ दौड़ रहे हैं।

अरे — विस्मयादिबोधक; आश्चर्य का भाव।

वे — सर्वनाम, निश्चयवाचक, अन्य पुरुष, पुल्लिंग, बहुवचन, कर्ता कारक; *बच्चे* के लिए।

बच्चे — संज्ञा, जातिवाचक, पुल्लिंग, बहुवचन, कर्ता कारक; *दौड़ रहे हैं* का कर्ता।

बाहर — क्रिया विशेषण, स्थानवाचक।

बहुत — क्रिया विशेषण, परिमाणवाचक; *तेज़* की विशेषता (प्रविशेषण)।

तेज़ — क्रिया विशेषण, रीतिवाचक; *दौड़ रहे हैं* की विशेषता।

दौड़ रहे हैं — क्रिया, अकर्मक, वर्तमान काल (अपूर्ण), कर्तृवाच्य, पुल्लिंग, बहुवचन, अन्य पुरुष; कर्ता *बच्चे*।

करने का क्रम

पद परिचय में भूल प्रायः जल्दबाज़ी से होती है। यह क्रम अपनाइए:

1. पहले **क्रिया** पहचानिए — वही वाक्य का केंद्र है।
2. क्रिया से *कौन?* पूछकर **कर्ता** निकालिए।
3. क्रिया से *क्या?* पूछकर **कर्म** निकालिए।
4. शेष पदों को उनके शब्द-भेद के अनुसार लीजिए।
5. हर पद के अंत में उसका **संबंध** अवश्य बताइए — यही वह अंश है जो सबसे अधिक छूटता है।

ध्यान दें

केवल भेद लिख देना अधूरा उत्तर है। *राम — संज्ञा, व्यक्तिवाचक* पर रुक जाना आधा अंक खोना है; वाक्य में उसका संबंध (*पढ़ी क्रिया का कर्ता*) बताना अनिवार्य है।

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

शब्द और पद में क्या अंतर है?

उत्तर शब्दकोश में अकेला खड़ा शब्द केवल शब्द है। जब वह वाक्य में प्रयुक्त होकर अन्य शब्दों से संबंध जोड़ता है, तब वह पद बन जाता है — और प्रायः अपना रूप भी बदल लेता है, जैसे “लड़का” से “लड़के ने”।

संज्ञा का पद परिचय देते समय कौन-कौन सी बातें बतानी चाहिए?

उत्तर भेद, लिंग, वचन, कारक और क्रिया से उसका संबंध।

“राम ने पुस्तक पढ़ी” — यहाँ क्रिया स्त्रीलिंग क्यों है जबकि कर्ता पुल्लिंग है?

उत्तर क्योंकि कर्ता के साथ “ने” परसर्ग लगा है। “ने” लगने पर क्रिया कर्ता के नहीं, कर्म के लिंग-वचन के अनुसार चलती है — यहाँ कर्म “पुस्तक” स्त्रीलिंग है, इसलिए “पढ़ी”।

“सीता सुंदर गीत गाती है।” — “सुंदर” का पद परिचय दीजिए।

उत्तर सुंदर — विशेषण, गुणवाचक, पुल्लिंग, एकवचन; विशेष्य “गीत”।

पद परिचय करते समय सबसे पहले क्या पहचानना चाहिए और क्यों?

उत्तर सबसे पहले क्रिया, क्योंकि वही वाक्य का केंद्र है। क्रिया से “कौन?” पूछकर कर्ता और “क्या?” पूछकर कर्म सरलता से निकल आते हैं।

वाक्य के भेद *(Types of Sentences)*

सार्थक शब्द-समूह जो पूरा अर्थ दे, वाक्य है। रचना के आधार पर तीन और अर्थ के आधार पर आठ भेद होते हैं।

मध्यम विस्तृत विवेचन · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

शब्दों का ऐसा सार्थक समूह जिससे पूरा अर्थ प्रकट हो, वाक्य कहलाता है।

शब्द अकेले पूरा अर्थ नहीं देते। *राम, पुस्तक, पढ़ना* — तीनों सार्थक शब्द हैं, पर इनसे कोई बात पूरी नहीं होती। जब ये एक क्रम और नियम से जुड़ते हैं — *राम पुस्तक पढ़ता है* — तब **वाक्य** बनता है।

वाक्य के अंग

हर वाक्य के दो अनिवार्य अंग होते हैं।

उद्देश्य — वाक्य में जिसके विषय में कुछ कहा जाए। **विधेय** — उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाए।

वाक्य	उद्देश्य	विधेय
राम पुस्तक पढ़ता है।	राम	पुस्तक पढ़ता है
छोटा बालक तेज़ दौड़ता है।	छोटा बालक	तेज़ दौड़ता है

वाक्य	उद्देश्य	विधेय
मेरे मित्र ने पत्र लिखा।	मेरे मित्र ने	पत्र लिखा

ध्यान दें

उद्देश्य पहचानने का सरल उपाय: क्रिया से **"कौन?"** पूछिए। *पुस्तक पढ़ता है* — कौन? *राम*। यही उद्देश्य है, शेष सब विधेय। उद्देश्य के साथ लगे विशेषण उसी के अंग माने जाते हैं, इसीलिए ऊपर *छोटा बालक* पूरा उद्देश्य है, केवल *बालक* नहीं।

वाक्य के दो आधारों पर भेद किए जाते हैं — **रचना** के आधार पर और **अर्थ** के आधार पर।

रचना के आधार पर वाक्य के भेद

यह वर्गीकरण देखता है कि वाक्य में कितनी क्रियाएँ हैं और उपवाक्य किस प्रकार जुड़े हैं।

1. सरल वाक्य

जिसमें **एक ही उद्देश्य और एक ही विधेय** हो, अर्थात् एक ही मुख्य क्रिया हो।

उदाहरण

राम पुस्तक पढ़ता है।

बच्चे मैदान में खेल रहे हैं।

परिश्रमी विद्यार्थी सदा सफल होता है।

2. संयुक्त वाक्य

जिसमें दो या दो से अधिक **स्वतंत्र उपवाक्य** समुच्चयबोधक अव्यय से जुड़े हों। यहाँ हर उपवाक्य अलग होकर भी पूरा वाक्य बन सकता है।

उदाहरण

वह आया **और** सब चले गए।

मैंने बहुत समझाया **परंतु** वह नहीं माना।

परिश्रम करो **अन्यथा** असफल हो जाओगे।

प्रमुख योजक — और, तथा, एवं, या, अथवा, परंतु, किंतु, लेकिन, अन्यथा, इसलिए।

3. मिश्र वाक्य

जिसमें एक **मुख्य उपवाक्य** हो और एक या अधिक **आश्रित उपवाक्य**, जो व्यधिकरण समुच्चयबोधक से जुड़े हों। आश्रित उपवाक्य अकेला खड़ा नहीं हो सकता।

उदाहरण

जो परिश्रम करता है, **वह** सफल होता है।

मैं जानता हूँ **कि** वह ईमानदार है।

जब वर्षा हुई, **तब** किसान प्रसन्न हुए।

प्रमुख योजक — कि, जो, जब, तब, यदि, तो, यद्यपि, तथापि, क्योंकि, ताकि।

ध्यान दें

संयुक्त और मिश्र वाक्य में भेद करने की कसौटी यह है: उपवाक्यों को **अलग कर दीजिए**। यदि दोनों अपने आप में पूरे वाक्य बने रहें, तो **संयुक्त** है। यदि एक अधूरा लगे और दूसरे पर आश्रित हो, तो **मिश्र** है।

वह आया और सब चले गए — दोनों पूरे वाक्य हैं, अतः संयुक्त।

मैं जानता हूँ कि वह ईमानदार है — *कि वह ईमानदार है* अकेला अधूरा है, अतः मिश्र।

अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद

यह वर्गीकरण देखता है कि वाक्य किस भाव या उद्देश्य से कहा जा रहा है। इसके आठ भेद हैं।

भेद	अर्थ	उदाहरण
विधानवाचक	किसी बात का होना बताए	राम पुस्तक पढ़ता है।
निषेधवाचक	किसी बात का न होना बताए	राम पुस्तक नहीं पढ़ता।
प्रश्नवाचक	प्रश्न पूछे	क्या राम पुस्तक पढ़ता है?
आज्ञावाचक	आज्ञा, अनुरोध या उपदेश दे	पुस्तक पढ़ो।
इच्छावाचक	इच्छा, आशीर्वाद या कामना प्रकट करे	ईश्वर तुम्हें सफलता दे।
संदेहवाचक	संदेह या संभावना प्रकट करे	संभवतः वह आ चुका होगा।
संकेतवाचक	एक बात का दूसरी पर निर्भर होना बताए	यदि वर्षा होगी तो फ़सल अच्छी होगी।
विस्मयादिबोधक	हर्ष, शोक, आश्चर्य प्रकट करे	वाह! कितना सुंदर दृश्य है।

ध्यान दें

संदेहवाचक और संकेतवाचक में भ्रम होता है। संदेहवाचक में वक्ता स्वयं निश्चित नहीं होता — *शायद*, *संभवतः*, *होगा* जैसे शब्द आते हैं। संकेतवाचक में एक घटना दूसरी की **शर्त** होती है — *यदि... तो*, *जब... तब* का ढाँचा बनता है।

एक ही बात, आठ रूपों में

विधानवाचक — तुम विद्यालय जाते हो।

निषेधवाचक — तुम विद्यालय नहीं जाते।

प्रश्नवाचक — क्या तुम विद्यालय जाते हो?

आज्ञावाचक — विद्यालय जाओ।

इच्छावाचक — ईश्वर करे तुम विद्यालय जाओ।

संदेहवाचक — शायद तुम विद्यालय जाते हो।

संकेतवाचक — यदि तुम विद्यालय जाते तो उत्तीर्ण होते।

विस्मयादिबोधक — अरे! तुम विद्यालय जाते हो!

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

वाक्य की परिभाषा दीजिए और उसके दो अंग बताइए।

उत्तर शब्दों का ऐसा सार्थक समूह जिससे पूरा अर्थ प्रकट हो, वाक्य कहलाता है। इसके दो अंग हैं — उद्देश्य (जिसके विषय में कुछ कहा जाए) और विधेय (जो कुछ कहा जाए)।

"छोटा बालक तेज़ दौड़ता है" में उद्देश्य और विधेय अलग कीजिए।

उत्तर उद्देश्य — छोटा बालक। विधेय — तेज़ दौड़ता है। उद्देश्य के साथ लगा विशेषण उसी का अंग होता है, इसलिए पूरा "छोटा बालक" उद्देश्य है।

रचना के आधार पर वाक्य के कितने भेद हैं? प्रत्येक का एक उदाहरण दीजिए।

उत्तर तीन — सरल (राम पुस्तक पढ़ता है), संयुक्त (वह आया और सब चले गए), और मिश्र (मैं जानता हूँ कि वह ईमानदार है)।

संयुक्त और मिश्र वाक्य में भेद करने की कसौटी क्या है?

उत्तर उपवाक्यों को अलग कर दीजिए। यदि दोनों अपने आप में पूरे वाक्य बने रहें तो संयुक्त वाक्य है; यदि एक अधूरा रहे और दूसरे पर आश्रित हो तो मिश्र वाक्य है।

संदेहवाचक और संकेतवाचक वाक्य में अंतर उदाहरण सहित बताइए।

उत्तर संदेहवाचक में वक्ता स्वयं निश्चित नहीं होता और शायद, संभवतः जैसे शब्द आते हैं — "संभवतः वह आ चुका होगा।" संकेतवाचक में एक घटना दूसरी की शर्त होती है और यदि–तो का ढाँचा बनता है — "यदि वर्षा होगी तो फ़सल अच्छी होगी।"

पदबंध *(Phrase)*

वाक्य का वह अंश जो एक ही पद का काम करे, पदबंध है। इसके पाँच भेद हैं — संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और क्रियाविशेषण पदबंध।

मध्यम विस्तृत विवेचन · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

वाक्य में आए हुए ऐसे शब्द-समूह को पदबंध कहते हैं, जो मिलकर एक ही पद का कार्य करता है।

वाक्य में हर बार एक-एक शब्द अपना काम अकेला नहीं करता। कभी कई शब्द मिलकर **एक ही पद** का काम कर जाते हैं। ऐसे शब्द-समूह को **पदबंध** कहते हैं।

देखिए

नीली पगड़ी वाला लंबा आदमी धीरे-धीरे चल रहा था।

यहाँ पाँच शब्द मिलकर वही काम कर रहे हैं जो अकेला *आदमी* करता — अर्थात् कर्ता का। इसलिए यह पूरा समूह एक **संज्ञा पदबंध** है।

ध्यान दें

पदबंध पहचानने का सूत्र: पूरे समूह के स्थान पर **एक शब्द** रख दीजिए। यदि वाक्य फिर भी चल जाए, तो वह पदबंध है — और जो शब्द उसने बदला, उसी के नाम से वह पदबंध कहलाएगा। *नीली पगड़ी वाला लंबा आदमी* के स्थान पर केवल *आदमी* रखने पर वाक्य चलता है, अतः यह संज्ञा पदबंध है।

शीर्ष पद

हर पदबंध में एक शब्द **मुख्य** होता है और शेष उसके सहायक। इसी मुख्य शब्द को **शीर्ष पद** कहते हैं, और पदबंध का नाम उसी से तय होता है।

पदबंध के भेद

शीर्ष पद के आधार पर पदबंध के पाँच भेद होते हैं।

1. संज्ञा पदबंध

जो समूह वाक्य में **संज्ञा** का काम करे। शीर्ष पद संज्ञा होती है।

> **उदाहरण**
>
> **सामने वाले घर का बड़ा लड़का** डॉक्टर है।
>
> मैंने **लाल जिल्द वाली मोटी पुस्तक** खरीदी।
>
> **हरे पत्तों से लदा हुआ पेड़** सुंदर लग रहा था।

2. सर्वनाम पदबंध

जो समूह वाक्य में **सर्वनाम** का काम करे।

> **उदाहरण**
>
> **आप में से कोई भी** यह काम कर सकता है।
>
> **उनमें से कुछ लोग** देर से आए।
>
> **हम सब** मिलकर चलेंगे।

3. विशेषण पदबंध

जो समूह किसी संज्ञा या सर्वनाम की **विशेषता** बताए।

> उदाहरण
>
> वह लड़का **बहुत अधिक परिश्रमी और होनहार** है।
>
> यह पुस्तक **पढ़ने में बड़ी रोचक** है।
>
> मुझे **हरे रंग वाली** साड़ी चाहिए।

4. क्रिया पदबंध

जो समूह मिलकर एक ही **क्रिया** का काम करे। इसमें मुख्य क्रिया के साथ सहायक क्रियाएँ जुड़ी रहती हैं।

> उदाहरण
>
> वह पत्र **लिखता चला जा रहा था**।
>
> बच्चा दूध **पी चुका है**।
>
> मुझे अब **चलना ही पड़ेगा**।

5. क्रियाविशेषण पदबंध

जो समूह क्रिया की **विशेषता** बताए — कैसे, कब, कहाँ, कितना।

> उदाहरण
>
> वह **बहुत धीरे-धीरे और सँभलकर** चल रहा था।
>
> गाड़ी **ठीक समय पर** पहुँच गई।
>
> वह **दिन भर लगातार** काम करता रहा।

एक दृष्टि में

पदबंध	शीर्ष पद	उदाहरण
संज्ञा पदबंध	संज्ञा	सामने वाले घर का बड़ा लड़का
सर्वनाम पदबंध	सर्वनाम	आप में से कोई भी
विशेषण पदबंध	विशेषण	बहुत अधिक परिश्रमी
क्रिया पदबंध	क्रिया	लिखता चला जा रहा था
क्रियाविशेषण पदबंध	क्रियाविशेषण	बहुत धीरे-धीरे और सँभलकर

ध्यान दें

पदबंध और उपवाक्य को एक न समझें। **पदबंध में क्रिया नहीं होती** (क्रिया पदबंध को छोड़कर, जहाँ पूरा समूह ही एक क्रिया है) और वह अपने आप में अधूरा रहता है। **उपवाक्य में अपनी क्रिया होती है** और वह एक छोटा वाक्य जैसा लगता है।

सामने वाले घर का बड़ा लड़का — पदबंध।

जो सामने वाले घर में रहता है — उपवाक्य, क्योंकि इसमें *रहता है* क्रिया है।

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

पदबंध किसे कहते हैं?

उत्तर वाक्य में आए हुए ऐसे शब्द-समूह को पदबंध कहते हैं, जो मिलकर एक ही पद का कार्य करता है।

शीर्ष पद क्या है और पदबंध का नाम कैसे तय होता है?

उत्तर पदबंध में जो शब्द मुख्य होता है और शेष जिसके सहायक होते हैं, उसे शीर्ष पद कहते हैं। पदबंध का नाम उसी शीर्ष पद से तय होता है — शीर्ष संज्ञा हो तो संज्ञा पदबंध, क्रिया हो तो क्रिया पदबंध।

पदबंध के पाँच भेद बताइए।

उत्तर संज्ञा पदबंध, सर्वनाम पदबंध, विशेषण पदबंध, क्रिया पदबंध और क्रियाविशेषण पदबंध।

“वह पत्र लिखता चला जा रहा था” में रेखांकित पदबंध का नाम बताइए।

उत्तर “लिखता चला जा रहा था” — क्रिया पदबंध, क्योंकि मुख्य क्रिया के साथ सहायक क्रियाएँ मिलकर एक ही क्रिया का काम कर रही हैं।

पदबंध और उपवाक्य में क्या अंतर है? उदाहरण दीजिए।

उत्तर पदबंध में अपनी क्रिया नहीं होती और वह अकेला अधूरा रहता है; उपवाक्य में अपनी क्रिया होती है और वह छोटे वाक्य जैसा लगता है। “सामने वाले घर का बड़ा लड़का” पदबंध है, जबकि “जो सामने वाले घर में रहता है” उपवाक्य है, क्योंकि उसमें “रहता है” क्रिया है।

उपवाक्य *(Clause)*

वाक्य का वह अंश जिसमें अपनी क्रिया हो, उपवाक्य है। आश्रित उपवाक्य के तीन भेद — संज्ञा, विशेषण और क्रियाविशेषण उपवाक्य।

उन्नत गहन अध्ययन · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

वाक्य के उस अंश को उपवाक्य कहते हैं जिसमें अपना उद्देश्य और अपना विधेय हो, पर जो पूरे वाक्य का एक भाग हो।

मिश्र वाक्य में एक से अधिक क्रियाएँ होती हैं, और हर क्रिया अपने साथ एक छोटा वाक्य-सा अंश लेकर चलती है। उसी अंश को **उपवाक्य** कहते हैं।

पहचानिए

मैं जानता हूँ कि वह ईमानदार है।

यहाँ दो क्रियाएँ हैं — *जानता हूँ* और *है*। इसलिए दो उपवाक्य हैं:

मैं जानता हूँ — मुख्य उपवाक्य

कि वह ईमानदार है — आश्रित उपवाक्य

ध्यान दें

उपवाक्य गिनने का सबसे सरल उपाय **क्रियाएँ गिनना** है। वाक्य में जितनी समापिका क्रियाएँ होंगी, उतने ही उपवाक्य होंगे।

उपवाक्य के प्रकार

मुख्य उपवाक्य

जो उपवाक्य **स्वतंत्र** हो और किसी दूसरे पर आश्रित न हो। उसमें वाक्य की मुख्य क्रिया रहती है और वह अकेला भी पूरा वाक्य बन सकता है।

आश्रित उपवाक्य

जो उपवाक्य मुख्य उपवाक्य पर **आश्रित** हो और अकेला पूरा अर्थ न दे। यह प्रायः *कि, जो, जब, यदि, क्योंकि* जैसे योजकों से आरंभ होता है।

> उदाहरण
>
> **जो परिश्रम करता है** (आश्रित), **वह सफल होता है** (मुख्य)।
>
> **यदि वर्षा होगी** (आश्रित), **तो फ़सल अच्छी होगी** (मुख्य)।

आश्रित उपवाक्य के भेद

आश्रित उपवाक्य मुख्य उपवाक्य में जो भूमिका निभाता है, उसी के आधार पर उसके तीन भेद हैं।

1. संज्ञा उपवाक्य

जो आश्रित उपवाक्य मुख्य उपवाक्य की **संज्ञा** का काम करे — अर्थात् कर्ता या कर्म के स्थान पर आए। यह प्रायः **कि** से आरंभ होता है।

> उदाहरण
>
> मैं जानता हूँ **कि वह कल आएगा**।

> उसने कहा **कि मैं निर्दोष हूँ**।
>
> **जो कुछ उसने कहा** सत्य निकला।

पहचान: क्रिया से *क्या?* पूछिए। *मैं जानता हूँ* — क्या जानता हूँ? *कि वह कल आएगा*। उत्तर में जो आए, वह संज्ञा उपवाक्य है।

2. विशेषण उपवाक्य

जो आश्रित उपवाक्य मुख्य उपवाक्य की किसी **संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता** बताए। यह प्रायः **जो, जिसका, जिसे, जिसने** से आरंभ होता है।

> उदाहरण
>
> वह लड़का, **जो कल आया था**, मेरा मित्र है।
>
> यह वही पुस्तक है **जिसे मैं खोज रहा था**।
>
> **जिसने परिश्रम किया**, उसे फल मिला।

पहचान: यह किसी संज्ञा के ठीक पीछे या आगे लगकर बताता है कि *कौन-सा* — जैसे विशेषण करता है।

3. क्रियाविशेषण उपवाक्य

जो आश्रित उपवाक्य मुख्य क्रिया की **विशेषता** बताए — कब, कहाँ, क्यों, कैसे, किस शर्त पर। इसके कई उपभेद हैं।

उपभेद	योजक	उदाहरण
कालवाचक	जब, ज्यों ही, जब तक	**जब वर्षा हुई**, तब किसान प्रसन्न हुए।
स्थानवाचक	जहाँ, जिधर	**जहाँ चाह है**, वहाँ राह है।
कारणवाचक	क्योंकि, इसलिए कि	वह नहीं आया **क्योंकि वह बीमार था**।

उपभेद	योजक	उदाहरण
संकेतवाचक	यदि, अगर, जो	**यदि तुम पढ़ोगे**, तो उत्तीर्ण हो जाओगे।
उद्देश्यवाचक	ताकि, जिससे कि	वह दौड़ा **ताकि गाड़ी पकड़ सके**।
परिमाणवाचक	जितना, जैसा	**जैसा बोओगे**, वैसा काटोगे।

ध्यान दें

तीनों भेदों में उलझन हो तो यह क्रम आज़माइए —

1. क्या उपवाक्य किसी **संज्ञा के स्थान** पर है (क्या? के उत्तर में)? → संज्ञा उपवाक्य
2. क्या वह किसी **संज्ञा की विशेषता** बता रहा है (कौन-सा? के उत्तर में)? → विशेषण उपवाक्य
3. क्या वह **क्रिया के विषय में** बता रहा है (कब, कहाँ, क्यों)? → क्रियाविशेषण उपवाक्य

उपवाक्य और पदबंध

आधार	पदबंध	उपवाक्य
क्रिया	अपनी क्रिया नहीं होती	अपनी क्रिया होती है
रूप	शब्द-समूह	छोटा वाक्य-सा
उदाहरण	नीली पगड़ी वाला आदमी	जो नीली पगड़ी पहने है

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

उपवाक्य किसे कहते हैं?

उत्तर वाक्य के उस अंश को उपवाक्य कहते हैं जिसमें अपना उद्देश्य और अपना विधेय हो, पर जो पूरे वाक्य का एक भाग हो।

किसी वाक्य में उपवाक्यों की संख्या कैसे गिनी जाती है?

उत्तर क्रियाएँ गिनकर। वाक्य में जितनी समापिका क्रियाएँ होंगी, उतने ही उपवाक्य होंगे।

मुख्य और आश्रित उपवाक्य में अंतर बताइए।

उत्तर मुख्य उपवाक्य स्वतंत्र होता है, उसमें वाक्य की मुख्य क्रिया रहती है और वह अकेला भी पूरा वाक्य बन सकता है। आश्रित उपवाक्य मुख्य उपवाक्य पर निर्भर रहता है, अकेला पूरा अर्थ नहीं देता, और प्रायः कि, जो, जब, यदि जैसे योजकों से आरंभ होता है।

आश्रित उपवाक्य के तीन भेद कौन-से हैं? प्रत्येक का एक उदाहरण दीजिए।

उत्तर संज्ञा उपवाक्य — “मैं जानता हूँ कि वह कल आएगा।” विशेषण उपवाक्य — “यह वही पुस्तक है जिसे मैं खोज रहा था।” क्रियाविशेषण उपवाक्य — “जब वर्षा हुई, तब किसान प्रसन्न हुए।”

“जहाँ चाह है, वहाँ राह है” में आश्रित उपवाक्य छाँटकर उसका भेद बताइए।

उत्तर आश्रित उपवाक्य — “जहाँ चाह है”। यह स्थानवाचक क्रियाविशेषण उपवाक्य है, क्योंकि यह मुख्य क्रिया के विषय में बताता है कि कहाँ।

वाक्य परिवर्तन *(Sentence Transformation)*

अर्थ बदले बिना वाक्य की रचना बदलना — सरल, संयुक्त और मिश्र वाक्यों का परस्पर रूपांतरण।

उन्नत   गहन अध्ययन · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

वाक्य का अर्थ ज्यों का त्यों रखते हुए उसकी रचना बदल देना वाक्य परिवर्तन कहलाता है।

एक ही बात कई ढंग से कही जा सकती है। रचना बदल जाती है, पर **अर्थ वही रहता है** — यही वाक्य परिवर्तन है।

एक ही बात, तीन रचनाएँ

सरल — परिश्रमी व्यक्ति सफल होता है।

संयुक्त — व्यक्ति परिश्रम करता है और सफल होता है।

मिश्र — जो व्यक्ति परिश्रम करता है, वह सफल होता है।

ध्यान दें

वाक्य परिवर्तन की एकमात्र शर्त यह है कि **अर्थ न बदले**। शब्द जोड़े-हटाए जा सकते हैं, क्रम बदला जा सकता है, पर वाक्य जो कह रहा था वही कहता रहे।

रचना पहचानने का सूत्र

परिवर्तन से पहले यह पहचानना आवश्यक है कि वाक्य किस रचना का है।

रचना	पहचान
सरल	एक ही मुख्य क्रिया
संयुक्त	और, परंतु, तथा, या, इसलिए जैसे योजक
मिश्र	कि, जो, जब, यदि, क्योंकि जैसे योजक

1. सरल से संयुक्त वाक्य

सरल वाक्य की **असमापिका क्रिया** या पदबंध को अलग क्रिया बनाकर योजक से जोड़ दीजिए।

सरल	संयुक्त
वह खाना खाकर सो गया।	उसने खाना खाया और सो गया।
परिश्रम करने पर सफलता मिलती है।	परिश्रम करो और सफलता मिलेगी।
सूर्य निकलते ही अंधकार मिट गया।	सूर्य निकला और अंधकार मिट गया।
बीमार होने के कारण वह नहीं आया।	वह बीमार था इसलिए नहीं आया।

ध्यान दें

खाकर, *आते ही*, *देखकर* जैसे रूप **असमापिका क्रियाएँ** हैं — ये वाक्य पूरा नहीं करतीं। संयुक्त वाक्य बनाते समय इन्हीं को पूरी क्रिया में बदलना होता है: *खाकर* → *खाया और*।

2. सरल से मिश्र वाक्य

सरल वाक्य के किसी पदबंध को **आश्रित उपवाक्य** में बदल दीजिए।

सरल	मिश्र
परिश्रमी व्यक्ति सफल होता है।	जो व्यक्ति परिश्रम करता है, वह सफल होता है।
मुझे उसकी ईमानदारी का पता है।	मुझे पता है कि वह ईमानदार है।
वर्षा होने पर फ़सल अच्छी होगी।	यदि वर्षा होगी, तो फ़सल अच्छी होगी।
सामने वाले घर का लड़का डॉक्टर है।	जो लड़का सामने वाले घर में रहता है, वह डॉक्टर है।

ध्यान दें

पदबंध को उपवाक्य बनाने का अर्थ है उसमें **एक क्रिया जोड़ देना**। *परिश्रमी व्यक्ति* में कोई क्रिया नहीं; *जो व्यक्ति परिश्रम करता है* में *करता है* आ गई — और पदबंध उपवाक्य बन गया।

3. मिश्र से सरल वाक्य

आश्रित उपवाक्य को **पदबंध** में बदल दीजिए — अर्थात् उसकी क्रिया हटाकर उसे शब्द-समूह बना दीजिए।

मिश्र	सरल
जो लड़का कल आया था, वह मेरा मित्र है।	कल आया हुआ लड़का मेरा मित्र है।
जब वर्षा हुई, तब किसान प्रसन्न हुए।	वर्षा होने पर किसान प्रसन्न हुए।
मैं जानता हूँ कि वह निर्दोष है।	मुझे उसकी निर्दोषता का ज्ञान है।
यदि तुम पढ़ोगे, तो उत्तीर्ण हो जाओगे।	पढ़ने पर उत्तीर्ण हो जाओगे।

4. संयुक्त से सरल वाक्य

दोनों स्वतंत्र क्रियाओं में से एक को **असमापिका** बना दीजिए और योजक हटा दीजिए।

संयुक्त	सरल
उसने खाना खाया और सो गया।	वह खाना खाकर सो गया।
वह आया और सब चले गए।	उसके आते ही सब चले गए।
मैं बाज़ार गया और सामान लाया।	मैं बाज़ार जाकर सामान लाया।

5. संयुक्त से मिश्र वाक्य

योजक बदल दीजिए — समानाधिकरण योजक (और, परंतु) के स्थान पर व्यधिकरण योजक (कि, जो, यदि, क्योंकि) रख दीजिए।

संयुक्त	मिश्र
वह बीमार था इसलिए नहीं आया।	वह नहीं आया क्योंकि वह बीमार था।
परिश्रम करो अन्यथा असफल हो जाओगे।	यदि परिश्रम नहीं करोगे, तो असफल हो जाओगे।
वह धनी है परंतु कंजूस है।	यद्यपि वह धनी है, तथापि कंजूस है।

एक दृष्टि में

परिवर्तन	क्या करना है
सरल → संयुक्त	असमापिका क्रिया को पूरी क्रिया बनाकर *और* / *इसलिए* से जोड़ें
सरल → मिश्र	पदबंध को उपवाक्य बनाएँ, *जो* / *कि* / *यदि* लगाएँ
मिश्र → सरल	उपवाक्य की क्रिया हटाकर उसे पदबंध बनाएँ
संयुक्त → सरल	एक क्रिया को असमापिका बनाएँ, योजक हटाएँ

परिवर्तन	क्या करना है
संयुक्त → मिश्र	योजक बदलें — *और* के स्थान पर *कि* / *क्योंकि* / *यदि*

ध्यान दें

वाक्य परिवर्तन और **वाच्य परिवर्तन** अलग-अलग हैं। वाक्य परिवर्तन में **रचना** बदलती है (सरल से मिश्र), वाच्य परिवर्तन में **कर्ता-कर्म की प्रधानता** बदलती है (कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य)।

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

वाक्य परिवर्तन किसे कहते हैं और उसकी मुख्य शर्त क्या है?

उत्तर वाक्य का अर्थ ज्यों का त्यों रखते हुए उसकी रचना बदल देना वाक्य परिवर्तन कहलाता है। मुख्य शर्त यह है कि अर्थ न बदले — शब्द और क्रम बदल सकते हैं, पर वाक्य जो कह रहा था वही कहता रहे।

"वह खाना खाकर सो गया" को संयुक्त वाक्य में बदलिए।

उत्तर उसने खाना खाया और सो गया। यहाँ असमापिका क्रिया "खाकर" को पूरी क्रिया "खाया" बनाकर "और" से जोड़ा गया है।

"परिश्रमी व्यक्ति सफल होता है" को मिश्र वाक्य में बदलिए।

उत्तर जो व्यक्ति परिश्रम करता है, वह सफल होता है। पदबंध "परिश्रमी व्यक्ति" में क्रिया जोड़कर उसे आश्रित उपवाक्य बना दिया गया।

"जब वर्षा हुई, तब किसान प्रसन्न हुए" को सरल वाक्य में बदलिए।

उत्तर वर्षा होने पर किसान प्रसन्न हुए। आश्रित उपवाक्य की क्रिया हटाकर उसे पदबंध बना दिया गया।

वाक्य परिवर्तन और वाच्य परिवर्तन में क्या अंतर है?

उत्तर वाक्य परिवर्तन में वाक्य की रचना बदलती है — सरल से संयुक्त या मिश्र। वाच्य परिवर्तन में कर्ता और कर्म की प्रधानता बदलती है — कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य या भाववाच्य।

वाक्य शुद्धि *(Sentence Correction)*

वाक्य में आने वाली सामान्य अशुद्धियाँ — लिंग, वचन, कारक, क्रिया और शब्द-चयन की भूलें और उनका सुधार।

मध्यम विस्तृत विवेचन · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

वाक्य में व्याकरण की दृष्टि से आई अशुद्धियों को दूर कर उसे शुद्ध रूप में लिखना वाक्य शुद्धि कहलाता है।

वाक्य में शब्द सही हो सकते हैं और वर्तनी भी, फिर भी वाक्य अशुद्ध हो सकता है — क्योंकि शब्दों का **आपसी मेल** बिगड़ गया है।

लड़की जाता है में दोनों शब्द शुद्ध हैं, पर क्रिया कर्ता के लिंग से मेल नहीं खा रही। वाक्य शुद्धि इसी मेल को ठीक करने का अभ्यास है।

ध्यान दें

वाक्य शुद्धि में सबसे बड़ी भूल यह होती है कि विद्यार्थी **पूरा वाक्य बदल देते** हैं। नियम यह है कि **कम से कम परिवर्तन** करके अशुद्धि दूर की जाए — जो गलत है केवल वही सुधरे, शेष वाक्य ज्यों का त्यों रहे।

1. लिंग संबंधी अशुद्धि

कर्ता और क्रिया अथवा विशेषण और विशेष्य का लिंग मेल न खाना।

अशुद्ध	शुद्ध
यह मेरी पुस्तक है, वह अच्छा है।	यह मेरी पुस्तक है, वह अच्छी है।

अशुद्ध	शुद्ध
सीता ने मधुर गीत गाई।	सीता ने मधुर गीत गाया।
उसकी मृत्यु हो गया।	उसकी मृत्यु हो गई।
मुझे बहुत प्रसन्नता हुआ।	मुझे बहुत प्रसन्नता हुई।
वह एक अच्छा लड़की है।	वह एक अच्छी लड़की है।

ध्यान दें

कुछ शब्दों का लिंग प्रायः गलत मान लिया जाता है। **स्त्रीलिंग** — मृत्यु, प्रसन्नता, आत्मा, नदी, वस्तु, भाषा, आयु। **पुल्लिंग** — दही, घी, मोती, प्राण, क्रोध, गुण, जल। इनका लिंग याद होने पर आधी अशुद्धियाँ स्वयं रुक जाती हैं।

2. वचन संबंधी अशुद्धि

अशुद्ध	शुद्ध
उसके अनेक पुस्तक हैं।	उसकी अनेक पुस्तकें हैं।
मैंने अनेकों बार कहा।	मैंने अनेक बार कहा।
सब लोग अपना-अपना काम करो।	सब लोग अपना-अपना काम करें।
वहाँ बहुत से आदमी था।	वहाँ बहुत से आदमी थे।
उसके प्राण निकल गया।	उसके प्राण निकल गए।

ध्यान दें

अनेक, सब, कई, प्रत्येक — ये स्वयं बहुवचन का भाव देते हैं, इसलिए इनके साथ **"ओं" नहीं लगता**। *अनेकों, सबों, कइयों* अशुद्ध हैं। इसी प्रकार *प्रत्येक* के साथ सदा **एकवचन** आएगा — *प्रत्येक विद्यार्थी को आना चाहिए*, न कि *प्रत्येक विद्यार्थियों को*।

3. कारक संबंधी अशुद्धि

अशुद्ध	शुद्ध
मैं घर को जाता हूँ।	मैं घर जाता हूँ।
वह मुझे से बड़ा है।	वह मुझसे बड़ा है।
राम ने सोया।	राम सोया।
उसने घर आया।	वह घर आया।
मुझे यह बात का पता है।	मुझे इस बात का पता है।
वह पेड़ पर से गिरा।	वह पेड़ से गिरा।

ध्यान दें

ने का प्रयोग केवल **सकर्मक क्रिया** के भूतकाल में होता है। *सोना*, *आना*, *जाना*, *रोना* अकर्मक क्रियाएँ हैं, इसलिए *राम ने सोया* अशुद्ध है — शुद्ध है *राम सोया*। यह अशुद्धि परीक्षा में सबसे अधिक पूछी जाती है।

4. क्रिया संबंधी अशुद्धि

अशुद्ध	शुद्ध
वह कल आयेगा और मिलेगा।	वह कल आएगा और मिलेगा।
मैं यह काम कर सकता हूँ कर लूँगा।	मैं यह काम कर लूँगा।
वह पुस्तक पढ़ रहा हुआ है।	वह पुस्तक पढ़ रहा है।
आप कहाँ जा रहे हो?	आप कहाँ जा रहे हैं?
मैंने वहाँ जाना है।	मुझे वहाँ जाना है।

ध्यान दें

आप आदरसूचक सर्वनाम है, इसलिए उसके साथ सदा **बहुवचन क्रिया** आएगी — *आप जा रहे हैं*, न कि *आप जा रहे हो*। *हो* का प्रयोग *तुम* के साथ होता है।

5. अनावश्यक शब्दों का प्रयोग

एक ही अर्थ के दो शब्द साथ रख देना — यह पुनरुक्ति दोष है।

अशुद्ध	शुद्ध
कृपया आप यहाँ पधारने की कृपा करें।	कृपया यहाँ पधारें।
सर्वसम्मति से सभी ने निर्णय लिया।	सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया।
वह अपनी आत्मकथा लिख रहा है।	वह आत्मकथा लिख रहा है।
पीछे लौटकर वापस आ जाओ।	लौट आओ।
दोनों एक-दूसरे से आपस में लड़े।	दोनों आपस में लड़े।
केवल मात्र इतना ही कहना है।	केवल इतना कहना है।

ध्यान दें

आत्मकथा में *आत्म* पहले से है, इसलिए *अपनी आत्मकथा* अशुद्ध है। इसी तरह *सर्वसम्मति* में *सर्व* है, *केवलमात्र* में दो पर्याय हैं, और *वापस* में *लौटना* पहले से निहित है।

6. शब्द-चयन संबंधी अशुद्धि

अशुद्ध	शुद्ध
उसका देहांत हो गया। (पशु के लिए)	वह मर गया।

अशुद्ध	शुद्ध
मुझे आपसे निवेदन है कि आप आएँ।	मेरा आपसे निवेदन है कि आप आएँ।
वह निर्दोष है, इसलिए उसे सज़ा मिलनी चाहिए।	वह निर्दोष है, इसलिए उसे छोड़ देना चाहिए।
आपका शुभ नाम क्या है?	आपका नाम क्या है?

7. क्रम संबंधी अशुद्धि

हिंदी वाक्य का सामान्य क्रम है — **कर्ता + कर्म + क्रिया**।

अशुद्ध	शुद्ध
पढ़ता है राम पुस्तक।	राम पुस्तक पढ़ता है।
है यह मेरी पुस्तक।	यह मेरी पुस्तक है।

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

वाक्य शुद्धि करते समय किस मूल नियम का ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर कम से कम परिवर्तन का। जो अंश अशुद्ध है केवल वही सुधारा जाए, पूरा वाक्य बदल देना उचित नहीं।

"राम ने सोया" अशुद्ध क्यों है? शुद्ध रूप लिखिए।

उत्तर क्योंकि "ने" का प्रयोग केवल सकर्मक क्रिया के भूतकाल में होता है, और "सोना" अकर्मक क्रिया है। शुद्ध रूप — राम सोया।

"मैंने अनेकों बार कहा" को शुद्ध कीजिए और कारण बताइए।

उत्तर शुद्ध रूप — मैंने अनेक बार कहा। "अनेक" स्वयं बहुवचन का भाव देता है, इसलिए उसके साथ "ओं" नहीं लगता। इसी प्रकार सबों, कइयों भी अशुद्ध हैं।

"वह अपनी आत्मकथा लिख रहा है" में क्या दोष है?

उत्तर पुनरुक्ति दोष। "आत्मकथा" में "आत्म" पहले से विद्यमान है, इसलिए "अपनी" अनावश्यक है। शुद्ध रूप — वह आत्मकथा लिख रहा है।

निम्नलिखित वाक्य शुद्ध कीजिए — "आप कहाँ जा रहे हो?", "उसकी मृत्यु हो गया।", "मैं घर को जाता हूँ।"

उत्तर आप कहाँ जा रहे हैं? (आप आदरसूचक है, इसलिए बहुवचन क्रिया आएगी।) उसकी मृत्यु हो गई। (मृत्यु स्त्रीलिंग है।) मैं घर जाता हूँ। (यहाँ "को" अनावश्यक है।)

शब्द भंडार *(VOCABULARY)*

पर्यायवाची शब्द *(Synonyms)*

समान अर्थ देने वाले शब्दों को पर्यायवाची कहते हैं। पूर्ण पर्याय दुर्लभ है — प्रसंग ही सही शब्द तय करता है।

आधार आरंभिक अवधारणा · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

जिन शब्दों का अर्थ समान या लगभग समान हो, उन्हें पर्यायवाची शब्द कहते हैं।

सूर्य, रवि, भानु, दिनकर — चार शब्द, एक ही वस्तु। ऐसे शब्दों को **पर्यायवाची** कहा जाता है। *पर्याय* का अर्थ है — बदलकर आने वाला।

पर्यायवाची शब्द भाषा को दो चीज़ें देते हैं। पहली, **पुनरावृत्ति से बचाव** — एक ही अनुच्छेद में *सूर्य* चार बार लिखने के बजाय लेखक *रवि* और *दिवाकर* भी लिख सकता है। दूसरी, और अधिक महत्त्वपूर्ण, **अर्थ की सूक्ष्मता** — क्योंकि दो पर्यायवाची कभी पूरी तरह एक जैसे नहीं होते।

ध्यान दें

यह सबसे बड़ी भ्रांति है कि पर्यायवाची शब्द आपस में **कहीं भी** बदले जा सकते हैं। *जल* और *पानी* पर्यायवाची हैं, पर *आँखों का पानी उतरना* को *आँखों का जल उतरना* नहीं कहा जा सकता। पर्यायवाची **शब्दकोश में** समान होते हैं, **वाक्य में** नहीं।

प्रकृति से संबंधित

शब्द	पर्यायवाची
सूर्य	रवि, भानु, दिनकर, दिवाकर, आदित्य, प्रभाकर, मार्तंड
चंद्रमा	चंद्र, शशि, राकेश, मयंक, सुधाकर, निशाकर, इंदु
आकाश	गगन, नभ, व्योम, अंबर, आसमान, अंतरिक्ष
पृथ्वी	धरा, धरती, भूमि, वसुधा, अवनि, मही, वसुंधरा
जल	नीर, पानी, वारि, तोय, सलिल, अंबु, उदक
अग्नि	आग, अनल, पावक, वह्नि, हुताशन, कृशानु
वायु	पवन, हवा, समीर, अनिल, मारुत, समीरण
बादल	मेघ, जलद, घन, नीरद, वारिद, पयोद
नदी	सरिता, तटिनी, तरंगिणी, आपगा, निर्झरिणी
समुद्र	सागर, जलधि, रत्नाकर, पयोधि, वारिधि, उदधि
पर्वत	पहाड़, गिरि, शैल, नग, अचल, भूधर
वृक्ष	पेड़, तरु, विटप, द्रुम, पादप, रूख
रात	रात्रि, निशा, रजनी, यामिनी, विभावरी
दिन	दिवस, वासर, दिवा, अह

मनुष्य और संबंध

शब्द	पर्यायवाची
मनुष्य	मानव, नर, आदमी, इंसान, मनुज
स्त्री	नारी, महिला, वनिता, रमणी, कामिनी
पुत्र	बेटा, सुत, तनय, आत्मज, नंदन
पुत्री	बेटी, सुता, तनया, आत्मजा, दुहिता
मित्र	सखा, सहचर, दोस्त, साथी, बंधु
शत्रु	दुश्मन, रिपु, वैरी, अरि, प्रतिपक्षी
राजा	नृप, भूप, नरेश, महीपति, सम्राट, भूपाल
गुरु	शिक्षक, आचार्य, अध्यापक, उपाध्याय
घर	गृह, सदन, भवन, निकेतन, आलय, आवास
आँख	नेत्र, चक्षु, नयन, लोचन, दृग, अक्षि

पशु-पक्षी

शब्द	पर्यायवाची
हाथी	गज, हस्ती, कुंजर, करी, द्विप, मतंग
घोड़ा	अश्व, तुरंग, घोटक, हय, सैंधव
सिंह	शेर, केसरी, मृगराज, वनराज, हरि, नाहर
पक्षी	खग, विहग, द्विज, पखेरू, नभचर, शकुंत

शब्द	पर्यायवाची
कोयल	कोकिल, पिक, श्यामा, वसंतदूत
सर्प	साँप, नाग, व्याल, भुजंग, विषधर, उरग

देवता और पौराणिक

शब्द	पर्यायवाची
विष्णु	नारायण, चक्रपाणि, केशव, माधव, गोविंद
शिव	शंकर, महादेव, भोलेनाथ, नीलकंठ, रुद्र, त्रिलोचन
सरस्वती	शारदा, वाणी, भारती, वागीश्वरी, गिरा
लक्ष्मी	कमला, रमा, पद्मा, हरिप्रिया, श्री
गंगा	भागीरथी, सुरसरि, देवनदी, जाह्नवी, मंदाकिनी
अमृत	सुधा, पीयूष, सोम, अमिय

वस्तु और भाव

शब्द	पर्यायवाची
कमल	जलज, पंकज, नीरज, सरोज, अरविंद, उत्पल
फूल	पुष्प, सुमन, कुसुम, प्रसून
सोना	स्वर्ण, कनक, हेम, कंचन, हिरण्य
इच्छा	अभिलाषा, कामना, चाह, लालसा, आकांक्षा

शब्द	पर्यायवाची
क्रोध	गुस्सा, रोष, कोप, अमर्ष
संसार	जगत, विश्व, दुनिया, लोक, भव

प्रसंग ही शब्द चुनता है

पर्यायवाची शब्दों में अर्थ एक होते हुए भी **भाव, स्तर और साथ** अलग होते हैं।

वाक्य में

गृह, सदन, भवन, झोंपड़ी — चारों रहने का स्थान बताते हैं, पर आकार और भाव अलग है। *राष्ट्रपति भवन* कहा जाता है, *राष्ट्रपति झोंपड़ी* नहीं।

पिता जी गृह-प्रवेश पर आए — यहाँ *गृह* ठीक है।

पिता जी घर आए — यहाँ *घर* ठीक है, *गृह* लिखना कृत्रिम लगेगा।

तीन बातें इस चुनाव को तय करती हैं:

आधार	उदाहरण
शब्द का स्रोत	*जल* तत्सम है, *पानी* तद्भव — शैली के अनुसार चुनिए
रूढ़ प्रयोग	*मृगराज* सिंह के लिए चलता है, *नाहर* अब प्रायः काव्य में ही
साथ आने वाले शब्द	*अश्वमेध* बनता है, *घोड़ामेध* नहीं

ध्यान दें

कुछ व्याकरण *पर्यायवाची* और *समानार्थी* में भेद करते हैं — पर्यायवाची अर्थात् पूर्णतः समान, और समानार्थी अर्थात् लगभग समान। व्यवहार में दोनों एक ही अर्थ में प्रयुक्त होते हैं, क्योंकि **पूर्णतः समान शब्द भाषा में लगभग होते ही नहीं**।

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

"पर्यायवाची शब्द आपस में कहीं भी बदले जा सकते हैं" — क्या यह कथन सही है?

उत्तर नहीं। पर्यायवाची शब्दकोश में समान होते हैं, वाक्य में नहीं। "आँखों का पानी उतरना" को "आँखों का जल उतरना" नहीं कहा जा सकता, यद्यपि जल और पानी पर्यायवाची हैं।

"कमल" के पाँच पर्यायवाची लिखिए।

उत्तर जलज, पंकज, नीरज, सरोज, अरविंद (उत्पल भी)।

"राष्ट्रपति भवन" में "भवन" के स्थान पर "झोंपड़ी" क्यों नहीं चल सकता, जबकि दोनों रहने का स्थान बताते हैं?

उत्तर क्योंकि पर्यायवाची शब्दों में अर्थ समान होते हुए भी आकार, भाव और स्तर अलग होते हैं। भवन विशाल और गरिमामय स्थान का बोध कराता है, झोंपड़ी छोटे और साधारण स्थान का।

"अग्नि" और "पावक" में से समाचार-पत्र की सामान्य रिपोर्ट में कौन-सा शब्द उपयुक्त होगा और क्यों?

उत्तर अग्नि — क्योंकि पावक अब मुख्यतः काव्य-भाषा का शब्द है। शब्द का चुनाव प्रसंग और शैली से तय होता है।

"सुत", "तनय", "आत्मज" किसके पर्यायवाची हैं? इनका स्त्रीलिंग रूप क्या होगा?

उत्तर ये तीनों "पुत्र" के पर्यायवाची हैं। इनके स्त्रीलिंग रूप क्रमशः सुता, तनया और आत्मजा हैं।

विलोम शब्द *(Antonyms)*

विपरीत अर्थ देने वाले शब्दों को विलोम कहते हैं। ये उपसर्ग से, उपसर्ग बदलकर या स्वतंत्र शब्द से बनते हैं।

आधार आरंभिक अवधारणा · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

जो शब्द किसी शब्द का विपरीत अर्थ प्रकट करे, उसे विलोम शब्द कहते हैं।

दिन का उल्टा *रात*, *सुख* का उल्टा *दुख* — ऐसे जोड़ों को **विलोम शब्द** या **विपरीतार्थक शब्द** कहा जाता है।

विलोम याद करने की चीज़ कम, **बनाने की चीज़ अधिक** है। हिंदी में विलोम तीन तरीक़ों से बनते हैं, और तीनों जान लेने पर सैकड़ों शब्दों के विलोम स्वयं निकाले जा सकते हैं।

1. उपसर्ग लगाकर

मूल शब्द के आगे निषेधवाचक उपसर्ग जोड़ने से विलोम बन जाता है।

उपसर्ग	उदाहरण
अ	संभव — असंभव, न्याय — अन्याय, ज्ञान — अज्ञान
अन्	आदि — अनादि, आवश्यक — अनावश्यक, उचित — अनुचित
नि	डर — निडर, रोग — निरोग
निर्	बल — निर्बल, दोष — निर्दोष, जीव — निर्जीव
दुर्	गुण — दुर्गुण, गम — दुर्गम, बल — दुर्बल

उपसर्ग	उदाहरण
वि	योग — वियोग, पक्ष — विपक्ष, मुख — विमुख
अप	यश — अपयश, कीर्ति — अपकीर्ति, मान — अपमान
कु	पुत्र — कुपुत्र, मार्ग — कुमार्ग

ध्यान दें

अ और *अन्* का नियम भूलिए नहीं — **व्यंजन से आरंभ होने वाले शब्द** के आगे *अ* लगता है (*अ + संभव = असंभव*), और **स्वर से आरंभ होने वाले शब्द** के आगे *अन्* (*अन् + आदि = अनादि*)। *अआदि* या *अनसंभव* दोनों अशुद्ध हैं।

2. उपसर्ग बदलकर

यहाँ शब्द में उपसर्ग पहले से है; विलोम बनाने के लिए उसे **विपरीत उपसर्ग** से बदल दिया जाता है।

शब्द	विलोम
उत्कर्ष	अपकर्ष
आदान	प्रदान
आकर्षण	विकर्षण
सगुण	निर्गुण
अनुकूल	प्रतिकूल
उन्नति	अवनति
आरोह	अवरोह
सुगम	दुर्गम
प्रत्यक्ष	परोक्ष

शब्द	विलोम
अंतर्मुखी	बहिर्मुखी

3. स्वतंत्र शब्द से

यहाँ कोई नियम नहीं चलता — विलोम बिलकुल भिन्न शब्द होता है और उसे जानना ही पड़ता है।

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
दिन	रात	आदि	अंत
जीवन	मरण	शीत	उष्ण
हर्ष	विषाद	कटु	मधुर
ज्येष्ठ	कनिष्ठ	क्रय	विक्रय
दाता	याचक	निंदा	स्तुति
गुण	दोष	राग	द्वेष
ठोस	तरल	थोड़ा	बहुत
शयन	जागरण	तम	प्रकाश
नवीन	प्राचीन	आय	व्यय

अधिक प्रयोग में आने वाले विलोम

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
कृतज्ञ	कृतघ्न	सार्थक	निरर्थक

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
आस्तिक	नास्तिक	लौकिक	अलौकिक
सजीव	निर्जीव	क्षणिक	शाश्वत
ग्राह्य	त्याज्य	स्वार्थ	परमार्थ
मौखिक	लिखित	जटिल	सरल
चर	अचर	एकता	अनेकता
बंधन	मुक्ति	अनुरक्त	विरक्त
विधवा	सधवा	संयोग	वियोग
अमृत	विष	उदार	अनुदार

ध्यान दें

विलोम बनाते समय **व्याकरणिक कोटि वही रहनी चाहिए**। *उन्नति* संज्ञा है, अतः उसका विलोम *अवनति* (संज्ञा) होगा, *अवनत* (विशेषण) नहीं। इसी तरह *उदार* का विलोम *अनुदार* है, *अनुदारता* नहीं।

ध्यान दें

लिंग-परिवर्तन को विलोम मत समझिए। *राजा — रानी* विलोम नहीं, **स्त्रीलिंग रूप** है। हाँ, *विधवा — सधवा* जैसे जोड़े सच्चे विलोम हैं, क्योंकि वहाँ अर्थ उल्टा है, केवल लिंग नहीं बदला।

एक शब्द, एक से अधिक विलोम

कुछ शब्दों के विलोम **प्रसंग के अनुसार** बदल जाते हैं।

वाक्य में

हल्का — वज़न के संदर्भ में विलोम *भारी*, पर रंग के संदर्भ में *गहरा*।

कच्चा — फल के संदर्भ में विलोम *पका*, मकान के संदर्भ में *पक्का*।

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

"अनादि" में "अन्" उपसर्ग क्यों लगा, "अ" क्यों नहीं?

उत्तर क्योंकि "आदि" स्वर से आरंभ होता है। स्वर से आरंभ होने वाले शब्दों के आगे "अन्" लगता है और व्यंजन से आरंभ होने वालों के आगे "अ" — जैसे अ + संभव = असंभव।

"उत्कर्ष" का विलोम बताइए और बताइए कि वह किस विधि से बना है।

उत्तर अपकर्ष। यह उपसर्ग बदलकर बना है — "उत्" के स्थान पर "अप" उपसर्ग रख दिया गया।

"राजा — रानी" को विलोम युग्म क्यों नहीं माना जाता?

उत्तर क्योंकि यह लिंग-परिवर्तन है, अर्थ का विरोध नहीं। रानी राजा का स्त्रीलिंग रूप है, उल्टा अर्थ नहीं।

"हल्का" का विलोम क्या होगा?

उत्तर प्रसंग पर निर्भर है। वज़न के संदर्भ में "भारी" और रंग के संदर्भ में "गहरा"।

"उन्नति" का विलोम "अवनत" लिखना क्यों अशुद्ध है?

उत्तर क्योंकि विलोम में व्याकरणिक कोटि वही रहनी चाहिए। "उन्नति" संज्ञा है, अतः उसका विलोम भी संज्ञा — "अवनति" — होगा। "अवनत" विशेषण है।

अनेकार्थी शब्द *(Polysemous Words)*

एक ही शब्द जब प्रसंग के अनुसार अनेक अर्थ दे, तो उसे अनेकार्थी कहते हैं। अर्थ शब्द से नहीं, वाक्य से तय होता है।

मध्यम विस्तृत विवेचन · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

> **परिभाषा**
>
> जिस शब्द के एक से अधिक अर्थ हों, उसे अनेकार्थी शब्द कहते हैं।

पर्यायवाची में **अनेक शब्द, एक अर्थ** होता है। अनेकार्थी उसका ठीक उल्टा है — **एक शब्द, अनेक अर्थ**।

कनक का अर्थ सोना भी है और धतूरा भी। कौन-सा अर्थ लिया जाए, यह शब्द नहीं बताता — यह **वाक्य** बताता है।

प्रमुख अनेकार्थी शब्द

शब्द	अर्थ
कनक	सोना, धतूरा, गेहूँ
हरि	विष्णु, इंद्र, सिंह, सूर्य, सर्प, बंदर
अर्क	सूर्य, मदार का पौधा, रस
अंबर	आकाश, वस्त्र
कर	हाथ, किरण, टैक्स
काल	समय, मृत्यु, यमराज, अकाल
गुरु	शिक्षक, भारी, बृहस्पति, बड़ा

शब्द	अर्थ
घन	बादल, हथौड़ा, घना
जलज	कमल, मोती, मछली, शंख
तीर	बाण, किनारा
पत्र	पत्ता, चिट्ठी, पंख
पद	पैर, ओहदा, कविता का चरण, व्याकरण का पद
फल	फल, परिणाम, लाभ, चाकू की धार
मधु	शहद, वसंत, मदिरा
वर्ण	अक्षर, रंग, जाति
हार	पराजय, माला
नग	पर्वत, रत्न, वृक्ष
मान	सम्मान, अभिमान, नाप
अक्ष	धुरी, पासा, आँख
श्री	लक्ष्मी, शोभा, संपत्ति, आदरसूचक उपाधि
सारंग	मोर, हिरण, बादल, सर्प, कोयल, कमल
उत्तर	जवाब, एक दिशा, बाद का

अर्थ वाक्य से तय होता है

वाक्य में

*राजा ने प्रजा पर भारी **कर** लगाया।* — यहाँ *कर* = टैक्स।

> *सूर्य की **कर** धरती पर पड़ीं।* — यहाँ *कर* = किरण।
>
> *उसने अपने **कर** जोड़ लिए।* — यहाँ *कर* = हाथ।

इसीलिए अनेकार्थी शब्दों का अभ्यास केवल सूची रटकर नहीं होता। हर अर्थ का **एक वाक्य** बनाइए — तभी अर्थ स्मृति में टिकेगा।

> **ध्यान दें**
>
> अनेकार्थी शब्द और **श्लेष अलंकार** का संबंध सीधा है। श्लेष तभी बन सकता है जब शब्द अनेकार्थी हो। पर हर अनेकार्थी प्रयोग श्लेष नहीं होता — श्लेष तब बनता है जब **एक ही प्रयोग से एक साथ कई अर्थ** निकलें। *रहिमन पानी राखिए* में *पानी* एक बार आया और तीन अर्थ दे रहा है, अतः वह श्लेष है।

अनेकार्थी और श्रुतिसम भिन्नार्थक में अंतर

ये दोनों प्रायः गड्डमड्ड कर दिए जाते हैं, जबकि भेद स्पष्ट है।

आधार	अनेकार्थी	श्रुतिसम भिन्नार्थक
शब्द	एक ही शब्द	दो अलग शब्द
वर्तनी	वही रहती है	थोड़ी बदलती है
उदाहरण	*कर* = हाथ / किरण / टैक्स	*कुल* = वंश, *कूल* = किनारा

> **ध्यान दें**
>
> निर्णायक परीक्षण **वर्तनी** है। यदि लिखावट बिलकुल वही है और अर्थ अलग हैं, तो अनेकार्थी। यदि लिखावट में एक मात्रा या वर्ण का भी अंतर है, तो श्रुतिसम भिन्नार्थक।

एक ही शब्द, अलग व्याकरणिक कोटि

कई अनेकार्थी शब्दों में अर्थ के साथ **शब्द-भेद भी बदल जाता है**।

शब्द	संज्ञा के रूप में	विशेषण के रूप में
गुरु	शिक्षक	भारी, बड़ा
घन	बादल	घना
सोना	स्वर्ण	— (क्रिया: निद्रा लेना)

वाक्य में

*उसका बस्ता बहुत **गुरु** है।* — विशेषण, अर्थ भारी।

***गुरु** का स्थान माता-पिता के समान है।* — संज्ञा, अर्थ शिक्षक।

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

अनेकार्थी और पर्यायवाची में मूल अंतर क्या है?

उत्तर पर्यायवाची में अनेक शब्द होते हैं और अर्थ एक होता है। अनेकार्थी में शब्द एक होता है और अर्थ अनेक।

“हरि” के चार अर्थ लिखिए।

उत्तर विष्णु, इंद्र, सिंह और सूर्य (सर्प तथा बंदर भी)।

अनेकार्थी शब्द और श्लेष अलंकार में क्या संबंध है?

उत्तर श्लेष तभी संभव है जब शब्द अनेकार्थी हो, पर हर अनेकार्थी प्रयोग श्लेष नहीं होता। श्लेष तब बनता है जब एक ही प्रयोग से एक साथ कई अर्थ निकलें, जैसे “रहिमन पानी राखिए” में पानी के तीन अर्थ।

“कुल” और “कूल” अनेकार्थी क्यों नहीं हैं?

उत्तर क्योंकि इनकी वर्तनी भिन्न है — ये दो अलग शब्द हैं, एक शब्द के दो अर्थ नहीं। ऐसे युग्म श्रुतिसम भिन्नार्थक कहलाते हैं।

“उसका बस्ता बहुत गुरु है” — यहाँ “गुरु” का अर्थ और शब्द-भेद बताइए।

उत्तर अर्थ है “भारी” और यहाँ यह विशेषण है। संज्ञा के रूप में इसी शब्द का अर्थ शिक्षक होता है।

शब्द भंडार *(VOCABULARY)*

श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द *(Homophones)*

सुनने में समान पर अर्थ में भिन्न शब्दों को श्रुतिसम भिन्नार्थक कहते हैं। एक मात्रा का अंतर पूरा अर्थ बदल देता है।

मध्यम विस्तृत विवेचन · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

जो शब्द सुनने में समान लगें किंतु वर्तनी और अर्थ में भिन्न हों, उन्हें श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द कहते हैं।

अनल और *अनिल* — बोलने में लगभग एक जैसे, पर एक का अर्थ है आग और दूसरे का हवा। ऐसे शब्दों को **श्रुतिसम भिन्नार्थक** या **समोच्चरित** शब्द कहा जाता है।

श्रुतिसम = सुनने में समान, *भिन्नार्थक* = अर्थ में भिन्न।

ये शब्द व्याकरण की जिज्ञासा भर नहीं हैं। लिखने में इन्हीं से सबसे अधिक अशुद्धियाँ होती हैं — *नियत* की जगह *नीयत* लिख देना वाक्य का अर्थ ही उलट देता है।

अ से आरंभ होने वाले युग्म

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अनल	आग	अनिल	हवा
अंस	कंधा	अंश	भाग
अवलंब	सहारा	अविलंब	शीघ्र

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
आदि	आरंभ	आदी	अभ्यस्त
अचार	खाद्य पदार्थ	आचार	आचरण
उपकार	भला करना	अपकार	बुरा करना
अभिराम	सुंदर	अविराम	लगातार
अनुरक्त	प्रेम करने वाला	अनुरक्ति	प्रेम
ओर	तरफ़	और	तथा

क से न तक

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
कुल	वंश, समस्त	कूल	किनारा
कृति	रचना	कृती	निपुण
कपिश	मटमैला	कपीश	हनुमान
गृह	घर	ग्रह	नक्षत्र
चिर	पुराना	चीर	वस्त्र
जलद	बादल	जलज	कमल
तरणि	सूर्य	तरणी	नाव
दिन	दिवस	दीन	गरीब
नियत	निश्चित	नीयत	इरादा
निर्वाण	मोक्ष	निर्माण	रचना

प से ह तक

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
परिणाम	नतीजा	परिमाण	मात्रा
प्रसाद	कृपा, भोग	प्रासाद	महल
पवन	हवा	पावन	पवित्र
बहु	बहुत	वधू	पत्नी
मूल	जड़	मूल्य	कीमत
वसन	वस्त्र	व्यसन	बुरी लत
शुक्ल	सफ़ेद	शुल्क	फ़ीस
शंकर	शिव	संकर	मिश्रित
समान	बराबर	सामान	वस्तुएँ
सुत	पुत्र	सूत	धागा, सारथी
हरण	चुराना	हरिण	मृग

तीन-तीन के समूह

कुछ शब्द जोड़े में नहीं, **तीन के समूह** में आते हैं। ये सबसे अधिक भ्रम पैदा करते हैं।

शब्द	अर्थ
सर	तालाब
शर	बाण

शब्द	अर्थ
सिर	मस्तक

शब्द	अर्थ
शम	संयम
सम	बराबर
श्रम	परिश्रम

ध्यान दें

ध्यान दीजिए कि भेद प्रायः केवल **एक मात्रा** या **एक वर्ण** का होता है — *तरणि* में ह्रस्व *इ* और *तरणी* में दीर्घ *ई*। इसीलिए इन शब्दों को याद रखने का सही तरीक़ा वर्तनी है, उच्चारण नहीं।

वाक्य में अंतर

वाक्य में

*उसकी **नीयत** ठीक नहीं थी।* — इरादा।

*परीक्षा की **नियत** तिथि घोषित हो गई।* — निश्चित।

इन दोनों को बदल दीजिए, तो पहला वाक्य अर्थहीन हो जाएगा और दूसरा हास्यास्पद।

वाक्य में

*इस कार्य का **परिणाम** अच्छा रहा।* — नतीजा।

*दूध का **परिमाण** कम था।* — मात्रा।

ध्यान दें

श्रुतिसम भिन्नार्थक और अनेकार्थी में अंतर एक ही प्रश्न से तय होता है — क्या वर्तनी वही है?

वर्तनी वही, अर्थ अनेक → **अनेकार्थी** (*कर* = हाथ / किरण / टैक्स)

वर्तनी भिन्न, ध्वनि समान → **श्रुतिसम भिन्नार्थक** (*कुल* / *कूल*)

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

"श्रुतिसम भिन्नार्थक" नाम का शाब्दिक अर्थ क्या है?

उत्तर श्रुतिसम अर्थात् सुनने में समान, और भिन्नार्थक अर्थात् अर्थ में भिन्न — अर्थात् ऐसे शब्द जो सुनने में एक जैसे लगें पर जिनका अर्थ अलग हो।

"अनल" और "अनिल" का अर्थ बताइए।

उत्तर अनल का अर्थ है आग और अनिल का अर्थ है हवा।

"तरणि" और "तरणी" में क्या अंतर है?

उत्तर तरणि (ह्रस्व इ) का अर्थ है सूर्य और तरणी (दीर्घ ई) का अर्थ है नाव। भेद केवल एक मात्रा का है।

"उसकी नियत ठीक नहीं थी" — इस वाक्य की अशुद्धि सुधारिए।

उत्तर "उसकी नीयत ठीक नहीं थी।" यहाँ इरादे की बात है, अतः "नीयत" आएगा। "नियत" का अर्थ निश्चित होता है।

अनेकार्थी और श्रुतिसम भिन्नार्थक में भेद करने का निर्णायक परीक्षण क्या है?

उत्तर वर्तनी देखिए। यदि वर्तनी वही है और अर्थ अनेक हैं तो अनेकार्थी, और यदि वर्तनी भिन्न है पर ध्वनि समान है तो श्रुतिसम भिन्नार्थक।

वाक्यांश के लिए एक शब्द *(One Word Substitution)*

पूरे वाक्यांश के स्थान पर प्रयुक्त होने वाला एक शब्द, जो लेखन को संक्षिप्त और सटीक बनाता है।

मध्यम विस्तृत विवेचन · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

जो एक शब्द किसी पूरे वाक्यांश का अर्थ प्रकट कर दे, उसे वाक्यांश के लिए एक शब्द कहते हैं।

जो कभी न मरे कहने के बजाय एक शब्द कहा जा सकता है — **अमर**। यही **वाक्यांश के लिए एक शब्द** है।

इसका लाभ केवल संक्षेप नहीं, **सटीकता** भी है। *जो बहुत बोलता हो* एक वर्णन है; *वाचाल* एक पारिभाषिक पहचान है। अच्छे लेखन में यही अंतर दिखाई देता है।

व्यक्ति के गुण और स्वभाव

वाक्यांश	एक शब्द
जो सब कुछ जानता हो	सर्वज्ञ
जो बहुत बोलता हो	वाचाल
जो कम बोलता हो	मितभाषी
जो मीठा बोलता हो	मृदुभाषी
जो उपकार मानता हो	कृतज्ञ

वाक्यांश	एक शब्द
जो उपकार न माने	कृतघ्न
जो दूसरों पर निर्भर हो	परावलंबी
जो अपने पर निर्भर हो	स्वावलंबी
जो ईश्वर में विश्वास रखता हो	आस्तिक
जो ईश्वर में विश्वास न रखता हो	नास्तिक
जिसका कोई शत्रु न हो	अजातशत्रु
जो पढ़ा-लिखा न हो	निरक्षर
जो बहुत दानी हो	उदार
जिसने ऋण चुका दिया हो	उऋण

जो न हो सके — नकारात्मक वाक्यांश

वाक्यांश	एक शब्द
जो देखा न जा सके	अदृश्य
जो कहा न जा सके	अकथनीय
जो सहा न जा सके	असह्य
जिसे जीता न जा सके	अजेय
जिसे भुलाया न जा सके	अविस्मरणीय
जिसका इलाज न हो सके	असाध्य
जिसकी तुलना न हो सके	अनुपम

वाक्यांश	एक शब्द
जिसकी थाह न हो	अथाह
जिसका अंत न हो	अनंत
जो नष्ट न हो	अविनाशी
जिसका कोई आकार न हो	निराकार
जो पहले कभी न हुआ हो	अभूतपूर्व

ध्यान दें

ऊपर की लगभग हर पंक्ति में वही **निषेधवाचक उपसर्ग** काम कर रहा है जो विलोम बनाते समय लगता है — *अ*, *अन्*, *निर्*। अतः यह सूची रटने की नहीं, **पहचानने की** है।

समय से संबंधित

वाक्यांश	एक शब्द
सप्ताह में एक बार होने वाला	साप्ताहिक
पंद्रह दिन में एक बार होने वाला	पाक्षिक
महीने में एक बार होने वाला	मासिक
वर्ष में एक बार होने वाला	वार्षिक
पाँच वर्ष में एक बार होने वाला	पंचवर्षीय
जो हमेशा रहे	शाश्वत
जो थोड़ी देर रहे	क्षणिक
जो आँखों के सामने हो	प्रत्यक्ष

वाक्यांश	एक शब्द
जो आँखों से ओझल हो	परोक्ष

स्थान और गति

वाक्यांश	एक शब्द
जो जल में रहता हो	जलचर
जो थल पर रहता हो	थलचर
जो आकाश में विचरण करे	नभचर
जो रात में घूमता हो	निशाचर
जो हर जगह विद्यमान हो	सर्वव्यापी
जो नया-नया आया हो	नवागंतुक
जो विदेश में रहता हो	प्रवासी
जिसका कोई घर न हो	अनिकेत

आहार और आचरण

वाक्यांश	एक शब्द
जो मांस खाता हो	मांसाहारी
जो केवल शाक-सब्ज़ी खाता हो	शाकाहारी
जो कम खाता हो	मिताहारी

वाक्यांश	एक शब्द
जो हाथ से लिखा गया हो	हस्तलिखित
जो अपनी कथा स्वयं लिखे	आत्मकथा
जो किसी दूसरे की जीवनी लिखे	जीवनीकार

प्रसंग के अनुसार चुनाव

एक ही वाक्यांश के लिए कभी एक से अधिक शब्द मिलते हैं। तब **भाव** देखकर चुनिए।

वाक्य में

जिसकी तुलना न हो सके — **अनुपम**, **अतुलनीय**, **अद्वितीय** तीनों चलते हैं।

सौंदर्य के लिए *अनुपम* स्वाभाविक लगता है, उपलब्धि के लिए *अतुलनीय*, और स्थान या पद के लिए *अद्वितीय*।

ध्यान दें

लिखते समय यह प्रयोग **अधिक मात्रा में हानिकारक** है। पूरा अनुच्छेद ऐसे शब्दों से भर देने पर भाषा कृत्रिम और बोझिल हो जाती है। इनका काम वाक्य को कसना है, शब्दकोश का प्रदर्शन नहीं।

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

"जो उपकार मानता हो" और "जो उपकार न माने" के लिए एक-एक शब्द लिखिए।

उत्तर क्रमशः कृतज्ञ और कृतघ्न। ये दोनों परस्पर विलोम भी हैं।

"जो आँखों के सामने हो" तथा "जो आँखों से ओझल हो" के लिए एक-एक शब्द बताइए।

उत्तर क्रमशः प्रत्यक्ष और परोक्ष।

"निशाचर" शब्द का वाक्यांश क्या होगा, और इसी परिवार के तीन और शब्द बताइए।

उत्तर "जो रात में घूमता हो"। इसी परिवार के शब्द हैं — जलचर, थलचर और नभचर।

"अनुपम", "अतुलनीय" और "अद्वितीय" — तीनों का अर्थ एक-सा है। चुनाव कैसे करेंगे?

उत्तर भाव और प्रसंग से। सौंदर्य के लिए अनुपम, उपलब्धि के लिए अतुलनीय और पद या स्थान के लिए अद्वितीय अधिक स्वाभाविक लगता है।

इस प्रयोग की अति से क्या हानि है?

उत्तर पूरे अनुच्छेद को ऐसे शब्दों से भर देने पर भाषा कृत्रिम और बोझिल हो जाती है। इनका काम वाक्य को कसना है, शब्द-भंडार का प्रदर्शन नहीं।

मुहावरे *(Idioms)*

वे वाक्यांश जो अपने शाब्दिक अर्थ से हटकर लाक्षणिक अर्थ देते हैं और वाक्य में ही प्रयुक्त होते हैं।

मध्यम विस्तृत विवेचन · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

जो वाक्यांश अपने साधारण अर्थ को छोड़कर कोई विशेष लाक्षणिक अर्थ प्रकट करे, उसे मुहावरा कहते हैं।

उसने मेरे कान भर दिए — इस वाक्य में किसी ने किसी के कान में कुछ भरा नहीं। अर्थ है — चुगली की। जब कोई वाक्यांश अपना **सीधा अर्थ छोड़कर** कोई दूसरा अर्थ देने लगे, तो वह **मुहावरा** कहलाता है।

मुहावरा शब्द अरबी से आया है; हिंदी में इसे **वाग्धारा** भी कहा जाता है।

मुहावरे की तीन पहचान

पहचान	अर्थ
लाक्षणिक अर्थ	शाब्दिक अर्थ से भिन्न अर्थ देता है
अपूर्णता	अकेला वाक्य नहीं बनता, वाक्य का **अंश** होता है
क्रिया-परिवर्तन	वाक्य के अनुसार इसकी क्रिया का रूप बदलता है

ध्यान दें

तीसरी पहचान सबसे अधिक भुला दी जाती है। मुहावरा शब्दकोश में *कान भरना* लिखा मिलेगा, पर वाक्य में वह *कान भर दिए*, *कान भरती रही*, *कान भरने लगे* — जैसा भी प्रसंग हो, वैसा बनेगा। मुहावरे को **ज्यों का त्यों** चिपका देना अशुद्ध प्रयोग है।

शरीर के अंगों से बने मुहावरे

मुहावरा	अर्थ
आँखों का तारा होना	बहुत प्रिय होना
आँखें चुराना	सामना करने से कतराना
आँख का काँटा होना	बुरा लगना
कान भरना	चुगली करना
कान खड़े होना	सचेत हो जाना
नाक में दम करना	बहुत परेशान करना
नाक कटना	प्रतिष्ठा जाना
मुँह की खाना	बुरी तरह हारना
दाँतों तले उँगली दबाना	हैरान रह जाना
हाथ मलना	पछताना
हाथ खींचना	साथ छोड़ देना
सिर पर चढ़ाना	अधिक लाड़ करना
पेट में चूहे कूदना	तेज़ भूख लगना
कमर कसना	तैयार हो जाना

स्वभाव और व्यवहार

मुहावरा	अर्थ
अंगूठा दिखाना	साफ़ इनकार कर देना
आग बबूला होना	अत्यंत क्रोधित होना
आस्तीन का साँप	विश्वासघाती मित्र
थाली का बैंगन	सिद्धांतहीन व्यक्ति
गिरगिट की तरह रंग बदलना	बार-बार बात बदलना
ईद का चाँद होना	बहुत दिनों बाद दिखाई देना
उँगली पर नचाना	अपने वश में कर लेना
चिकना घड़ा होना	कहने का कोई असर न होना

स्थिति और परिणाम

मुहावरा	अर्थ
टेढ़ी खीर	कठिन काम
लोहे के चने चबाना	बहुत कठिन काम करना
दाल न गलना	सफल न होना
नौ दो ग्यारह होना	भाग जाना
पानी-पानी होना	लज्जित होना
चार चाँद लगाना	शोभा बढ़ा देना

मुहावरा	अर्थ
गागर में सागर भरना	थोड़े शब्दों में बहुत कहना
छक्के छुड़ाना	बुरी तरह हरा देना
घी के दीये जलाना	बहुत ख़ुशी मनाना
श्रीगणेश करना	आरंभ करना
हवा से बातें करना	बहुत तेज़ दौड़ना

वाक्य में प्रयोग

मुहावरे का अर्थ लिख देना आधा काम है। पूरा काम तब होता है जब वह **वाक्य में सहज बैठे**।

वाक्य में

गागर में सागर भरना — बिहारी के दोहे गागर में सागर भरते हैं।

लोहे के चने चबाना — इस परीक्षा की तैयारी में उसे लोहे के चने चबाने पड़े।

नौ दो ग्यारह होना — पुलिस को देखते ही चोर नौ दो ग्यारह हो गया।

आग बबूला होना — बात सुनते ही पिता जी आग बबूला हो उठे।

ध्यान दें

वाक्य बनाते समय मुहावरे का अर्थ **दोहराइए नहीं**। *चोर नौ दो ग्यारह होकर भाग गया* अशुद्ध है, क्योंकि भाग जाना तो मुहावरे में पहले से है। यह वही दोष है जिसे वाक्य शुद्धि में **पुनरुक्ति** कहा जाता है।

मुहावरा और लोकोक्ति में अंतर

आधार	मुहावरा	लोकोक्ति
रूप	वाक्यांश — वाक्य का अंश	पूरा स्वतंत्र वाक्य
प्रयोग	क्रिया वाक्य के अनुसार बदलती है	ज्यों का त्यों रहता है
उद्गम	भाषा का लाक्षणिक प्रयोग	लोक-अनुभव, कहावत
उदाहरण	नाक में दम करना	नाच न जाने आँगन टेढ़ा

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

मुहावरा और लोकोक्ति में मूल अंतर क्या है?

उत्तर मुहावरा वाक्यांश होता है — वह वाक्य का अंश है और उसकी क्रिया वाक्य के अनुसार बदलती है। लोकोक्ति स्वयं पूरा वाक्य होती है और ज्यों की त्यों प्रयुक्त होती है।

“चोर नौ दो ग्यारह होकर भाग गया” — इस वाक्य में क्या दोष है?

उत्तर पुनरुक्ति का दोष। “नौ दो ग्यारह होना” का अर्थ ही भाग जाना है, अतः “भाग गया” जोड़ना अनावश्यक है। शुद्ध रूप होगा — चोर नौ दो ग्यारह हो गया।

“गागर में सागर भरना” का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए।

उत्तर अर्थ — थोड़े शब्दों में बहुत कुछ कह देना। वाक्य — बिहारी के दोहे गागर में सागर भरते हैं।

“आस्तीन का साँप” और “थाली का बैंगन” का अर्थ बताइए।

उत्तर आस्तीन का साँप अर्थात् विश्वासघाती मित्र, और थाली का बैंगन अर्थात् ऐसा व्यक्ति जिसका कोई सिद्धांत न हो और जो हर ओर ढुलक जाए।

मुहावरे की तीन पहचान कौन-सी हैं?

उत्तर पहली, वह शाब्दिक अर्थ छोड़कर लाक्षणिक अर्थ देता है। दूसरी, वह अकेले पूरा वाक्य नहीं बनता। तीसरी, वाक्य के अनुसार उसकी क्रिया का रूप बदलता है।

लोकोक्तियाँ *(Proverbs)*

लोक-अनुभव से बने पूर्ण वाक्य, जो किसी स्थिति पर एक सिद्ध टिप्पणी की तरह ज्यों के त्यों प्रयुक्त होते हैं।

मध्यम विस्तृत विवेचन · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

लोक-जीवन के अनुभव से बने उस पूर्ण कथन को लोकोक्ति कहते हैं जो किसी स्थिति पर यथावत् लागू होता है।

नाच न जाने आँगन टेढ़ा — यह वाक्य किसी नाचने वाले के बारे में नहीं है। यह उस हर व्यक्ति के बारे में है जो अपनी अयोग्यता का दोष परिस्थिति पर डाल देता है।

ऐसे कथन **लोकोक्ति** या **कहावत** कहलाते हैं। ये लोक-जीवन के लंबे अनुभव से बने हैं, इसलिए इनमें एक निर्णय जैसा भार होता है।

ध्यान दें

लोकोक्ति और मुहावरे में भ्रम सबसे आम है। सरल परीक्षण यह है — **क्या यह अकेला पूरा वाक्य है?**

नाक में दम करना अकेला अधूरा है, अतः **मुहावरा**।

नाच न जाने आँगन टेढ़ा अकेला पूरा है, अतः **लोकोक्ति**।

सीख देने वाली लोकोक्तियाँ

लोकोक्ति	अर्थ
अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत	अवसर बीत जाने पर पछताना व्यर्थ है
जैसी करनी वैसी भरनी	जैसा कर्म वैसा फल
अपनी करनी पार उतरनी	अपने कर्म ही काम आते हैं
दूध का जला छाछ भी फूँक-फूँककर पीता है	एक बार धोखा खाया व्यक्ति अत्यधिक सावधान हो जाता है
आगे कुआँ पीछे खाई	दोनों ओर संकट
डूबते को तिनके का सहारा	संकट में थोड़ी सहायता भी बड़ी लगती है
मन चंगा तो कठौती में गंगा	मन शुद्ध हो तो बाहरी आडंबर की आवश्यकता नहीं

दिखावे और पाखंड पर

लोकोक्ति	अर्थ
थोथा चना बाजे घना	कम गुण वाला अधिक बखान करता है
अधजल गगरी छलकत जाय	अल्पज्ञ व्यक्ति अधिक इतराता है
ऊँची दुकान फीका पकवान	नाम बड़ा, गुण कम
हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और	कथनी और करनी में अंतर
ओछे की प्रीति बालू की भीत	नीच व्यक्ति का प्रेम टिकाऊ नहीं होता
चोर की दाढ़ी में तिनका	अपराधी स्वयं प्रकट हो जाता है
नाच न जाने आँगन टेढ़ा	अपनी अयोग्यता का दोष दूसरों पर डालना

सामर्थ्य और स्थिति पर

लोकोक्ति	अर्थ
जिसकी लाठी उसकी भैंस	जो बलवान है, अधिकार उसी का
अंधों में काना राजा	अयोग्यों के बीच थोड़ा योग्य भी बड़ा माना जाता है
एक अनार सौ बीमार	वस्तु कम, चाहने वाले अधिक
एक हाथ से ताली नहीं बजती	झगड़े में दोनों पक्षों का दोष होता है
सौ सुनार की एक लुहार की	कमज़ोर के सौ वारों पर बलवान का एक वार भारी
घर का भेदी लंका ढाए	अपनों की फूट से ही बड़ा नुक़सान होता है
न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी	कारण ही मिटा दो, परिणाम स्वयं मिट जाएगा
आ बैल मुझे मार	जान-बूझकर संकट मोल लेना

लाभ और व्यवहार पर

लोकोक्ति	अर्थ
आम के आम गुठलियों के दाम	एक काम से दोहरा लाभ
नौ नकद न तेरह उधार	उधार के अधिक से नकद कम भला
बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद	गुणहीन व्यक्ति गुण की पहचान नहीं कर सकता
काला अक्षर भैंस बराबर	पूर्णतः निरक्षर होना
खग जाने खग ही की भाषा	समान प्रवृत्ति वाले ही एक-दूसरे को समझते हैं
लातों के भूत बातों से नहीं मानते	कुछ लोग समझाने से नहीं, कठोरता से मानते हैं

लोकोक्ति	अर्थ
बिन माँगे मोती मिले, माँगे मिले न भीख	माँगने से स्वाभिमान घटता है

प्रसंग में प्रयोग

लोकोक्ति का प्रयोग **टिप्पणी की तरह** होता है — प्रायः वाक्य के अंत में, स्थिति का निचोड़ देते हुए।

वाक्य में

परीक्षा के एक दिन पहले पुस्तक खोलकर वह पछता रहा था — अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।

अपनी तैयारी की कमी छिपाकर वह प्रश्न-पत्र को कठिन बता रहा था; सच ही कहा है — नाच न जाने आँगन टेढ़ा।

उसने पुरानी साइकिल बेचकर उसी पैसे से नई ले ली — आम के आम गुठलियों के दाम।

ध्यान दें

लोकोक्ति को **बदलिए नहीं**। मुहावरे की क्रिया वाक्य के अनुसार बदलती है, पर लोकोक्ति ज्यों की त्यों आती है। *घर के भेदी ने लंका ढा दी* लिखना उसे मुहावरे जैसा बना देता है — लोकोक्ति के रूप में वह *घर का भेदी लंका ढाए* ही रहेगी।

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

किसी कथन के मुहावरा या लोकोक्ति होने का सरल परीक्षण क्या है?

उत्तर यह देखिए कि वह अकेला पूरा वाक्य बनता है या नहीं। “नाक में दम करना” अधूरा है, अतः मुहावरा। “नाच न जाने आँगन टेढ़ा” पूरा वाक्य है, अतः लोकोक्ति।

“थोथा चना बाजे घना” का अर्थ लिखिए।

उत्तर जिसमें गुण या ज्ञान कम होता है, वही सबसे अधिक बखान और शोर करता है।

“घर का भेदी लंका ढाए” किस स्थिति पर कही जाएगी?

उत्तर जब अपने ही पक्ष के किसी व्यक्ति के भेद खोल देने से बड़ा नुक़सान हो जाए।

“आम के आम गुठलियों के दाम” का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर एक ही काम से दोहरा लाभ मिल जाना — मुख्य लाभ भी और उसके साथ अतिरिक्त लाभ भी।

लोकोक्ति का रूप वाक्य के अनुसार क्यों नहीं बदला जाता?

उत्तर क्योंकि लोकोक्ति स्वयं एक पूर्ण और रूढ़ कथन है, वाक्य का अंश नहीं। उसे बदल देने पर वह लोकोक्ति न रहकर मुहावरे जैसी हो जाती है।

काव्य का सौंदर्य — रस, छंद, अलंकार और शब्द शक्ति।

काव्य और अलंकार *(POETICS)*

रस *(Aesthetic Sentiment)*

काव्य पढ़ने या सुनने पर पाठक को जो आनंद मिलता है, वही रस है। इसके चार अंग और ग्यारह भेद हैं।

उन्नत गहन अध्ययन · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

काव्य को पढ़ने या सुनने से पाठक अथवा श्रोता को जिस आनंद की अनुभूति होती है, उसे रस कहते हैं।

काव्य पढ़ते समय पाठक के भीतर जो आनंद जागता है, भारतीय काव्यशास्त्र उसे **रस** कहता है। *रस* शब्द का अर्थ ही है — स्वाद।

रस को **काव्य की आत्मा** कहा गया है। भरतमुनि ने *नाट्यशास्त्र* में इसका सूत्र दिया —

भरतमुनि का सूत्र

विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः

अर्थात् विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी (संचारी) भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।

रस के अंग

रस अपने आप नहीं बनता। चार अंग मिलकर उसे बनाते हैं।

1. स्थायी भाव

पाठक के मन में जो भाव **स्थायी रूप से** विद्यमान रहता है और काव्य पढ़ने पर जाग उठता है। हर रस का अपना एक स्थायी भाव होता है, और यही रस की पहचान का सबसे पक्का आधार है।

2. विभाव

वे कारण जिनसे स्थायी भाव जागता है। इसके दो भेद हैं।

भेद	अर्थ	उदाहरण
आलंबन विभाव	जिसके कारण भाव जागे	नायक, नायिका, शत्रु
उद्दीपन विभाव	जो भाव को और भड़काए	चाँदनी, वन, संगीत, ललकार

3. अनुभाव

भाव जागने के बाद शरीर पर दिखाई देने वाली **बाहरी चेष्टाएँ** — कटाक्ष, मुस्कान, रोमांच, काँपना, मुख का लाल हो जाना।

4. संचारी भाव

वे भाव जो आते-जाते रहते हैं और स्थायी भाव को पुष्ट करते हैं — हर्ष, ग्लानि, चिंता, लज्जा, आवेग, उत्सुकता। इन्हें **व्यभिचारी भाव** भी कहते हैं; इनकी संख्या तैंतीस मानी गई है।

ध्यान दें

भाव और रस एक नहीं हैं। भाव **पात्र में** होता है, रस **पाठक में** जागता है। जब स्थायी भाव विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के संयोग से परिपक्व होकर आस्वाद्य बन जाता है, तब वह रस कहलाता है।

रस और स्थायी भाव

रस	स्थायी भाव
श्रृंगार	रति
हास्य	हास
करुण	शोक
रौद्र	क्रोध
वीर	उत्साह
भयानक	भय
बीभत्स	जुगुप्सा (घृणा)
अद्भुत	विस्मय
शांत	निर्वेद
वात्सल्य	वत्सल (संतान-विषयक रति)
भक्ति	देव-रति

ध्यान दें

मूल रूप से रस **नौ** माने गए थे — इसीलिए *नवरस* शब्द चलता है। बाद के आचार्यों ने **वात्सल्य** और **भक्ति** को जोड़कर संख्या ग्यारह कर दी। परीक्षा या विवेचन में यह बता देना उचित रहता है कि आप किस परंपरा के अनुसार गिन रहे हैं।

रसों का परिचय

1. श्रृंगार रस

नायक-नायिका के प्रेम का वर्णन। स्थायी भाव **रति**। इसके दो भेद हैं — **संयोग श्रृंगार** (मिलन) और **वियोग श्रृंगार** (विरह)।

> **काव्य से**
>
> *बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय।*
>
> यह संयोग श्रृंगार है।

इसे **रसराज** कहा जाता है, क्योंकि काव्य में इसका विस्तार सबसे अधिक हुआ है।

2. हास्य रस

विकृत वेश, वाणी या चेष्टा देखकर उत्पन्न हास। स्थायी भाव **हास**।

> **काव्य से**
>
> *तंबूरा ले मंच पर बैठे प्रेमप्रताप। खुले तार दो बज गए, खुला शीश का टाप।*

3. करुण रस

प्रिय के वियोग या अनिष्ट से उत्पन्न शोक। स्थायी भाव **शोक**।

> **काव्य से**
>
> *अभी तो मुकुट बँधा था माथ, हुए कल ही हल्दी के हाथ। खुली थी बस एक आँख की प्यास, चली फिर भी वह निष्ठुर रात।*

ध्यान दें

करुण और वियोग श्रृंगार में अंतर प्रायः पूछा जाता है। वियोग श्रृंगार में **पुनर्मिलन की आशा** बनी रहती है; करुण रस में वह आशा समाप्त हो चुकी होती है।

4. रौद्र रस

अपमान या अन्याय से उत्पन्न क्रोध। स्थायी भाव **क्रोध**।

> काव्य से
>
> *श्रीकृष्ण के सुन वचन अर्जुन क्षोभ से जलने लगे। सब शील अपना भूलकर करतल युगल मलने लगे।*

5. वीर रस

युद्ध, दान या धर्म में उत्साह। स्थायी भाव **उत्साह**।

> काव्य से
>
> *बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी। खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।*

6. भयानक रस

भयंकर दृश्य या आशंका से उत्पन्न भय। स्थायी भाव **भय**।

> काव्य से
>
> *एक ओर अजगरहिं लखि, एक ओर मृगराय। विकल बटोही बीच ही, पर्यो मूरछा खाय।*

7. बीभत्स रस

घृणित वस्तु के वर्णन से उत्पन्न जुगुप्सा। स्थायी भाव **जुगुप्सा**।

> **काव्य से**
>
> *सिर पर बैठ्यो काग आँख दोउ खात निकारत। खींचत जीभहिं स्यार अतिहि आनंद उर धारत।*

8. अद्भुत रस

असाधारण वस्तु देखकर उत्पन्न विस्मय। स्थायी भाव **विस्मय**।

> **काव्य से**
>
> *अखिल भुवन चर-अचर सब, हरि मुख में लखि मातु। चकित भई गद्गद् वचन, विकसित दृग पुलकातु।*

9. शांत रस

संसार की नश्वरता के बोध से उत्पन्न वैराग्य। स्थायी भाव **निर्वेद**।

> **काव्य से**
>
> *अब लौं नसानी, अब न नसैहौं। राम कृपा भव-निसा सिरानी, जागे फिरि न डसैहौं।*

10. वात्सल्य रस

संतान के प्रति स्नेह। स्थायी भाव **वत्सल**।

> **काव्य से**
>
> *किलकत कान्ह घुटुरुवन आवत। मनिमय कनक नंद के आँगन, बिंब पकरिबे धावत।*

11. भक्ति रस

ईश्वर के प्रति अनन्य अनुराग। स्थायी भाव **देव-रति**।

> **काव्य से**
>
> *राम जपु, राम जपु, राम जपु बावरे। घोर भव नीर-निधि, नाम निज नाव रे।*

रस पहचानने की विधि

पद्यांश देखकर रस बताने में यह क्रम काम आता है।

चरण	प्रश्न
1	पद्यांश में मूल भाव क्या है — प्रेम, क्रोध, शोक, उत्साह?
2	वही **स्थायी भाव** है; तालिका से उसका रस मिला लीजिए
3	आलंबन कौन है — किसके कारण यह भाव जागा?
4	अनुभाव क्या हैं — कौन-सी बाहरी चेष्टाएँ वर्णित हैं?

> **ध्यान दें**
>
> रस का निर्णय **विषय से नहीं, भाव से** होता है। युद्ध का वर्णन होने भर से वीर रस नहीं हो जाता — यदि वहाँ उत्साह के बजाय भय जागता हो तो वह भयानक रस होगा, और यदि घृणा जागे तो बीभत्स।

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

भाव और रस में क्या अंतर है?

उत्तर भाव पात्र में होता है और रस पाठक या श्रोता में जागता है। जब स्थायी भाव विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के संयोग से परिपक्व होकर आस्वाद्य बन जाता है, तब वह रस कहलाता है।

आलंबन और उद्दीपन विभाव में क्या अंतर है?

उत्तर आलंबन वह है जिसके कारण भाव जागता है — जैसे नायक, नायिका या शत्रु। उद्दीपन वह है जो जागे हुए भाव को और भड़काता है — जैसे चाँदनी, वन या ललकार।

करुण रस और वियोग शृंगार में भेद कैसे करेंगे?

उत्तर वियोग शृंगार में पुनर्मिलन की आशा शेष रहती है, जबकि करुण रस में वह आशा समाप्त हो चुकी होती है।

“बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी” — कौन-सा रस है और उसका स्थायी भाव क्या है?

उत्तर वीर रस, जिसका स्थायी भाव उत्साह है।

रस नौ हैं या ग्यारह?

उत्तर मूल रूप से नौ माने गए थे, इसीलिए “नवरस” शब्द प्रचलित है। बाद के आचार्यों ने वात्सल्य और भक्ति को जोड़कर संख्या ग्यारह कर दी।

क्या युद्ध का वर्णन होने पर रस सदा वीर ही होगा?

उत्तर नहीं। रस विषय से नहीं, जागने वाले भाव से तय होता है। यदि वहाँ उत्साह के स्थान पर भय जागे तो भयानक रस होगा और घृणा जागे तो बीभत्स।

छंद (Metre)

वर्ण, मात्रा, यति और गति के निश्चित नियमों में बँधी पद्य रचना को छंद कहते हैं।

उन्नत गहन अध्ययन · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

अक्षर, मात्रा, यति और गति के नियमों से बँधी हुई पद्य रचना को छंद कहते हैं।

गद्य को जहाँ चाहें तोड़ा जा सकता है, पद्य को नहीं। पद्य में पंक्ति कहाँ रुकेगी, कितनी लंबी होगी और किस लय में चलेगी — यह सब पहले से तय होता है। इसी नियम-बंधन को **छंद** कहते हैं।

छंद का शास्त्र **पिंगल** कहलाता है, और इसीलिए छंद-शास्त्र को *पिंगल शास्त्र* भी कहा जाता है।

छंद के अंग

अंग	अर्थ
वर्ण	एक अक्षर, चाहे उसकी मात्रा कुछ भी हो
मात्रा	उच्चारण में लगने वाला समय — लघु या गुरु
चरण	छंद की एक पंक्ति; प्रायः चार चरणों से छंद बनता है
यति	चरण के भीतर ठहरने का निश्चित स्थान
गति	पढ़ने का प्रवाह या लय
तुक	चरणों के अंत में समान ध्वनि
गण	तीन वर्णों का समूह, वर्णिक छंद में प्रयुक्त

मात्रा की गणना

यह पूरे छंद-शास्त्र की नींव है। लघु का चिह्न **।** और गुरु का चिह्न **ऽ** है।

मात्रा	कब	उदाहरण
लघु (1)	ह्रस्व स्वर वाला वर्ण	क, कि, कु
गुरु (2)	दीर्घ स्वर वाला वर्ण	का, की, कू, के, को

इसके बाद तीन नियम और लगते हैं, जिनसे लघु वर्ण गुरु हो जाता है:

नियम	उदाहरण
अनुस्वार लगा हो	*अं* गुरु है
विसर्ग लगा हो	*अः* गुरु है
संयुक्त वर्ण से पहले आया हो	*सत्य* में *स* गुरु हो जाता है

> **ध्यान दें**
>
> चंद्रबिंदु से मात्रा **नहीं बढ़ती**। *हँस* में *हँ* लघु ही रहेगा, जबकि *हंस* में *हं* गुरु होगा। यही एक छोटा भेद मात्रा-गणना की अधिकांश भूलों का कारण बनता है।

गण

वर्णिक छंदों में तीन-तीन वर्णों के समूह को **गण** कहते हैं। आठ गण होते हैं, और इन्हें याद रखने का सूत्र है — **यमाताराजभानसलगा**।

गण	रूप	उदाहरण
य	।ऽऽ	यमाता

गण	रूप	उदाहरण
मा	ऽऽऽ	मातारा
ता	ऽऽ।	ताराज
रा	ऽ।ऽ	राजभा
ज	।ऽ।	जभान
भा	ऽ।।	भानस
न	।।।	नसल
स	।।ऽ	सलगा

सूत्र का प्रयोग सरल है — जिस गण का रूप जानना हो, सूत्र में उस अक्षर से **तीन अक्षर** गिन लीजिए।

छंद के भेद

भेद	आधार
मात्रिक छंद	मात्राओं की गिनती
वर्णिक छंद	वर्णों की गिनती और गण-क्रम
मुक्त छंद	कोई निश्चित बंधन नहीं, केवल लय

प्रमुख मात्रिक छंद

1. दोहा

अर्धसम मात्रिक छंद। चार चरण; पहले और तीसरे चरण में **13** मात्राएँ, दूसरे और चौथे में **11**। कुल 24 मात्राएँ। तुक दूसरे और चौथे चरण में मिलती है।

> **काव्य से**
>
> *रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।*
>
> *टूटे से फिर ना जुड़े, जुड़े गाँठ पड़ि जाय।*

2. सोरठा

दोहा का **उल्टा**। पहले और तीसरे चरण में **11** मात्राएँ, दूसरे और चौथे में **13**। तुक पहले और तीसरे चरण में मिलती है।

> **काव्य से**
>
> *कुंद इंदु सम देह, उमा रमन करुना अयन।*
>
> *जाहि दीन पर नेह, करहु कृपा मर्दन मयन।*

ध्यान दें

दोहा और सोरठा का संबंध याद रखने योग्य है — मात्राएँ वही हैं, केवल क्रम उलट गया है, और तुक का स्थान भी बदल गया है। दोहे की तुक सम चरणों में, सोरठे की विषम चरणों में।

3. चौपाई

सम मात्रिक छंद। चारों चरणों में **16-16** मात्राएँ। चरण के अंत में जगण और तगण वर्जित हैं।

काव्य से

बंदउँ गुरु पद पदुम परागा। सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।

4. रोला

सम मात्रिक छंद; चारों चरणों में **24** मात्राएँ, यति **11 और 13** पर।

5. कुंडलिया

विषम छंद — एक दोहा और एक रोला मिलकर बनता है, कुल **छह चरण**। दोहे का अंतिम शब्द रोले का पहला शब्द बनता है, और छंद जिस शब्द से आरंभ होता है उसी पर समाप्त भी होता है।

6. बरवै

अर्धसम मात्रिक; विषम चरणों में **12** और सम चरणों में **7** मात्राएँ।

प्रमुख वर्णिक छंद

छंद	वर्ण-विधान
कवित्त (मनहरण)	प्रत्येक चरण में 31 वर्ण, यति 16 और 15 पर
सवैया	22 से 26 वर्ण, गण-क्रम के अनुसार अनेक भेद
इंद्रवज्रा	11 वर्ण — ता ता ज गा गा

मुक्त छंद

जिसमें मात्रा या वर्ण का कोई निश्चित बंधन न हो, केवल **आंतरिक लय** शेष रहे। हिंदी में इसका प्रवर्तन सूर्यकांत त्रिपाठी *निराला* ने किया।

ध्यान दें

मुक्त छंद का अर्थ **छंदहीन** नहीं है। वहाँ बाहरी गणना हटती है, लय नहीं। जिस रचना में लय भी न हो, वह पद्य ही नहीं रहती।

सारांश

छंद	मात्रा-विधान
दोहा	13, 11, 13, 11
सोरठा	11, 13, 11, 13
चौपाई	16, 16, 16, 16
रोला	24 × 4, यति 11–13
बरवै	12, 7, 12, 7
कुंडलिया	दोहा + रोला = 6 चरण

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

मात्रिक और वर्णिक छंद में क्या अंतर है?

उत्तर मात्रिक छंद में मात्राओं की गिनती होती है, जबकि वर्णिक छंद में वर्णों की संख्या और गण-क्रम देखा जाता है।

दोहे का मात्रा-विधान क्या है?

उत्तर पहले और तीसरे चरण में 13 मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे चरण में 11 मात्राएँ — कुल 24 मात्राएँ।

सोरठा दोहे से किस प्रकार भिन्न है?

उत्तर सोरठे में मात्राओं का क्रम उल्टा होता है — विषम चरणों में 11 और सम चरणों में 13। तुक भी दोहे के विपरीत विषम चरणों में मिलती है।

“हँस” और “हंस” की मात्रा-गणना में क्या अंतर होगा?

उत्तर “हँस” में चंद्रबिंदु से मात्रा नहीं बढ़ती, अतः “हँ” लघु रहेगा। “हंस” में अनुस्वार के कारण “हं” गुरु हो जाएगा।

“यमाताराजभानसलगा” सूत्र किस काम आता है?

उत्तर आठों गणों का रूप याद रखने के लिए। जिस गण का रूप जानना हो, सूत्र में उस अक्षर से तीन अक्षर गिन लीजिए — जैसे “य” से यमाता, अर्थात् लघु गुरु गुरु।

क्या मुक्त छंद का अर्थ छंद का न होना है?

उत्तर नहीं। मुक्त छंद में मात्रा और वर्ण की बाहरी गणना नहीं होती, पर आंतरिक लय बनी रहती है। हिंदी में इसका प्रवर्तन निराला ने किया।

अलंकार *(Figure of Speech)*

काव्य की शोभा बढ़ाने वाले साधनों को अलंकार कहते हैं। ये मुख्यतः शब्दालंकार और अर्थालंकार हैं।

उन्नत गहन अध्ययन · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

काव्य की शोभा बढ़ाने वाले तत्त्वों को अलंकार कहते हैं।

जैसे आभूषण शरीर की शोभा बढ़ाते हैं, वैसे ही कुछ प्रयोग काव्य की शोभा बढ़ाते हैं। उन्हीं को **अलंकार** कहा गया है। *अलंकार* शब्द का अर्थ ही है — आभूषण।

अलंकार के दो मुख्य भेद हैं। यदि चमत्कार **शब्द** में हो तो शब्दालंकार, और यदि **अर्थ** में हो तो अर्थालंकार।

ध्यान दें

भेद पहचानने का निर्णायक परीक्षण: उस शब्द का **पर्यायवाची** रख दीजिए। यदि चमत्कार समाप्त हो जाए, तो वह **शब्दालंकार** था। यदि चमत्कार बना रहे, तो **अर्थालंकार**।

शब्दालंकार

1. अनुप्रास अलंकार

जहाँ किसी **वर्ण की आवृत्ति** बार-बार हो।

काव्य से

चारु चंद्र की चंचल किरणें खेल रहीं हैं जल-थल में।

यहाँ *च* वर्ण की आवृत्ति हुई है।

तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए।

यहाँ *त* वर्ण बार-बार आया है।

2. यमक अलंकार

जहाँ **एक ही शब्द** एक से अधिक बार आए, पर हर बार उसका **अर्थ भिन्न** हो।

काव्य से

कनक कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय।

पहला *कनक* = धतूरा, दूसरा *कनक* = सोना।

तीन बेर खाती थीं, वे तीन बेर खाती हैं।

पहला *बेर* = बार, दूसरा *बेर* = फल।

3. श्लेष अलंकार

जहाँ एक ही शब्द **एक ही बार** आए, पर उसके **अनेक अर्थ** निकलें।

काव्य से

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।

यहाँ *पानी* के तीन अर्थ हैं — मोती के लिए *चमक*, मनुष्य के लिए *सम्मान*, और चूने के लिए *जल*।

ध्यान दें

यमक और श्लेष में अंतर: यमक में शब्द **कई बार** आता है और हर बार अर्थ अलग होता है। श्लेष में शब्द **एक ही बार** आता है, पर उसी से कई अर्थ निकलते हैं।

अर्थालंकार

इनसे पहले दो पारिभाषिक शब्द जान लेना आवश्यक है:

शब्द	अर्थ
उपमेय	जिसकी तुलना की जाए
उपमान	जिससे तुलना की जाए
साधारण धर्म	वह गुण जो दोनों में समान हो
वाचक शब्द	तुलना सूचक शब्द — सा, सम, जैसा

1. उपमा अलंकार

जहाँ उपमेय की तुलना उपमान से की जाए, और **चारों** अंग उपस्थित हों।

> **काव्य से**
>
> *पीपर पात सरिस मन डोला।*
>
> उपमेय — *मन*, उपमान — *पीपर पात*, साधारण धर्म — *डोलना*, वाचक शब्द — *सरिस*।

2. रूपक अलंकार

जहाँ उपमेय पर उपमान का **आरोप** कर दिया जाए — अर्थात् दोनों को एक ही मान लिया जाए। यहाँ *सा, जैसा* जैसा कोई वाचक शब्द नहीं होता।

> **काव्य से**
>
> *चरण-कमल बंदौं हरि राई।*
>
> चरणों को कमल *जैसा* नहीं कहा — चरण को कमल ही कह दिया।

ध्यान दें

उपमा और रूपक का सरल भेद: उपमा में *सा, सम, जैसा, सरिस* जैसा **वाचक शब्द रहता है**; रूपक में वह **नहीं होता**, क्योंकि वहाँ तुलना नहीं, अभेद है।

3. उत्प्रेक्षा अलंकार

जहाँ उपमेय में उपमान की **संभावना** व्यक्त की जाए। पहचान *मनु, मानो, जनु, जानो, ज्यों* से होती है।

> **काव्य से**
>
> *सोहत ओढ़ैं पीतु पटु, स्याम सलौने गात। मनहुँ नीलमनि सैल पर, आतपु परयो प्रभात।*
>
> *मनहुँ* शब्द संभावना व्यक्त कर रहा है।

4. अतिशयोक्ति अलंकार

जहाँ किसी बात को **बहुत बढ़ा-चढ़ाकर** कहा जाए।

> **काव्य से**
>
> *हनुमान की पूँछ में लगन न पाई आग। लंका सिगरी जल गई, गए निसाचर भाग।*
>
> आग लगने से पहले ही लंका का जल जाना — असंभव अतिशयोक्ति।

5. मानवीकरण अलंकार

जहाँ **जड़ वस्तुओं या प्रकृति** पर मनुष्य के भाव और क्रियाओं का आरोप हो।

> **काव्य से**
>
> *दिवसावसान का समय, मेघमय आसमान से उतर रही है वह संध्या-सुंदरी परी-सी धीरे-धीरे।*
>
> संध्या को एक स्त्री के रूप में चित्रित किया गया है।

6. अन्योक्ति अलंकार

जहाँ **किसी और के बहाने** किसी और से बात कही जाए।

> काव्य से
>
> *फूली फुलवारी चहुँ ओर, मालिन तू क्यों उदास?*
>
> सीधे किसी व्यक्ति से न कहकर, मालिन के बहाने बात कही गई है।

पहचान का सारांश

अलंकार	पहचान चिह्न
अनुप्रास	एक ही वर्ण की आवृत्ति
यमक	एक शब्द कई बार, अर्थ अलग
श्लेष	एक शब्द एक बार, अर्थ अनेक
उपमा	सा, सम, जैसा, सरिस
रूपक	वाचक शब्द नहीं, अभेद
उत्प्रेक्षा	मनु, मानो, जनु, ज्यों
अतिशयोक्ति	बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कथन
मानवीकरण	प्रकृति में मानव-भाव

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

“चारु चंद्र की चंचल किरणें” — कौन-सा अलंकार है?

उत्तर अनुप्रास अलंकार, क्योंकि “च” वर्ण की बार-बार आवृत्ति हुई है।

यमक और श्लेष में मूल अंतर क्या है?

उत्तर यमक में एक ही शब्द कई बार आता है और हर बार उसका अर्थ भिन्न होता है। श्लेष में शब्द केवल एक बार आता है, पर उसी से अनेक अर्थ निकलते हैं।

“चरण-कमल बंदौं हरि राई” में कौन-सा अलंकार है और क्यों?

उत्तर रूपक अलंकार, क्योंकि चरणों को कमल “जैसा” नहीं कहा गया, बल्कि चरण को कमल ही कह दिया गया है — कोई वाचक शब्द नहीं है।

उपमा के चार अंग कौन-से हैं?

उत्तर उपमेय, उपमान, साधारण धर्म और वाचक शब्द।

शब्दालंकार और अर्थालंकार में भेद करने का सरल परीक्षण क्या है?

उत्तर उस शब्द का पर्यायवाची रख दीजिए। यदि चमत्कार समाप्त हो जाए तो शब्दालंकार, और यदि बना रहे तो अर्थालंकार।

शब्द शक्ति *(Word Power)*

शब्द की वह सामर्थ्य जिससे अर्थ का बोध होता है — अभिधा, लक्षणा और व्यंजना।

उन्नत गहन अध्ययन · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

शब्द की जिस सामर्थ्य से उसके अर्थ का बोध होता है, उसे शब्द शक्ति कहते हैं।

वह शेर है — इस वाक्य में *शेर* का अर्थ जंगल का पशु नहीं, साहसी व्यक्ति है। पर पाठक तक यह अर्थ पहुँचा कैसे? शब्द वही रहा, अर्थ बदल गया।

शब्द की जिस सामर्थ्य से अर्थ का बोध होता है, उसे **शब्द शक्ति** कहते हैं। इसके तीन भेद हैं — **अभिधा**, **लक्षणा** और **व्यंजना**।

शक्ति	अर्थ का नाम
अभिधा	वाच्यार्थ या मुख्यार्थ
लक्षणा	लक्ष्यार्थ
व्यंजना	व्यंग्यार्थ

1. अभिधा

जिस शक्ति से शब्द का **सीधा, कोशगत अर्थ** समझ में आता है। यह सबसे प्रथम और सबसे सामान्य शक्ति है; साधारण बोलचाल इसी पर चलती है।

वाक्य में

> *राम ने आम खाया।*
>
> यहाँ *आम* का अर्थ फल ही है — न कम, न अधिक। यह अभिधा है।

अभिधा जिस अर्थ को देती है, उसे **वाच्यार्थ** या **मुख्यार्थ** कहते हैं।

2. लक्षणा

जब मुख्यार्थ **बाधित** हो जाए — अर्थात् सीधा अर्थ लेने पर वाक्य असंगत हो जाए — तब मुख्यार्थ से जुड़ा कोई दूसरा अर्थ लिया जाता है। यही **लक्षणा** है, और वह दूसरा अर्थ **लक्ष्यार्थ**।

> वाक्य में
>
> *मेरा घर गंगा में है।*
>
> सीधा अर्थ लें तो घर नदी के जल में होगा — असंगत। अतः लक्ष्यार्थ लिया जाएगा: घर **गंगा के तट पर** है। साथ ही एक प्रयोजन भी सधता है — तट की पवित्रता और शीतलता का बोध।

> वाक्य में
>
> *वह गधा है।*
>
> मुख्यार्थ बाधित है, क्योंकि कोई व्यक्ति पशु नहीं हो सकता। लक्ष्यार्थ — वह मूर्ख है।

लक्षणा के दो मुख्य भेद हैं।

भेद	आधार	उदाहरण
रूढ़ा लक्षणा	प्रयोग रूढ़ि से चला आ रहा हो	*कुशल* — मूलतः कुश काटने में निपुण, अब हर निपुण
प्रयोजनवती लक्षणा	किसी विशेष प्रयोजन से अर्थ बदला जाए	*गंगा में घर* — पवित्रता का प्रयोजन

ध्यान दें

मुहावरे लक्षणा पर ही टिके हैं। *नाक कटना* में नाक का कटना मुख्यार्थ है, जो बाधित है; अतः लक्ष्यार्थ लिया जाता है — प्रतिष्ठा जाना। इसीलिए मुहावरों का शाब्दिक अनुवाद कभी सही नहीं बैठता।

3. व्यंजना

जहाँ वाच्यार्थ और लक्ष्यार्थ दोनों से हटकर कोई **तीसरा अर्थ ध्वनित** हो, वहाँ व्यंजना शक्ति होती है। वह अर्थ कहा नहीं जाता, **सूझता** है।

वाक्य में

सूरज डूब गया।

एक राही से कहा जाए तो अर्थ है — अब ठहर जाइए।

एक श्रमिक से कहा जाए तो अर्थ है — काम बंद कीजिए।

एक प्रतीक्षारत माता से कहा जाए तो अर्थ है — बच्चा अब तक नहीं लौटा।

शब्द वही हैं; अर्थ प्रसंग से ध्वनित हो रहा है। यही व्यंजना है।

व्यंजना से निकलने वाले अर्थ को **व्यंग्यार्थ** कहते हैं। आचार्य मम्मट ने व्यंग्यार्थ को ही **ध्वनि** कहकर उसे काव्य की आत्मा माना।

तीनों का भेद एक ही वाक्य से

वाक्य	शक्ति	अर्थ
रात हो गई।	अभिधा	रात्रि का समय आ गया
वह सिंह है।	लक्षणा	वह वीर है

वाक्य	शक्ति	अर्थ
रात हो गई। (अतिथि से)	व्यंजना	अब आपको चलना चाहिए

ध्यान दें

क्रम उलटा नहीं जा सकता। पहले अभिधा का प्रयत्न होता है; **वह बाधित हो तभी** लक्षणा की ओर जाते हैं; और लक्षणा से भी जब कुछ शेष रह जाए, तब व्यंजना आती है। इसलिए व्यंजना को *सबसे गहरी* और अभिधा को *सबसे प्रथम* शक्ति कहा जाता है।

काव्य में महत्त्व

शक्ति	काव्य में भूमिका
अभिधा	सूचना देती है — गद्य और विवरण का आधार
लक्षणा	मुहावरे, प्रतीक और रूपक इसी से चलते हैं
व्यंजना	ध्वनि, अलंकार की चमत्कृति और रस की अनुभूति इसी से

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

शब्द शक्ति किसे कहते हैं और उसके कितने भेद हैं?

उत्तर शब्द की जिस सामर्थ्य से उसके अर्थ का बोध होता है, उसे शब्द शक्ति कहते हैं। इसके तीन भेद हैं — अभिधा, लक्षणा और व्यंजना।

“मेरा घर गंगा में है” — इसमें कौन-सी शब्द शक्ति है और क्यों?

उत्तर लक्षणा। मुख्यार्थ बाधित है, क्योंकि घर जल में नहीं हो सकता; अतः लक्ष्यार्थ लिया जाता है — घर गंगा के तट पर है। साथ ही पवित्रता और शीतलता का प्रयोजन भी सधता है।

अभिधा, लक्षणा और व्यंजना से मिलने वाले अर्थों के नाम बताइए।

उत्तर क्रमशः वाच्यार्थ (मुख्यार्थ), लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ।

मुहावरों का संबंध किस शब्द शक्ति से है?

उत्तर लक्षणा से। मुहावरे में मुख्यार्थ बाधित होता है और लक्ष्यार्थ लिया जाता है, जैसे “नाक कटना” का अर्थ प्रतिष्ठा जाना।

अतिथि से कहा गया “रात हो गई” किस शक्ति का उदाहरण है?

उत्तर व्यंजना का। यहाँ न वाच्यार्थ पर्याप्त है और न लक्ष्यार्थ; प्रसंग से तीसरा अर्थ ध्वनित होता है — अब आपको चलना चाहिए।

तीनों शब्द शक्तियों का प्रयोग किस क्रम में होता है?

उत्तर पहले अभिधा, उसके बाधित होने पर लक्षणा, और लक्षणा से भी कुछ शेष रह जाने पर व्यंजना। यह क्रम उलटा नहीं जा सकता।

लिखने की कला — निबंध, पत्र, संवाद, अनुच्छेद और संक्षेपण।

रचना (COMPOSITION)

निबंध लेखन *(Essay Writing)*

किसी विषय पर क्रमबद्ध, सुगठित और विचारपूर्ण गद्य रचना — जिसकी नींव रूपरेखा है।

मध्यम विस्तृत विवेचन · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

किसी एक विषय पर क्रमबद्ध, सुसंबद्ध और विचारपूर्ण ढंग से लिखी गई गद्य रचना को निबंध कहते हैं।

निबंध शब्द का अर्थ है — **भली भाँति बँधा हुआ**। यही इसकी कसौटी भी है: विषय पर जो कुछ लिखा जाए, वह एक सूत्र में बँधा दिखाई दे।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने निबंध को **गद्य की कसौटी** कहा है, क्योंकि इसमें लेखक की भाषा, विचार और संगठन — तीनों एक साथ परखे जाते हैं।

निबंध के तीन अंग

अंग	काम	अनुमानित विस्तार
प्रस्तावना	विषय का परिचय और पाठक की रुचि जगाना	लगभग छठा भाग
विषय-विस्तार	मुख्य विचार, तर्क, उदाहरण, पक्ष-विपक्ष	लगभग दो-तिहाई

अंग	काम	अनुमानित विस्तार
उपसंहार	निष्कर्ष और अंतिम संदेश	लगभग छठा भाग

ध्यान दें

सबसे आम भूल यह है कि **प्रस्तावना में ही सब कुछ कह दिया जाता है** और शेष निबंध उसी को दोहराता रहता है। प्रस्तावना विषय का द्वार है, पूरा भवन नहीं। इसी तरह उपसंहार अचानक नहीं आना चाहिए — वह विषय-विस्तार से निकलता हुआ दिखे।

निबंध के प्रकार

प्रकार	विषय	उदाहरण
वर्णनात्मक	वस्तु, स्थान या दृश्य	*हिमालय, मेरा विद्यालय*
विवरणात्मक	घटना या यात्रा	*एक यात्रा का अनुभव*
विचारात्मक	विचार या समस्या	*पर्यावरण संरक्षण, शिक्षा का उद्देश्य*
भावात्मक	भाव और अनुभूति	*वर्षा ऋतु, माँ*
आत्मकथात्मक	किसी वस्तु की आत्मकथा	*एक नदी की आत्मकथा*

विचारात्मक निबंध सबसे कठिन माने जाते हैं, क्योंकि उनमें केवल वर्णन नहीं, **तर्क का क्रम** भी सिद्ध करना पड़ता है।

रूपरेखा — निबंध की नींव

लिखने से पहले पाँच से सात बिंदुओं की रूपरेखा बना लेना आधा निबंध पूरा कर देता है। इससे दो लाभ होते हैं — विषय से भटकाव नहीं होता, और विस्तार संतुलित रहता है।

नमूना रूपरेखा — पर्यावरण संरक्षण

1. प्रस्तावना — पर्यावरण का अर्थ और मनुष्य से उसका संबंध
2. बिगड़ते पर्यावरण के रूप — वायु, जल और ध्वनि प्रदूषण
3. कारण — औद्योगीकरण, वन-कटाव, बढ़ती जनसंख्या
4. परिणाम — ऋतु-चक्र में परिवर्तन, रोग, जल-संकट
5. समाधान — वृक्षारोपण, जल-संचय, वैकल्पिक ऊर्जा
6. नागरिक का दायित्व
7. उपसंहार — संरक्षण एक विकल्प नहीं, आवश्यकता है

भाषा और शैली

नियम	कारण
एक अनुच्छेद में एक ही मुख्य विचार	पाठक को क्रम पकड़ने में सुविधा
वाक्य छोटे और स्पष्ट	लंबे वाक्य अर्थ को धुँधला करते हैं
सूक्ति, दोहा या आँकड़ा यथास्थान	कथन को प्रमाण मिलता है
पुनरुक्ति से बचाव	पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग कीजिए
अंत में निष्कर्ष, नया तर्क नहीं	उपसंहार बहस खोलने का स्थान नहीं है

ध्यान दें

उद्धरण **सजावट नहीं, प्रमाण** होते हैं। जिस दोहे या सूक्ति का विषय से सीधा संबंध न हो, उसे जोड़ने से निबंध कमज़ोर होता है, सशक्त नहीं।

एक प्रस्तावना का नमूना

> **नमूना प्रस्तावना**
>
> मनुष्य ने जितनी तेज़ी से प्रकृति पर विजय पाई है, उतनी ही तेज़ी से उसने अपना आधार भी काटा है। जिस वायु से वह साँस लेता है और जिस जल से जीवन पाता है, वही आज संकट में है। पर्यावरण संरक्षण इसलिए कोई आदर्शवादी कल्पना नहीं, आने वाली पीढ़ियों के प्रति हमारा सीधा उत्तरदायित्व है।

ध्यान दीजिए कि यह प्रस्तावना विषय की **समस्या** रखती है, समाधान नहीं देती। समाधान विषय-विस्तार में आएगा।

बचने योग्य दोष

दोष	उदाहरण
विषयांतर	*विज्ञान के लाभ* लिखते हुए विद्यालय की दिनचर्या बताने लगना
असंतुलन	पाँच पृष्ठ में तीन पृष्ठ की भूमिका
अत्यधिक अलंकृत भाषा	विचारात्मक निबंध में काव्यात्मक उड़ान
अनुच्छेद-विहीन लेखन	पूरा निबंध एक ही खंड में
अधूरा उपसंहार	निबंध का बीच में ही समाप्त हो जाना

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

निबंध के तीन अंग कौन-से हैं?

उत्तर प्रस्तावना, विषय-विस्तार और उपसंहार।

निबंध लिखने से पहले रूपरेखा बनाने के क्या लाभ हैं?

उत्तर रूपरेखा से विषय से भटकाव नहीं होता और विस्तार संतुलित रहता है — कोई बिंदु अधूरा नहीं छूटता और कोई अनावश्यक रूप से लंबा नहीं होता।

“एक नदी की आत्मकथा” किस प्रकार का निबंध है?

उत्तर आत्मकथात्मक निबंध, जिसमें किसी वस्तु को वक्ता बनाकर उसकी दृष्टि से विषय प्रस्तुत किया जाता है।

प्रस्तावना लिखते समय सबसे आम भूल कौन-सी होती है?

उत्तर प्रस्तावना में ही पूरा विषय कह देना, जिससे शेष निबंध उसी की पुनरावृत्ति बनकर रह जाता है।

उपसंहार में नया तर्क क्यों नहीं देना चाहिए?

उत्तर क्योंकि उपसंहार का काम पूरे विवेचन का निष्कर्ष देना है। वहाँ नया तर्क उठाने से निबंध पूर्ण होने के बजाय अधूरा लगने लगता है।

पत्र लेखन *(Letter Writing)*

औपचारिक और अनौपचारिक — दो प्रकार के पत्र, जिनके अंग, क्रम और भाषा अलग-अलग नियमों से बँधे हैं।

आधार आरंभिक अवधारणा · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

किसी व्यक्ति, संस्था या अधिकारी तक अपनी बात लिखित रूप में निश्चित प्रारूप के अनुसार पहुँचाने की रचना को पत्र कहते हैं।

पत्र वह रचना है जिसमें **पाने वाला सामने नहीं होता**। इसीलिए उसका प्रारूप इतना निश्चित है — जो बात आमने-सामने स्वर और हाव-भाव से स्पष्ट हो जाती, वह पत्र में क्रम और शब्द-चयन से स्पष्ट करनी पड़ती है।

पत्र दो प्रकार के होते हैं।

प्रकार	किसे	भाषा
औपचारिक	अधिकारी, संपादक, प्रधानाचार्य, संस्था	संयत, विषय-केंद्रित
अनौपचारिक	माता-पिता, मित्र, संबंधी	सहज, आत्मीय

औपचारिक पत्र के अंग

क्रम इसी तरह रहता है:

क्रम	अंग	उदाहरण
1	प्रेषक का पता	सेवा में लिखने से पहले अपना पता

क्रम	अंग	उदाहरण
2	दिनांक	15 सितंबर 2026
3	पाने वाले का पद और पता	सेवा में, प्रधानाचार्य महोदय...
4	विषय	एक पंक्ति में पत्र का प्रयोजन
5	संबोधन	महोदय / महोदया
6	विषय-वस्तु	दो या तीन अनुच्छेद
7	समापन	सधन्यवाद / भवदीय
8	हस्ताक्षर और विवरण	नाम, कक्षा, अनुक्रमांक

ध्यान दें

विषय एक ही पंक्ति में लिखिए। विषय पत्र का सार नहीं, उसका शीर्षक है। *विषय — तीन दिन के अवकाश हेतु प्रार्थना* पर्याप्त है; वहीं कारण और विवरण लिख देना प्रारूप की भूल है।

औपचारिक पत्र का नमूना

नमूना — अवकाश के लिए प्रार्थना पत्र

सेवा में,

प्रधानाचार्य महोदय,

राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय,

नई दिल्ली

दिनांक — 15 सितंबर 2026

विषय — तीन दिन के अवकाश हेतु प्रार्थना पत्र

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मुझे तीव्र ज्वर हो जाने के कारण चिकित्सक ने तीन दिन विश्राम करने की सलाह दी है। इस कारण मैं 16 सितंबर से 18 सितंबर तक विद्यालय आने में असमर्थ रहूँगा।

अतः आपसे प्रार्थना है कि मुझे उक्त अवधि का अवकाश प्रदान करने की कृपा करें। मैं स्वस्थ होते ही विद्यालय उपस्थित हो जाऊँगा और छूटा हुआ कार्य पूर्ण कर लूँगा।

सधन्यवाद

भवदीय

मोहन शर्मा

कक्षा — दसवीं ‘अ’

अनुक्रमांक — 24

अनौपचारिक पत्र के अंग

यहाँ प्रारूप हल्का होता है और *विषय* नहीं लिखा जाता।

क्रम	अंग	उदाहरण
1	अपना पता और दिनांक	—
2	संबोधन	पूज्य पिता जी / प्रिय मित्र
3	अभिवादन	सादर प्रणाम / नमस्ते
4	विषय-वस्तु	कुशल-क्षेम, मुख्य बात, समाचार
5	समापन	आपका आज्ञाकारी / तुम्हारा मित्र
6	नाम	—

संबोधन और समापन

संबोधन और समापन का मेल ग़लत हो जाना सबसे आम भूल है। यह तालिका उसे रोक देती है।

किसे	संबोधन	समापन
अधिकारी, प्रधानाचार्य	महोदय / महोदया	भवदीय / भवदीया
संपादक	महोदय	भवदीय
माता-पिता, बड़े	पूज्य / आदरणीय	आपका आज्ञाकारी पुत्र
भाई-बहन, मित्र	प्रिय	तुम्हारा मित्र / स्नेही
छोटों को	प्रिय / चिरंजीव	शुभचिंतक / तुम्हारा भाई

ध्यान दें

बड़ों को *प्रिय* और मित्र को *आदरणीय* लिखना प्रारूप की भूल है। इसी तरह मित्र के पत्र में *भवदीय* नहीं आता — वह औपचारिक समापन है।

अनौपचारिक पत्र का नमूना

नमूना — मित्र को बधाई पत्र

24, गांधी नगर, जयपुर

दिनांक — 15 सितंबर 2026

प्रिय मित्र अनुज,

नमस्ते।

तुम्हारा पत्र मिला। यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि तुमने अंतर-विद्यालय वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। मुझे पहले से विश्वास था कि तुम्हारा परिश्रम रंग लाएगा।

> घर पर सब कुशल हैं। अगली छुट्टियों में तुम अवश्य आना; बहुत-सी बातें करनी हैं। माता जी और पिता जी को मेरा प्रणाम कहना।
>
> तुम्हारा मित्र
>
> राहुल

भाषा संबंधी नियम

नियम	कारण
औपचारिक पत्र में भावुक भाषा नहीं	वहाँ प्रयोजन मुख्य है, भाव नहीं
एक पत्र, एक प्रयोजन	दो असंबद्ध विषय मिलाने से निर्णय टलता है
छोटे अनुच्छेद	पाने वाला शीघ्र समझ पाता है
निवेदन विनम्र, याचना नहीं	*कृपा करें* पर्याप्त है
अनौपचारिक में कुशल-क्षेम पहले	सीधे काम की बात रूखी लगती है

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

औपचारिक और अनौपचारिक पत्र में मूल अंतर क्या है?

उत्तर औपचारिक पत्र अधिकारियों, संस्थाओं या संपादक को लिखा जाता है और उसकी भाषा संयत तथा विषय-केंद्रित होती है। अनौपचारिक पत्र परिजनों और मित्रों को लिखा जाता है और उसकी भाषा सहज तथा आत्मीय होती है।

विषय-पंक्ति कितनी लंबी होनी चाहिए?

उत्तर एक ही पंक्ति। विषय पत्र का शीर्षक है, सार नहीं — कारण और विवरण विषय-वस्तु में आएँगे।

प्रधानाचार्य को लिखे पत्र में संबोधन और समापन क्या होगा?

उत्तर संबोधन “महोदय” और समापन “भवदीय”।

मित्र को लिखे पत्र में “भवदीय” लिखना क्यों अनुचित है?

उत्तर क्योंकि “भवदीय” औपचारिक समापन है। मित्र के पत्र में “तुम्हारा मित्र” या “स्नेही” उपयुक्त रहता है।

अनौपचारिक पत्र में “विषय” क्यों नहीं लिखा जाता?

उत्तर क्योंकि विषय-पंक्ति कार्यालयी व्यवस्था का अंग है, जिससे पत्र सही विभाग तक पहुँचे। निजी पत्र में उसकी कोई भूमिका नहीं होती।

संवाद लेखन *(Dialogue Writing)*

दो या अधिक पात्रों की बातचीत को लिखित रूप देना, जिसमें भाषा पात्र और प्रसंग के अनुसार बदलती है।

आधार · आरंभिक अवधारणा · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच होने वाली बातचीत को क्रमबद्ध लिखित रूप में प्रस्तुत करना संवाद लेखन कहलाता है।

संवाद वह रचना है जो **सुनाई देनी चाहिए**। पढ़ते समय लगे कि दो लोग सचमुच बोल रहे हैं — यही उसकी सफलता की कसौटी है।

इसीलिए संवाद में वैसी भाषा नहीं चलती जैसी निबंध में चलती है। निबंध की भाषा सुगठित होती है, संवाद की भाषा **स्वाभाविक**।

प्रारूप

प्रारूप सरल है और वही सबसे अधिक भुला दिया जाता है:

नियम	रूप
पात्र का नाम बाईं ओर	मोहन —
नाम के बाद योजक या अपूर्ण विराम	मोहन — / मोहन :
उसके आगे उसका कथन	मोहन — तुम कब आए?

नियम	रूप
हर नया कथन नई पंक्ति में	—
कोष्ठक में केवल आवश्यक चेष्टा	(हँसते हुए)

ध्यान दें

संवाद में **कथावाचक नहीं होता**। *मोहन ने कहा कि वह थक गया है* संवाद नहीं, वर्णन है। संवाद में वही पंक्ति इस रूप में आएगी — *मोहन — बहुत थक गया हूँ।*

संवाद लेखन के नियम

नियम	कारण
वाक्य छोटे रखिए	बोलचाल में लंबे वाक्य नहीं बोले जाते
भाषा पात्र के अनुसार	बालक, किसान और अधिकारी एक जैसी भाषा नहीं बोलते
प्रसंग आरंभ में ही स्पष्ट हो	पाठक को स्थिति तुरंत समझ आनी चाहिए
क्रम टूटे नहीं	एक पात्र का उत्तर दूसरे के प्रश्न से जुड़ा हो
आरंभ और अंत निश्चित	बातचीत कहीं से शुरू होकर कहीं पहुँचे
चेष्टाएँ सीमित मात्रा में	हर पंक्ति में कोष्ठक संवाद को बोझिल कर देता है

ध्यान दें

भाषा का स्तर पात्र से तय होता है, लेखक से नहीं। यदि पात्र ग्रामीण है, तो उसके मुँह से *तत्संबंधी परिप्रेक्ष्य में* जैसे शब्द निकालना संवाद को कृत्रिम बना देता है।

नमूना संवाद — एक

नमूना — दो मित्रों के बीच

राहुल — अरे अनुज! इतने दिनों बाद? कहाँ थे तुम?

अनुज — गाँव गया था। दादा जी की तबीयत ठीक नहीं थी।

राहुल — अब कैसे हैं वे?

अनुज — अब ठीक हैं। दवा चल रही है, पर चलने-फिरने में अब भी कष्ट होता है।

राहुल — (चिंतित होकर) मुझे बता दिया होता, मैं भी साथ चलता।

अनुज — अचानक जाना पड़ा था। लौटते ही तुम्हें बताने ही आ रहा था।

राहुल — अच्छा किया। अब बताओ, पढ़ाई का क्या हुआ?

अनुज — वहीं ले गया था पुस्तकें। दो अध्याय पूरे कर लिए हैं।

राहुल — तब तो चिंता की कोई बात नहीं। शेष मैं समझा दूँगा।

ध्यान दीजिए — इसमें प्रश्न और उत्तर आपस में जुड़े हैं, और अंत में बातचीत एक निष्कर्ष तक पहुँचती है। यही *क्रम* है।

नमूना संवाद — दो

नमूना — दुकानदार और ग्राहक

ग्राहक — भाई साहब, यह पुस्तक दिखाइए ज़रा।

दुकानदार — यह लीजिए। हिंदी व्याकरण की नई पुस्तक है।

ग्राहक — मूल्य कितना है?

दुकानदार — दो सौ चालीस रुपये।

ग्राहक — कुछ कम कीजिए। पिछली बार भी मैंने यहीं से ली थी।

दुकानदार — मूल्य तो मुद्रित है, पर आप पुराने ग्राहक हैं — दो सौ बीस दे दीजिए।

ग्राहक — ठीक है। एक अभ्यास-पुस्तिका भी साथ रख दीजिए।

बचने योग्य दोष

दोष	उदाहरण
वर्णन घुस आना	*तभी बाहर वर्षा होने लगी और वह उदास हो गया*
सब पात्रों की एक जैसी भाषा	बालक और शिक्षक का एक-सा शब्द-चयन
कथन अत्यधिक लंबे	एक पात्र का आठ पंक्तियों का भाषण
अधूरा अंत	बातचीत बीच में ही समाप्त
अनावश्यक कोष्ठक	हर पंक्ति में चेष्टा लिखना

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

संवाद लेखन की सफलता की कसौटी क्या है?

उत्तर यह कि पढ़ते समय लगे कि पात्र सचमुच बोल रहे हैं — अर्थात् भाषा स्वाभाविक और बोलचाल जैसी हो।

"मोहन ने कहा कि वह थक गया है" — यह संवाद क्यों नहीं है, और इसे संवाद रूप में कैसे लिखेंगे?

उत्तर यह कथावाचक का वर्णन है, संवाद नहीं। संवाद रूप होगा — मोहन — बहुत थक गया हूँ।

संवाद में पात्रों की भाषा कैसे तय होती है?

उत्तर पात्र से, लेखक से नहीं। बालक, किसान और अधिकारी की भाषा अलग-अलग होगी; सबके मुँह से एक जैसे शब्द निकालना संवाद को कृत्रिम बना देता है।

कोष्ठक का प्रयोग संवाद में किसलिए होता है?

उत्तर केवल आवश्यक चेष्टा या भाव बताने के लिए, जैसे (हँसते हुए) या (चिंतित होकर)। हर पंक्ति में कोष्ठक लगाना संवाद को बोझिल कर देता है।

अच्छे संवाद में "क्रम" से क्या अभिप्राय है?

उत्तर यह कि एक पात्र का उत्तर दूसरे के प्रश्न या कथन से जुड़ा हो, और बातचीत किसी आरंभ से चलकर किसी निष्कर्ष तक पहुँचे।

अनुच्छेद लेखन *(Paragraph Writing)*

एक ही विचार पर केंद्रित, बिना शीर्षकों के लिखा गया छोटा गद्यांश — निबंध का लघु और कसा हुआ रूप।

आधार   आरंभिक अवधारणा · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

किसी एक ही विचार पर केंद्रित, संक्षिप्त और सुसंबद्ध गद्य रचना को अनुच्छेद कहते हैं।

अनुच्छेद निबंध का छोटा रूप नहीं है — वह एक **अलग अनुशासन** है। निबंध में विषय के अनेक पक्ष आते हैं; अनुच्छेद में केवल **एक विचार** आता है और वही पूरा खुलता है।

सामान्यतः इसका विस्तार **अस्सी से एक सौ बीस शब्द** रहता है, और यह **एक ही खंड** में लिखा जाता है — न उपशीर्षक, न बिंदु-सूची।

अनुच्छेद के तीन भाग

भाग	काम
विषय वाक्य	पहला वाक्य, जो मुख्य विचार बता दे
विस्तार	तर्क, उदाहरण या कारण से उसी विचार की पुष्टि
समापन वाक्य	विचार को समेटता अंतिम वाक्य

ध्यान दें

विषय वाक्य पहले ही वाक्य में आना चाहिए। अनुच्छेद में भूमिका बाँधने का स्थान नहीं होता — जो कहना है, पहली पंक्ति में कहिए और शेष अनुच्छेद उसे सिद्ध करे।

अनुच्छेद और निबंध में अंतर

आधार	अनुच्छेद	निबंध
विस्तार	80–120 शब्द	कई पृष्ठ
विचार	एक ही	अनेक पक्ष
खंड	एक	अनेक अनुच्छेद
शीर्षक-उपशीर्षक	नहीं	संभव
उपसंहार	एक वाक्य	पूरा अनुच्छेद

लिखने की विधि

1. विषय को **एक वाक्य** में सीमित कीजिए — यही विषय वाक्य बनेगा।
2. उस वाक्य के समर्थन में तीन या चार बिंदु मन में तय कर लीजिए।
3. बिंदुओं को तर्क के क्रम में जोड़िए, अलग-अलग न रखिए।
4. अंतिम वाक्य में विचार को समेट दीजिए, नया प्रश्न न खोलिए।

नमूना अनुच्छेद

नमूना — समय का सदुपयोग

> समय संसार की एकमात्र ऐसी संपत्ति है जिसे न संचित किया जा सकता है, न लौटाया जा सकता है। धन खोकर पुनः कमाया जा सकता है, स्वास्थ्य बिगड़कर फिर सुधारा जा सकता है, किंतु बीता हुआ क्षण किसी भी मूल्य पर वापस नहीं आता। जिन लोगों ने जीवन में कुछ उल्लेखनीय किया है, उनकी सफलता का रहस्य असाधारण प्रतिभा से कहीं अधिक समय के नियोजित उपयोग में रहा है। प्रतिदिन का एक निश्चित क्रम, कार्यों की प्राथमिकता और आलस्य से दूरी — यही तीन बातें साधारण व्यक्ति को भी असाधारण परिणाम तक पहुँचा देती हैं। इसलिए समय का सदुपयोग कोई उपदेश नहीं, सफल जीवन की पहली शर्त है।

देखिए कि पहला वाक्य ही पूरा विचार रख देता है, बीच के वाक्य उसे सिद्ध करते हैं, और अंतिम वाक्य उसे समेटता है — कोई नया विषय नहीं खुलता।

एक और नमूना

> **नमूना — पुस्तकालय का महत्त्व**
>
> पुस्तकालय वह स्थान है जहाँ एक साधारण पाठक भी सैकड़ों विद्वानों से एक साथ मिल सकता है। हर पुस्तक किसी न किसी व्यक्ति के वर्षों के अनुभव का निचोड़ होती है, और पुस्तकालय ऐसे अनुभवों का संग्रह है। जिस विद्यार्थी के पास अपनी पुस्तकें खरीदने के साधन नहीं होते, उसके लिए यह ज्ञान का एकमात्र द्वार बन जाता है। यहाँ मिलने वाला मौन भी उतना ही मूल्यवान है, क्योंकि एकाग्रता के बिना पढ़ा हुआ टिकता नहीं। इसीलिए किसी नगर की सच्ची समृद्धि उसके बाज़ारों से नहीं, उसके पुस्तकालयों से आँकी जानी चाहिए।

बचने योग्य दोष

दोष	कारण
एक से अधिक विचार	अनुच्छेद बिखर जाता है
भूमिका बाँधना	सीमित शब्दों में स्थान नहीं बचता
बिंदु-सूची बनाना	अनुच्छेद प्रवाहमान गद्य होता है

दोष	कारण
अंत में नया प्रश्न	विचार अधूरा लगने लगता है
शब्द-सीमा से बहुत अधिक	अनुच्छेद निबंध बन जाता है

ध्यान दें

शब्द-सीमा को बंधन मत मानिए — वह **अभ्यास का उपकरण** है। एक विचार को सौ शब्दों में कह पाना उसे हज़ार शब्दों में फैला देने से कठिन है, और यही कठिनाई लिखना सिखाती है।

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

अनुच्छेद और निबंध में मुख्य अंतर क्या है?

उत्तर अनुच्छेद एक ही विचार पर केंद्रित होता है, एक ही खंड में लिखा जाता है और प्रायः 80 से 120 शब्दों का होता है। निबंध में विषय के अनेक पक्ष आते हैं और वह कई अनुच्छेदों में फैला होता है।

विषय वाक्य किसे कहते हैं और वह कहाँ आना चाहिए?

उत्तर वह वाक्य जो अनुच्छेद का मुख्य विचार बता देता है। यह पहले ही वाक्य में आना चाहिए, क्योंकि अनुच्छेद में भूमिका बाँधने का स्थान नहीं होता।

अनुच्छेद में बिंदु-सूची या उपशीर्षक क्यों नहीं लिखे जाते?

उत्तर क्योंकि अनुच्छेद प्रवाहमान गद्य की एक इकाई है। सूची और उपशीर्षक उसे तोड़ देते हैं, जिससे वह अनुच्छेद न रहकर टिप्पणी बन जाता है।

अनुच्छेद के अंत में नया प्रश्न उठाना क्यों दोष है?

उत्तर क्योंकि समापन वाक्य का काम विचार को समेटना है। नया प्रश्न उठने पर अनुच्छेद पूर्ण होने के बजाय अधूरा लगने लगता है।

शब्द-सीमा को बंधन क्यों नहीं मानना चाहिए?

उत्तर क्योंकि वह अभ्यास का उपकरण है। एक विचार को सौ शब्दों में कह पाना उसे हज़ार शब्दों में फैलाने से कठिन है, और यही कठिनाई कसा हुआ लिखना सिखाती है।

संक्षेपण *(Precis Writing)*

मूल अनुच्छेद को उसके एक-तिहाई में, भाव सुरक्षित रखते हुए अपनी भाषा में समेटने की कला।

मध्यम विस्तृत विवेचन · अंतिम बदलाव 15 सितंबर 2026

परिभाषा

किसी गद्यांश के मूल भाव को सुरक्षित रखते हुए उसे लगभग एक-तिहाई में अपने शब्दों में लिखना संक्षेपण कहलाता है।

संक्षेपण काटने की क्रिया नहीं, **छाँटने की** क्रिया है। लंबे गद्यांश में से जो आवश्यक है वह बचे और जो विस्तार है वह हटे — पर पढ़ने वाले तक मूल बात उतनी ही पूरी पहुँचे।

इसे **सार लेखन** भी कहा जाता है।

संक्षेपण के नियम

नियम	स्पष्टीकरण
विस्तार	मूल का लगभग **एक-तिहाई**
भाषा	अपनी, मूल की पंक्तियाँ ज्यों की त्यों नहीं
पुरुष	सदा **अन्य पुरुष** में
काल	प्रायः भूतकाल में
रूप	**एक ही अनुच्छेद**, बिना शीर्षक-उपशीर्षक
शीर्षक	अंत में एक उपयुक्त शीर्षक अवश्य

नियम	स्पष्टीकरण
क्रम	मूल गद्यांश का विचार-क्रम वही रहे

ध्यान दें

अन्य पुरुष का नियम सबसे अधिक टूटता है। यदि मूल गद्यांश में *मैं मानता हूँ कि* लिखा है, तो संक्षेप में वह *लेखक का मत है कि* बनेगा — *मैं* नहीं रहेगा। संक्षेपण लेखक की बात **रिपोर्ट** करता है, उसे दोहराता नहीं।

क्या हटेगा, क्या रहेगा

हटाइए	रखिए
उदाहरण और दृष्टांत	मूल विचार
दोहराव और पुनरुक्ति	कारण और निष्कर्ष
अलंकारिक भाषा, उपमाएँ	तथ्य और आँकड़े
उद्धरण और सूक्तियाँ	तर्क का क्रम
संबोधन और विस्मयादिबोधक	विषय का निर्णायक भाग

विधि

1. गद्यांश को **दो बार** पढ़िए — पहली बार भाव के लिए, दूसरी बार बिंदुओं के लिए।
2. मूल शब्द-संख्या गिनिए और एक-तिहाई का लक्ष्य तय कर लीजिए।
3. मुख्य बिंदु अलग लिख लीजिए, गौण विवरण छोड़ दीजिए।
4. बिंदुओं को अपनी भाषा में जोड़कर **एक अनुच्छेद** बनाइए।
5. लंबे वाक्यांशों के स्थान पर **एक शब्द** रखिए — यहीं वाक्यांश के लिए एक शब्द काम आता है।

6. अंत में शीर्षक दीजिए और शब्द-संख्या लिख दीजिए।

उदाहरण

मूल गद्यांश (लगभग 105 शब्द)

परिश्रम मनुष्य के जीवन की सबसे बड़ी पूँजी है। संसार में जितने भी महान व्यक्ति हुए हैं, उनमें से अधिकांश असाधारण प्रतिभा लेकर नहीं जन्मे थे। वे साधारण लोग थे, किंतु उन्होंने अपने लक्ष्य के लिए निरंतर परिश्रम किया। एडिसन ने हज़ार बार असफल होने पर भी प्रयोग नहीं छोड़े। कबीर, जिन्हें औपचारिक शिक्षा नहीं मिली थी, अपने अनुभव और साधना के बल पर अमर हो गए। इसके विपरीत अनेक प्रतिभाशाली लोग केवल आलस्य के कारण कुछ नहीं कर पाते। भाग्य भी उसी का साथ देता है जो प्रयत्न करता है। इसलिए कहा गया है कि परिश्रम ही सफलता की एकमात्र कुंजी है।

संक्षेप (लगभग 35 शब्द)

लेखक के अनुसार सफलता का आधार जन्मजात प्रतिभा नहीं, निरंतर परिश्रम है। अधिकांश महान व्यक्ति साधारण थे और परिश्रम से ही ऊँचे उठे, जबकि प्रतिभाशाली लोग भी आलस्य के कारण असफल रह जाते हैं।

शीर्षक — परिश्रम ही सफलता की कुंजी

ध्यान दीजिए कि संक्षेप में एडिसन और कबीर के **उदाहरण हट गए**, पर जिस विचार को वे सिद्ध कर रहे थे वह ज्यों का त्यों बचा रहा। यही संक्षेपण की कसौटी है।

शीर्षक कैसा हो

गुण	उदाहरण
संक्षिप्त — दो से पाँच शब्द	*परिश्रम ही सफलता की कुंजी*
मूल भाव का सूचक	विषय का केंद्र पकड़े

गुण	उदाहरण
वाक्य नहीं, पदबंध	*परिश्रम करना चाहिए* उपयुक्त नहीं

संक्षेपण और सारांश में अंतर

आधार	संक्षेपण	सारांश
सामग्री	गद्यांश या अनुच्छेद	पूरी रचना, पुस्तक या कथा
विस्तार	निश्चित — एक-तिहाई	कोई निश्चित अनुपात नहीं
क्रम	मूल का क्रम अनिवार्य	क्रम बदला जा सकता है
शीर्षक	अनिवार्य	आवश्यक नहीं

ध्यान दें

संक्षेपण में **अपनी राय नहीं जोड़ी जाती**। यदि आप मूल लेखक से असहमत हैं, तब भी संक्षेप उसी का मत प्रस्तुत करेगा। टिप्पणी और संक्षेपण दो अलग रचनाएँ हैं।

अभ्यास

उत्तर देखने से पहले स्वयं सोचें।

संक्षेपण का विस्तार कितना होना चाहिए?

उत्तर मूल गद्यांश का लगभग एक-तिहाई।

संक्षेपण सदा अन्य पुरुष में क्यों लिखा जाता है?

उत्तर क्योंकि संक्षेपण लेखक की बात को दोहराता नहीं, उसे रिपोर्ट करता है। इसीलिए “मैं मानता हूँ कि” संक्षेप में “लेखक का मत है कि” बन जाता है।

संक्षेपण करते समय गद्यांश में से क्या-क्या हटाया जाता है?

उत्तर उदाहरण और दृष्टांत, दोहराव, अलंकारिक भाषा और उपमाएँ, उद्धरण तथा संबोधन। मूल विचार, कारण, निष्कर्ष और तथ्य बने रहते हैं।

संक्षेपण और सारांश में क्या अंतर है?

उत्तर संक्षेपण किसी गद्यांश का होता है, उसका अनुपात निश्चित (एक-तिहाई) होता है, मूल क्रम अनिवार्य है और शीर्षक देना पड़ता है। सारांश पूरी रचना या पुस्तक का होता है, उसका कोई निश्चित अनुपात नहीं होता और क्रम बदला जा सकता है।

क्या संक्षेपण में अपनी राय जोड़ी जा सकती है?

उत्तर नहीं। मूल लेखक से असहमति होने पर भी संक्षेप उसी का मत प्रस्तुत करेगा। टिप्पणी और संक्षेपण दो अलग रचनाएँ हैं।